CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवभारती

891.43
स न
भाग-2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

[राजकीय प्रकाशन, शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश]

नव भारती

भाग २

(कक्षा ७ के लिए)

सम्पादक

बलवन्त सिंह स्याल

शिक्षा-निदेशक, उत्तर प्रदेश

राजनियुक्त प्रकाशक

बाल प्रकाशन गृह

लखनऊ

Universal Book Depot
Lucknow.
Aminabad.

१८८९ शक
१९६७ ई०

प्रथम संस्करण

मूल्य
१·०१ पैसा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3795.

शिक्षा विभाग • उत्तर प्रदेश •

891.43
ल ग
2

मुद्रक—सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संग्रहालय ... प्राप्ति संख्या 1795
प्राप्ति तिथि 21.5.65
State Museum, Library,

प्राक्कथन

देश के भावी नागरिकों की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का विशेष स्थान है और इसलिए उनकी रचना राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। छोटे बच्चों की पुस्तकों के सम्बन्ध में यह बात और अधिक सत्य है। इसी विचार से कक्षा १ से ५ तक की हिन्दी तथा गणित की पुस्तकों का प्रणयन तथा प्रकाशन गत कई वर्षों से शिक्षा विभाग ने अपने हाथ में ले रखा है। इस कार्य में यह प्रयास रहा है कि अच्छी से अच्छी पुस्तकें कम से कम मूल्य पर सुलभ हो सकें।

अब यह निश्चय किया गया है कि इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाय और कक्षा ६, ७ और ८ की हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। अतः इस वर्ष कक्षा ७ के लिए हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

ये पुस्तकें एक ओर कक्षा ५ की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों के क्रम में हैं और दूसरी ओर उनका मेल हाई स्कूल कक्षाओं की पुस्तकों के साथ रहेगा। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह प्रयत्न किया गया है कि जूनियर हाई स्कूल की कक्षाओं का स्तर कुछ अधिक हो, जिससे आगामी कक्षाओं का पठन-कार्य सुविधापूर्वक चल सके। योजना यह है कि जो बालक कक्षा ८ के आगे न पढ़ सकें, उनकी शिक्षा भी इन पुस्तकों के द्वारा एक प्रकार से पूरी हो जाय। इसीलिए मान्य लेखकों की रचनाएं तथा सूर, तुलसी, रहीम, मैथिलीशरण गुप्त, पन्त, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि कवियों की उपयुक्त कविताएं संकलित की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3795.

शिक्षा विभाग · उत्तर प्रदेश ·

891.43
G ग
2,

मुद्रक—सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
क्रम संख्या 3795
प्राप्ति तिथि 21.5.65
State Museum, Library

प्राक्कथन

देश के भावी नागरिकों की शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का विशेष स्थान है और इसलिए उनकी रचना राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। छोटे बच्चों की पुस्तकों के सम्बन्ध में यह बात और अधिक सत्य है। इसी विचार से कक्षा १ से ५ तक की हिन्दी तथा गणित की पुस्तकों का प्रणयन तथा प्रकाशन गत कई वर्षों से शिक्षा विभाग ने अपने हाथ में ले रखा है। इस कार्य में यह प्रयास रहा है कि अच्छी से अच्छी पुस्तकें कम से कम मूल्य पर सुलभ हो सकें।

अब यह निश्चय किया गया है कि इसी क्रम को आगे बढ़ाया जाय और कक्षा ६, ७ और ८ की हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाय। अतः इस वर्ष कक्षा ७ के लिए हिन्दी तथा गणित की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं।

ये पुस्तकें एक ओर कक्षा ५ की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तकों के क्रम में हैं और दूसरी ओर उनका मेल हाई स्कूल कक्षाओं की पुस्तकों के साथ रहेगा। विषय-वस्तु की दृष्टि से यह प्रयत्न किया गया है कि जूनियर हाई स्कूल की कक्षाओं का स्तर कुछ अधिक हो, जिससे आगामी कक्षाओं का पठन-कार्य सुविधापूर्वक चल सके। योजना यह है कि जो बालक कक्षा ८ के आगे न पढ़ सकें, उनकी शिक्षा भी इन पुस्तकों के द्वारा एक प्रकार से पूरी हो जाय। इसीलिए मान्य लेखकों की रचनाएं तथा सूर, तुलसी, रहीम, मैथिलीशरण गुप्त, पन्त, सोहनलाल द्विवेदी, सुभद्राकुमारी चौहान आदि कवियों की उपयुक्त कविताएं संकलित की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी हैं तथा की जायँगी। पठन-कौशल को व्यापक बनाने के उद्देश्य से इतिहास, भूगोल, विज्ञान, सामाजिक-आर्थिक जीवन, जीव-जगत, नीति आदि विषयों से सम्बन्धित पाठ रखे गये हैं। विषय-वस्तु की विविधता होने पर भी लक्ष्य में एकसूत्रता है और पाठों की एक ही दिशा है। उनके द्वारा भाषा की उत्तरोत्तर योग्यता बढ़ाने, ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करने, भारतीय मान्यताओं में आस्था उत्पन्न करने, स्वस्थ नैतिक विचारों के प्रति निष्ठा जागरित करने तथा स्वस्थ दिशा में राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया है।

आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक अपने उद्देश्य में सफल होगी और विषय-वस्तु के समुचित शिक्षण में सहायक होते हुए बालक-बालिकाओं के नैतिक विकास तथा देश की भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनायेगी और उनमें उच्चतम आदर्शों की प्रतिष्ठा करेगी।

यह पुस्तक विभागीय अधिकारियों तथा अन्य अनेक विद्वानों के अनुभव एवं चिन्तन का फल है। छात्रोपयोगी बनाने के लिए कहीं-कहीं मूल पाठ को सम्पादित कर दिया गया है। विद्वान लेखकों तथा कवियों ने अपनी कृतियों के संकलित करने की स्वीकृति देने की कृपा की है। शिक्षा-विभाग इन सबका आभारी है।

बलवन्त सिंह स्याल
शिक्षा-निदेशक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षकों से

पाठ्यपुस्तक मुख्यतः पढ़ना सिखाने और सामान्य रूप से भाषा सिखाने का साधन है। प्रारम्भिक स्तर का अधिकांश समय भाषा पढ़ने, लिखने और बोलने के प्रारम्भिक कौशल सीखने में लग जाता है। उच्च स्तर पर साहित्य की शिक्षा प्रमुख हो जाती है अतः भाषार्जन का मुख्य कार्य माध्यमिक स्तर पर ही होना चाहिए। यह स्तर भाषा सीखने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण सोपान है। जो बालक इस समय पिछड़ जाते हैं और जिनकी रुचि इस स्तर पर पढ़ने में नहीं हो पाती, उनमें से बहुत कम आगे चलकर अच्छी भाषा सीख पाते हैं।

पठन-सम्बन्धी निम्नलिखित कौशल माध्यमिक स्तर पर प्राप्त करने का लक्ष्य होना चाहिए :—

(१) पठन-रुचि की उत्पत्ति, विस्तार और परिष्कार।
(२) प्रत्यक्ष और प्रच्छन्न अर्थ का बोध।
(३) पठन-सामग्री का सविवेक ग्रहण तथा सुबोध प्रकाशन।
(४) पठन-गति की वृद्धि।
(५) शब्द भांडार की वृद्धि।
(६) शब्दों के अर्थ खंड करके समझ लेना, कोश से शब्द ढूंढ़ लेना तथा कुछ शब्दों का बिना अर्थ जाने आशय समझ लेना।
(७) विषय-सूची, अनुक्रमणिका आदि का उपयोग।
(८) पुस्तकालय का उपयोग।

पाठ्यपुस्तक के सहारे धीरे-धीरे निश्चित योजना के अनुसार उपर्युक्त कौशल सिखाने चाहिए। इनमें से पठन की रुचि और उसका विस्तार करना सर्व प्रमुख और सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। इसके लिए अधिकाधिक पढ़ने की आवश्यकता होती है। पाठ्यपुस्तक पढ़ाते समय प्रसंगवश सरल और रोचक सामग्री बालकों को पढ़ने के लिए देनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चाहिए। पुस्तकें दिखाकर तथा उनकी विषय-वस्तु के बारे में चर्चा करके बालकों को प्रोत्साहन दिया जा सकता है। यदि पढ़ने में बालक की एक बार रुचि हो गयी तो ऊपर बताये गये अन्य कौशल अपने आप बालक सीखता चलेगा। शब्द-भांडार की वृद्धि भी स्वयं ही होगी। विविध प्रसंगों में ही शब्दों की जानकारी अच्छी होती है। समानार्थी या विलोम शब्द और सन्धि विच्छेद, समास-विग्रह आदि के अभ्यासों द्वारा भी शब्द-भांडार बढ़ाया जा सकता है। कोश भी शब्द-भांडार बढ़ाने में बहुत सहायक होता है। इसके प्रयोग का अभ्यास डालने की चेष्टा करनी चाहिए।

भाषार्जन में विद्यार्थियों के निजी प्रयासों का बड़ा महत्त्व है। अतः अर्थ समझने में और शब्दों के अर्थ निकालने में उन्हें प्रयत्न का अवसर अवश्य देना चाहिए। यदि उनके प्रयत्न किये बिना उन्हें अर्थ समझा दिया जायगा तो प्रस्तुत पाठ तो उनकी समझ में आ जायगा, परन्तु पठन-शक्ति वे प्राप्त न कर सकेंगे। अतः मौन-पाठ तथा बोध-परीक्षण आदि के बाद ही व्याख्या होनी चाहिए। वास्तविक पढ़ना अथवा लिखी हुई बात समझ लेना मुख्यतः मौन रूप से पढ़ने में ही होता है। अतः मौन-पठन सीखना इस स्तर का मुख्य काम है।

इन उद्देश्यों के उपलब्ध कराने में सहायता देने के लिए पाठों के अन्त में प्रश्न, अभ्यास आदि दिये हुए हैं। इनका उपयोग शिक्षक अवश्य करें। परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। वैसे ही अन्य प्रश्न बनाने की आवश्यकता होगी। पुस्तक के आधार पर मौलिक तथा लिखित रचना के अभ्यास भी इस दिशा में बड़े सहायक होंगे।

—सम्पादक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

			पृष्ठ
१. प्रार्थना	(पद्य)	मैथिली शरण गुप्त	११
२. शरीर श्रम		महात्मा गाँधी	१३
३. रानी दुर्गावती		महावीर प्रसाद द्विवेदी	१८
४. न्याय		वंशीधर श्रीवास्तव	२४
५. कर्मवीर	(पद्य)	हरिऔध	२६
६. कर्तव्य परायणता		कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	३२
७. चन्द्र शेखर आजाद		बनारसी दास चतुर्वेदी	३७
८. सहकारी खेती	(वार्तालाप)	राधेश्याम त्रिपाठी	४८
९. बीज	(पद्य)	सुमित्रानन्दन पन्त	५४
१०. ईदगाह		प्रेमचन्द	५७
११. मैं और हाकी का खेल		दिग्विजय सिंह बाबू	६६
१२. कबीर के दोहे	(पद्य)	कबीर	७४
१३. ईसा मसीह		सद्‌गुरु शरण अवस्थी	७८
१४. रोमांचकारी कुश्ती		श्रीराम शर्मा	८६
१५. इतने ऊँचे उठो	(पद्य)	द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	९३
१६. रेडक्रास		बेंकटेश चन्द्र पाण्डेय	९६
१७. पांडव वनवास		करुणापति त्रिपाठी	१०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८. घट	(पद्य)	सियाराम शरण गुप्त	११८
१६. तमिलनाड		अयोध्या नाथ शर्मा	१२१
२०. सिनेमा		ब्रज भूषण शर्मा	१२६
२१. कृष्ण सुदामा	(पद्य)	नरोत्तम दास	१३८
२२. सच्चा तीर्थ यात्री		भृगुराम मिश्र (टालस्टाय से अनूदित)	१४२
२३. गुरु गोविन्दसिंह		बलवन्त सिंह स्याल	१५१
२४. बसन्त	(पद्य)	डा० देवेन्द्र दत्त तिवारी	१६५
२५. वीर बालक	(नाटक)	डा० रामकुमार वर्मा	१६८
२६. इंजन		नरेश चन्द्र शर्मा	१८६
२७. सूर के पद	(पद्य)	सूर	१६३
२८. वन		डा० रघुराजशरण शर्मा	१६७
२६. सेतुबन्ध	(पद्य)	तुलसीदास	२०५
३०. अनन्त आकाश		डा० कैलासनाथ उपाध्याय	२०६
३१. हिमालय		डा० संकटा प्रसाद उपाध्याय	२१६
३२. किसको नमन करूँ मैं	(पद्य)	दिनकर	२२४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनिवार्य संस्कृत

विषय सूची

		पृष्ठ
	वन्दना	२२९
प्रथमः पाठ।	विद्यालयः	२३०
द्वितीयः पाठः	दीपकोत्सवः	२३२
तृतीयः पाठः	सदाचारः	२३४
चतुर्थः पाठः	धेनुः	२३६
पंचमः पाठः	मेलापकः	२३८
षष्ठः पाठः	नीलवर्णः शृगालः	२४०
सप्तमः पाठ।	वसन्तः	२४२
अष्टमः पाठः	वचनामृतम्	२४५
नवमः पाठः	हिमालयः	२४७
दशमः पाठः	लाल बहादुर शास्त्री	२४९
एकादशः पाठः	पुस्तकालयः	२५२
द्वादशः पाठः	प्रत्युत्पन्नमतिः वानरः	२५४
त्रयोदशः पाठ।	ग्राम पञ्चायतम्	२५६
चतुर्दशः पाठः	सुभाषितानि	२५८
परिशिष्ट		२५९
मुख्य शब्दों की सूची		२६८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१

प्रार्थना

[यह कविता राष्ट्र-कवि स्वर्गीय मैथिलीशरण गुप्त की रचना 'जयद्रथ-वध' से ली गयी है।]

हे सच्चिदानन्द प्रभो, तुम नित्य सर्व सशक्त हो,
अनुपम, अगोचर, शुभ, परात्पर, ईश-वर, अव्यक्त हो।
तुम एक होकर भी अहो! रखते अनेकों वेश हो,
आद्यन्त-हीन, अचिन्त्य, अद्‌भुत, आत्म-भू, अखिलेश हो ॥१॥
कर्त्ता तुम्हीं, भर्त्ता तुम्हीं, हर्त्ता तुम्हीं हो सृष्टि के,
चारों पदार्थं दयानिधे! फल हैं तुम्हारी दृष्टि के।
जय दीनबन्धो, सौख्य-सिन्धो, देव, देव, दयानिधे,
जय जन्म-मृत्यु-विहीन, शाश्वत, विश्व-वन्द्य, महाविधे ॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. इस प्रार्थना में ईश्वर की क्या-क्या विशेषताएं बतायी गयी हैं ?
२. भगवान एक होकर भी अनेक किस प्रकार हैं ?
३. कवि ने ईश्वर को कर्त्ता, भर्त्ता और हर्त्ता क्यों कहा है ?

अभ्यास

१. 'दीनबन्धो' और 'सौख्य-सिन्धो' तुकान्त शब्द हैं। इस कविता में से ऐसे ही अन्य तुकान्त शब्द छाँटो, जो पंक्तियों के अन्त में न आकर बीच में आये हैं। इनसे कविता में क्या विशेषता आ जाती है ?
२. 'प्रभो' सम्बोधन कारक में है। कर्त्ताकारक में इसका रूप 'प्रभु' रहता है। नीचे लिखे शब्द भी सम्बोधन कारक में हैं। इनके कर्त्ता कारक के रूप बताओ—
दयानिध, दीनबन्धो, महाविधे, सौख्य-सिन्धो।

आदेश—अपने पुस्तकालय से 'जयद्रथ-वध' पुस्तक लेकर पढ़ो।

टिप्पणी

सच्चिदानन्द=(सत्+चित्+आनन्द) जो सत्य, चेतन और आनन्दमय है। यह विशेषण ईश्वर के लिए ही आता है। नित्य=सदा रहने वाला। सशक्त=शक्तिमान। अगोचर=जो इन्द्रियों का विषय न हो, इन्द्रियों से परे। परात्पर=दूर से भी दूर, सबसे परे। अचिन्त्य= जिसका चिन्तन न हो सके। अखिलेश=(अखिल+ईश) सम्पूर्ण संसार के स्वामी। भर्त्ता=भरण-पोषण करने वाला। चारों पदार्थ=धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पदार्थ। सौख्य-सिन्धो=सुख का सागर। विहीन=रहित। वन्द्य=वन्दनीय। महाविधे=उत्तम विधानों वाले, जिसके नियम श्रेष्ठ हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२

शरीर-श्रम

[यह पाठ महात्मा गाँधी के प्रवचन से सम्पादित किया गया है। इसमें उन्होंने इस बात पर बल दिया है कि अपने जीविकोपार्जन के लिए प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना चाहिए, चाहे वह व्यक्ति धनी हो या निर्धन। उनका मत है कि बिना श्रम के रोटी खाना पाप है।]

सब मनुष्यों के लिए शरीर-श्रम अनिवार्य है। यह बात पहले-पहल टालस्टाय के एक निबन्ध से मेरे गले उतरी। शरीर श्रम से मेरा अभिप्राय है 'रोटी के लिए श्रम'। रोटी के लिए हर आदमी को मजदूरी करना, हाथ-पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है, इसकी झलक मेरी आँखें भगवद्गीता के तीसरे अध्याय में पा रही हैं। 'यज्ञ' किये बिना खाने वाला चोरी का अन्न खाता है। यह शाप यज्ञ न करने वाले के लिए है। यहाँ 'यज्ञ' का अर्थ शरीर-श्रम या रोटी-श्रम ही है और मेरे मतानुसार भी यही अर्थ निकलता है। हमारे इस व्रत की यही उत्पत्ति है। बुद्धि भी इस वस्तु की ओर हमें ले जाती है।

मजदूरी न करने वाले को खाने का क्या अधिकार हो सकता है? बाइबिल कहती है, 'अपनी रोटी तू अपना पसीना बहाकर कमाना और खाना।' करोड़पति भी यदि अपने पलंग पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

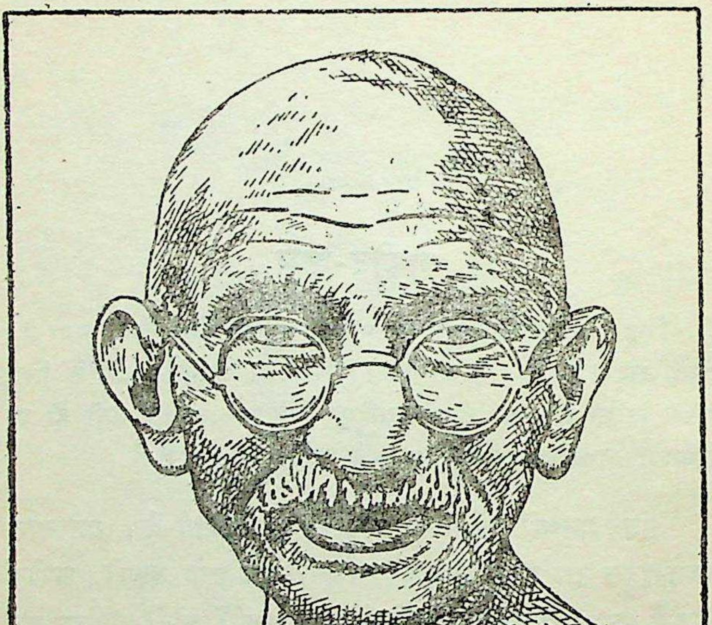

महात्मा गांधी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़ा रहे और मुंह में किसी के खाना डाल देने पर खाये तो बहुत दिनों तक न खा सकेगा। खाने में उसके लिए आनन्द भी न रह जायगा। इसलिए वह व्यायामादि करके भूख उत्पन्न करता ह और खाता ह तो अपने ही हाथ-मुंह से। यदि इस तरह किसी न किसी रूप में राजा-रंक सभी को अंग-संचालन करना ही पड़ता है तो, रोटी पदा करने की ही कसरत सब लोग क्यों न करें? किसान से हवा खाने या कसरत करने को कोई नहीं कहता और संसार के नब्बे प्रतिशत से भी अधिक मनुष्यों का निर्वाह खेती से होता है। शेष दस प्रतिशत मनुष्य इनका अनुकरण करें तो संसार में कितना सुख, कितनी शान्ति और कितना आरोग्य फैले।

इसके सिवा, यदि शरीर-श्रम के इस निरपवाद नियम को सभी मानने लगें, तो ऊँच-नीच का भेद दूर हो जाय। इस समय तो जहाँ उच्चता की गन्ध न थी वहाँ भी, अर्थात वर्ण-व्यवस्था में भी, वह घुस गयी है। मालिक-मजदूर का भेद सर्व-व्यापक हो गया है और अमीर से गरीब ईर्ष्या करने लगा ह। यदि सब अपनी रोटी के लिए खुद मेहनत करें तो ऊँच नीच का भेद दूर हो जाय और धनी वर्ग अपने को मालिक न मानकर उस धन का केवल रक्षक मानेगा और उसका उपयोग मुख्यतः केवल लोक-सेवा के लिए करेगा।

जिसे अहिंसा का पालन करना है, सत्य की आराधना करनी है, उसके लिए तो शरीर-श्रम रामबाण हो जाता है। यह श्रम वास्तव में देखा जाय तो खेती ही है। पर आज की जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थिति है उसमें सब उसे नहीं कर सकते, इसलिए खेती का आदर्श ध्यान में रखकर, आदमी दूसरा श्रम जैसे कताई, बुनाई, बढ़ई-गीरी, लुहारी इत्यादि कर सकता है।

अध्ययन

प्रश्न

१. शरीर-श्रम की महत्ता गाँधीजी की समझ में सर्व प्रथम किस प्रकार आयी ?

२. शरीर-श्रम की महत्ता गीता में किस प्रकार बतायी गयी है ?

३. किसान से हवा खाने या व्यायाम करने की बात क्यों नहीं कही जाती ?

४. शरीर-श्रम का नियम मान लेने पर ऊँच-नीच का भेद कैसे मिट जायगा ?

५. सत्य और अहिंसा के आराधक के लिए शरीर-श्रम का क्या महत्त्व है ?

६. महात्मा गाँधी ने शरीर-श्रम की सार्थकता प्रमुख रूप से किस अर्थ में स्वीकार की है ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित मुहावरों के भाव स्पष्ट करो—
गले उतरना, गन्ध भी न मिलना, हाथ पैर हिलाना, रामबाण होना।

२. 'प्रसिद्धि' भाव वाचक संज्ञा है और 'प्रसिद्ध' विशेषण। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के विशेषण रूप बताओ—
स्थिति, श्रुति, प्रतीति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. ईश्वर शब्द में 'ईय' लगाकर 'ईश्वरीय' शब्द बना है। इसी प्रकार निम्नलिखित में 'ईय' लगाकर अन्य शब्द बनाओ। देखो उनके अर्थ में क्या अन्तर हो जाता है?

भारत, स्वर्ग, जाति, नरक।

४. निम्न शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो—

मतानुसार, व्यायामादि, निरपवाद

आदेश—श्रम के महत्त्व पर एक लेख लिखो।

टिप्पणी

टालस्टाय=रूस के एक प्रसिद्ध लेखक और विचारक। अमल= अभ्यास। भगवद्गीता=महाभारत का एक अंश जिसमें कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिये गये उपदेश हैं। ये उपदेश पुस्तक रूप में भी संगृहीत हैं। बाइबिल=ईसाइयों की प्रसिद्ध धार्मिक पुस्तक। कसरत=व्यायाम, परिश्रम। निरपवाद=(निः+अपवाद) जिसका अपवाद न हो, जो सर्वत्र लागू होता है। सर्वव्यापक जो सर्वत्र हो। रामबाण=अचूक (रामचन्द्रजी के बाण के विषय में प्रसिद्ध है कि वह कभी व्यर्थ नहीं जाता था।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३

रानी दुर्गावती

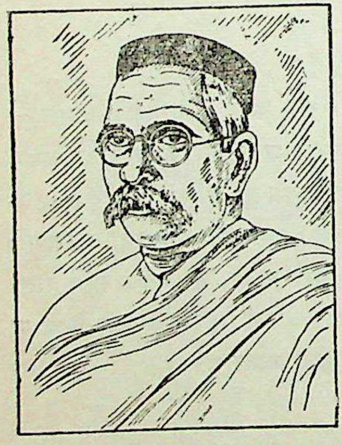

[गढ़मंडल का युद्ध सम्राट अकबर के शासन काल की एक प्रसिद्ध घटना है। इस युद्ध में रानी दुर्गावती ने अपूर्व साहस, पराक्रम तथा कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया था। इस पाठ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसी घटना का सजीव वर्णन किया है। द्विवेदीजी का हिन्दी गद्य साहित्य के निर्माताओं में प्रमुख स्थान है।]

जिस समय अकबर की यश-पताका हिमालय से बंगाल की खाड़ी तक फहरा रही थी, उस समय जबलपुर के पास एक छोटे से राज्य गढ़मंगल में एक रानी के स्वातन्त्र्य की अग्नि-शिखा भी दूर-दूर तक अपना प्रकाश फैला रही थी। बड़े-बड़े प्रतापी राजा जिस बल-विक्रम को न सह सके थे उसी बल-विक्रम की अवहेलना गढ़मंडल की यह वीर नारी निडर होकर कर रही थी। यह वीरांगना थी रानी दुर्गावती।

दुर्गावती कन्नौज के राजा चन्दनराय की कन्या थी। जब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह विवाह के योग्य हुई, तब उसके पिता ने राजपूताने के राजकुमारों में से योग्य वर की खोज का प्रयत्न किया। परन्तु दुर्गावती गढ़मंडल के स्वामी दलपति शाह की वीरता पर मुग्ध थी। पिता को यह बात अच्छी न लगी। दलपति शाह ने जब यह समाचार सुना तब उसने बाहुबल से उस कन्या को प्राप्त करना चाहा। चन्दनराय और दलपति शाह में घोर संग्राम हुआ। अन्त में विजयलक्ष्मी-स्वरूपा दुर्गावती दलपति शाह को प्राप्त हुई।

गढ़मंडल में पहुँचकर दुर्गावती और दलपति शाह का विधि-पूर्वक विवाह हुआ। कुछ काल के अनन्तर उनके वीर नारायण नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिस समय वीर नारायण केवल तीन वर्ष का था, विकराल काल ने गढ़मंडल का राज-सिंहासन सूना कर दिया। राजा दलपति शाह परलोकवासी हो गये। अब रानी दुर्गावती अपना राजकाज स्वयं देखने लगी। वह प्रजा के सुख-दुःख का ध्यान रखती। वह जानती थी कि किसी न किसी दिन मुगल सम्राट की गृध्र-दृष्टि उसके छोटे से राज्य पर अवश्य पड़ेगी। इसलिए वह अपनी सेना को भी सुसज्जित करती जाती थी।

दुर्गावती की योग्यता, उसकी तत्परता तथा प्रजावत्सलता अकबर के कानों तक जा पहुँची। उसके अधिकारियों ने उसे गढ़मंडल को अपने अधीन कर लेने की सलाह दी, किन्तु उदार हृदय अकबर ने ऐसा करना उचित न समझा। अधिकारियों के बार-बार परामर्श देने पर अकबर की भी लोभ-लिप्सा जाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

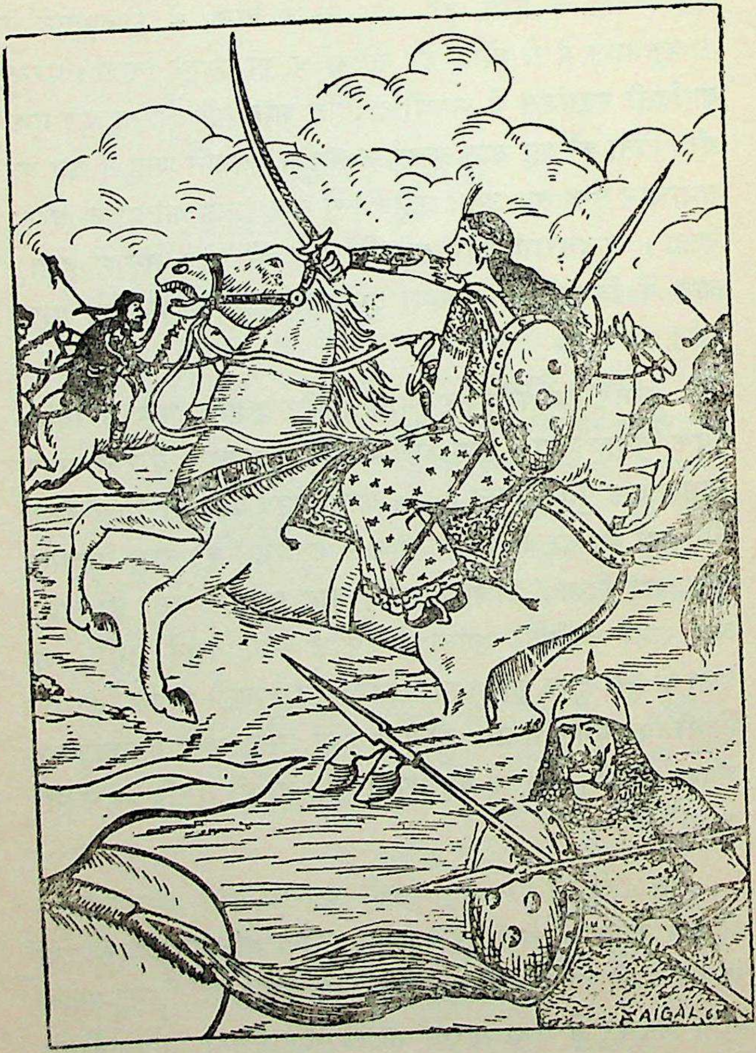

रण-क्षेत्र में रानी दुर्गावती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उठी। उसने आसफ खाँ नामक एक सरदार को गढ़मंडल पर चढ़ाई करने की आज्ञा दे दी।

रानी दुर्गावती को जब यह समाचार मिला, तब किसी अबला के समान वह भयभीत नहीं हुई। सिंहनी के समान क्षुब्ध होकर उसने अपने क्षत्रियत्व का परिचय देना चाहा। वह जानती थी कि सम्राट अकबर के सम्मुख जयलाभ नहीं कर सकेगी, तथापि आत्मसमर्पण की अपेक्षा रणक्षेत्र में प्राण देना ही उसने उचित समझा। रानी दुर्गावती के इस संकल्प को जान कर उसकी प्रजा भी अपनी स्वाधीनता के रक्षार्थ बद्धपरिकर हो गयी। देखते-देखते आठ सहस्र अश्वारोही उपस्थित हो गये और रानी दुर्गावती मुंडमालिनी चामुंडा के समान तुरगारूढ़ हो अपनी सेना सहित संग्राम-भूमि में उतर पड़ी।

3795.

उधर आसफ खाँ को यह विश्वास था कि दिल्लीश्वर के प्रचंड प्रताप की ज्वाला से भयभीत होकर दुर्गावती आत्म समर्पण कर देगी। यह समझ कर उसने केवल पाँच सहस्र अश्वारोही अपने साथ लिये। रणक्षेत्र में रानी के सैनिक उत्साहित होकर शत्रुओं को काटने लगे। विपक्षी भाग निकले और आसफ खाँ बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाने में समर्थ हुआ।

आसफ खाँ के पलायन का समाचार सुनकर अकबर बहुत लज्जित हुआ। उसने डेढ़ वर्ष के अनन्तर विपुल सैन्य के साथ आसफ खाँ को फिर गढ़मंडल पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस बार भी रानी दुर्गावती की सेना ने पूर्ववत प्रचंड बल-विक्रम का प्रदर्शन किया और उसकी क्रोधाग्नि में शत्रु-सेना पतंग के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समान दग्ध हो गयी। आसफ खाँ को इस दूसरी हार से अत्यधिक लज्जा हुई। उसने इस रूप में अकबर को मुँह दिखलाना उचित न समझा। अब उसे कूटनीति का मार्ग ही उचित जान पड़ा। उसने गढ़मंडल में विश्वासघात का बीज बोया।

रानी के सैनिकों में फूट पड़ गयी। अब उसने जान लिया कि युद्ध में विजय की कोई आशा नहीं। फिर भी वह आसफ खाँ के साथ युद्ध करने से विरत न हुई। इस बार आसफखाँ की सेना अपरिमित थी। बड़ा लोमहर्षक युद्ध हुआ। इसी समय उसने देखा कि उसका चौदह वर्षीय वीर पुत्र वीर नारायण घायल होकर घोड़े से गिर गया है। रानी विचलित न हुई। उसकी सेना के कई पुरुषों ने वीर नारायण को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाकर रानी से प्रार्थना की कि वह अपने प्रिय पुत्र का अन्तिम दर्शन कर ले। रानी ने उत्तर दिया—"यह समय पुत्र से मिलने का नहीं। मुझे हर्ष है कि मेरे पुत्र ने युद्ध में वीर गति पायी। अब मैं उससे देवलोक में ही मिलूँगी।"

अन्त में जब रानी ने देखा कि वैरियों द्वारा पकड़े जाने का भय है, तब गढ़मंडल की ओर देखकर उसने अपने ही खड्ग द्वारा अपना सिर धड़ से अलग कर दिया। रानी क मृत शरीर को उसके सैनिकों ने सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया, जहाँ अपने पुत्र के साथ ही उसकी अन्तिम क्रिया हुई। रानी ने अपने प्राणों की बलि दे दी, परन्तु स्वाभिमान और देश के सम्मान पर आँच न आने दी।

भारतीय नारियों की वीरता के कार्यों का स्मरण होते ही बड़े-बड़े वीरों को भी दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. दुर्गावती का विवाह किस प्रकार हुआ ?

२. अकबर गढ़मंडल पर आक्रमण क्यों नहीं उचित समझता था ?

३. गढ़मंडल पर आक्रमण का समाचार सुनकर रानी ने क्या किया ?

४. आसफखाँ के युद्धभूमि से भाग जाने पर अकबर क्यों लज्जित हुआ ?

५. गढ़मंडल को अपने अधीन करने के लिए आसफखाँ ने क्या किया ?

६. रानी दुर्गावती अपने पुत्र के अन्तिम दर्शन के लिए क्यों नहीं तैयार हुईं ?

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक के कई उत्तर दिये गये हैं। उनमें केवल एक उत्तर सही है। सही उत्तर पर (√) का चिह्न लगाओ—

१. दुर्गावती दलपति शाह से विवाह क्यों करना चाहती थी ?
   (क) इसलिए कि वे बड़े सुन्दर थे।
   (ख) इसलिए कि वे बड़े वीर थे।
   (ग) इसलिए कि वे बड़े देश के राजा थे।

२. युद्धभूमि में रानी ने अपना सिर धड़ से अलग क्यों कर दिया ?
   (क) क्योंकि उसकी सेना में फूट पड़ गयी थी।
   (ख) क्योंकि आसफखाँ विश्वासघाती था।
   (ग) क्योंकि वह जीते जी शत्रुओं के हाथ नहीं पड़ना चाहती थी।

३. निम्नलिखित शब्द किस प्रकार की संज्ञायें हैं—
   खाड़ी, गढ़मंडल, योग्यता, विश्वास, दुर्गावती, युद्ध।

आदेश—रानी दुर्गावती की वीरता पर एक लेख लिखो।

टिप्पणी

यश = कीर्ति। अवहेलना = उपेक्षा, अनादर। वीरांगना = वीर स्त्री। मुग्ध = मोहित। विकराल = भयंकर। लोभलिप्सा = लोभ की इच्छा। क्षुब्ध = क्षोभ-युक्त, अशान्त। बद्धपरिकर = कमर कस कर तैयार होना। अश्वारोही = घुड़सवार। चामुंडा = दुर्गा। पलायन = भागना। विपुल = बड़ा, विस्तृत। लोमहर्षक = रोमांचकारी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—४

न्याय

[प्रस्तुत पाठ विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक बंगला कविता 'सामान्य क्षति' के आधार पर लिखा गया है। इसमें बड़े मार्मिक ढंग से काशी के एक राजा की न्यायप्रियता दिखायी गयी है।]

करुणा काशिराज की महारानी थीं। राजवंश में ही उनका जन्म हुआ था और दास-दासियों से पूर्ण लक्ष्मी के निकेतन में लालन-पालन। वे सुन्दरता की मानो मूर्ति ही थीं। उनके सुख की सीमा नहीं थी। दुःख क्या है, वे जानती भी न थीं।

माघ मास में एक दिन रानी ने वरुणा में स्नान करने का निश्चय किया। राजा की आज्ञा हुई कि वरुणा की ओर जाने वाले मार्ग रोक दिये जायं और घाट खाली हो जायँ। आदेश होते ही मार्ग तथा नदी के तट-घाट निर्जन हो गये। घाट के समीप की झोपड़ियों में रहने वाले भी उन्हें छोड़कर चले गये। वहाँ सुनायी पड़ता था केवल पक्षियों का कल-कूजन। अपनी सौ सखियों के साथ रानी घाट पर पहुँचीं। उनके हास-परिहास से वरुणा के तट-घाट पुनः मुखरित हो उठे।

सूर्योदय हो रहा था। वरुणा की स्वर्णिम धारा में रानी ने अपनी सखियों के साथ स्नान किया। ठंडे जल में स्नान करने से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी ठिठुर गयीं और थर-थर काँपने लगीं। वे बोलीं—"मैं ठंड से मर रही हूँ। जल्दी आग जलाओ। तापूँ तो प्राण बचें। जाओ कहीं से जल्दी लकड़ियां लाओ।"

रानी की आज्ञा पाकर सखियां पास के जंगल से लकड़ियां लाने के लिए जाने लगीं। रानी बोलीं—"इतनी दूर कहाँ जा रही हो। देखो न, पास ही यह फूस की झोपड़ी है। इसी में आग लगा दो। किसी तरह यह ठंड तो शीघ्र दूर हो।"

एक सखी ने कहा—"ऐसा न करें महारानी! न जाने किस गरीब की झोपड़ी होगी, न जाने कौन यती-संन्यासी इसमें रहता होगा। झोपड़ी के जल जाने से वह निराश्रय हो जायगा। वह बेचारा इस ठंड में कहाँ जायगा?"

रानी क्रुद्ध हो गयीं। बोलीं—"दूर हो। एक फूस की पुरानी झोपड़ी के लिए इतनी चिन्ता और मेरी कुछ भी नहीं? मेरी आज्ञा का तुरन्त पालन होना चाहिए।"

रानी का हठ देखकर सखियों ने झोपड़ी में आग लगा दी। झोपड़ी धू-धू करके जल उठी। आग की लपटें आकाश छूने लगीं। ऐसा लगने लगा मानो ज्वाला के हजार-हजार विषधर निकल पड़े हों। नदी-तट के वृक्षों पर बैठे हुए पक्षी कोलाहल करते हुए आकाश में उड़ गये। आग की चिनगारियां एक झोपड़ी से दूसरी झोपड़ी पर गिरने लगीं, आग फैलती गयी और थोड़ी देर में घाट की सब झोपड़ियां जल कर राख हो गयीं। शीत से काँपती हुई रानी को आग की ज्वालाएं बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अच्छी लगीं। आग तापकर अपनी सखियों के साथ हास-परिहास करती हुई वे राजमहल में लौट आयीं।

दूसरे दिन काशिराज अपनी राजसभा में न्यायासन पर बैठे ही थे कि जिनकी झोपड़ियां रानी ने जला दी थीं, वे राज-दरबार में आ पहुँचे। काँपते हुए रुद्ध कंठ से उन्होंने राजा से अपने दुःख की कहानी कह सुनायी। अपनी प्रजा की बातें सुनकर राजा का सिर लज्जा से झुक गया। क्रोध से उनका चेहरा तमतमा उठा। वे सभा से उठ कर एकदम राजमहल में चले गये।

रोषपूर्ण स्वर में राजा ने कहा—"रानी, तुमने निर्दोष, दीन-दुखियों के घर जला दिये हैं? तुम्हारा यह कैसा राज-धर्म है?"

रानी रूठ कर बोलीं, "उन फूस की पुरानी टूटी-फूटी झोप-ड़ियों को आप घर कह रहे हैं? उनके न रहने से किसी की क्या हानि हो सकती ह? और होगी भी तो कितनी? अपनी रानी के एक क्षण के प्रमोद के लिए तो लोग न जाने कितना धन खर्च कर डालते हैं और आप घास-फूस की झोपड़ियों के लिए रुष्ट हो रहे हैं!"

अपने क्रोध को दबा कर राजा बोले—"जब तक तुम राज-रानी हो, दीन की झोपड़ी का मूल्य समझ नहीं सकतीं। मैं तुमको समझाऊँगा।"

राजा की आज्ञा से दासियों ने महारानी क राजसी वस्त्र तथा आभूषण उतार लिये और उन्हें भिखारिन के कपड़े पहना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिये। रानी को राजमहल से बाहर ले जाकर राजा ने कहा—"जाओ, दीन होकर घर-घर भीख माँगो। तुमने अपने एक क्षण के सुख के लिए जिन झोपड़ियों को जला दिया था, उन्हें तुमको बनवा देना होगा। मैं तुम्हें एक वर्ष का समय देता हूँ। एक वर्ष के बाद लौटकर तुम राज सभा में आना और सबको बताना कि दीन की झोपड़ी का क्या मूल्य है?"

साल भर रानी राजमहल से बाहर रहीं। शीत, घाम और वर्षा सहकर उन्होंने घोर परिश्रम किया और तब पूरे एक वर्ष में झोपड़ियां बनकर तैयार हुईं। रानी ने अब झोपड़ी के वास्तविक मूल्य को समझा। राजा फिर उन्हें राजमहल में ले आये।

अध्ययन

प्रश्न

१. करुणा कौन थी और उसका रूप-रंग कैसा था?

२. वरुणा के तट-घाट क्यों खाली करा दिये गये?

३. झोपड़ियों में आग लगाने का क्या कारण था?

४. राजा के पास क्या शिकायत आयी?

५. राजा पर इस शिकायत का क्या प्रभाव हुआ?

६. राजा ने रानी की बात क्यों नहीं मानी?

७. रानी ने झोपड़ी का मूल्य किस प्रकार समझा?

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों में से हर एक के कई उत्तर दिये गये हैं, जिनमें केवल एक उत्तर ठीक है। ठीक उत्तर पर यह चिह्न (✓) लगाओ—

(क) आग को ज्वालाएं रानी को क्यों बहुत अच्छी लगीं?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(१) इसलिए कि गरीबों की झोपड़ियां जल रही थीं।
(२) इसलिए कि रानी शीत से काँप रही थीं।
(३) इसलिए कि घाट की सफाई हो रही थी।
(४) इसलिए कि रानी बहुत निष्ठुर थी।

(ख) प्रजा की बातें सुनकर राजा का सिर लज्जा से क्यों झुक गया ?
(१) इसलिए कि प्रजा बड़ी निडर हो गयी थी।
(२) इसलिए कि उनका अपमान हो रहा था।
(३) इसलिए कि प्रजा रानी की शिकायत कर रही थी।
(४) इसलिए कि उन्हीं की रानी ने अपराध किया था।

(ग) राजा ने रानी को एक साल के लिए घर से क्यों निकाल दिया ?
(१) जिससे रानी को अपने अपराध का दंड मिल जाय।
(२) जिससे रानी गरीबों के बीच रह सके।
(३) जिससे रानी झोपड़ी बनवा सके।
(४) जिससे रानी झोपड़ी का मूल्य जान सके।

२. निकेतन, सूर्य और पक्षी के तीन-तीन पर्याय बताओ।

३. अन्तिम दो अनुच्छेदों से सर्वनाम पदों को छाँट कर लिखो और हर एक का प्रकार, लिंग, वचन और कारक भी बताओ।

आदेश—कल्पना करो कि एक वर्ष के बाद रानी करुणा लौट कर राजभवन में आती हैं और अपनी भूल का सारा वृत्तान्त वह एक सखी को सुनाना चाहती हैं। रानी के शब्दों में पूरी कहानी लिखो।

टिप्पणी

निर्जन=सुनसान। कल-कूजन=मधुर गुंजार। मुखरित=ध्वनित। निराश्रय=बिना सहारे के। विषधर=सर्प। हास-परिहास=मनोविनोद। न्यायासन=न्याय का आसन। रुद्ध=रुँधे हुए, बन्द। रोषपूर्ण=क्रोधपूर्ण। प्रमोद=आनन्द। रुष्ट=अप्रसन्न।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—५

कर्मवीर

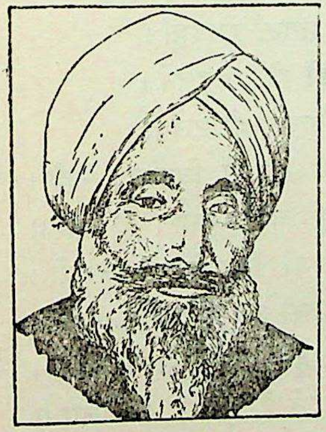

[प्रस्तुत कविता में कर्मवीर की विशेषताओं का सजीव चित्रण किया गया है। इसके रचयिता पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध" हैं जिनका 'प्रिय प्रवास' खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है।]

देख कर बाधा विविध बहु विघ्न घबराते नहीं।
रह भरोसे भाग के, दुख भोग पछताते नहीं॥
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उकताते नहीं।
भीर में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं॥
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले।
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले॥
पर्वतों को काटकर सड़कें बना देते हैं वे:
सैकड़ों मरुभूमि में नदियां बहा देते हैं वे॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गर्भ में जल-राशि के बेड़ा चला देते हैं वे।
जंगलों में भी महा मंगल रचा देते हैं वे।।
भेद नभ तल का उन्होंने है बहुत बतला दिया।
है उन्होंने ही निकाली तार की सारी क्रिया।।

कार्य-थल को वे कभी नहिं पूछते 'वह है कहाँ'।
कर दिखाते हैं असम्भव को भी सम्भव वे वहाँ।।
उलझनें आकर उन्हें पड़ती हैं जितनी ही जहाँ।
वे दिखाते हैं नया उत्साह उतना ही वहाँ।।
डाल देते हैं विरोधी सैकड़ों ही अड़चनें।
वे जगह से काम अपना ठीक करके ही टलें।।

जो कभी अपने समय को यों बितात हैं नहीं।
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं।।
आज कल करते हुए जो दिन गँवाते हैं नहीं।
यत्न करने में कभी जो जी चुराते हैं नहीं।।
बात है वह कौन जो होती नहीं उनके किय।
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिए।।

अध्ययन

प्रश्न

१. कर्मवीर के ऊपर विघ्न-बाधाओं का क्या प्रभाव पड़ता है?
२. कवि ने किस प्रकार के लोगों को सर्वत्र फूला-फला पाया है?
३. कवि ने 'कर्मवीर' के किन-किन साहस पूर्ण कार्यों का उल्लेख किया है?
४. कार्य के समय और स्थल के विषय में कर्मवीर का क्या दृष्टिकोण होता है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. कर्मवीर की दृष्टि में समय का क्या महत्त्व होता है ?

६. कर्मवीर किस प्रकार दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है ?

अभ्यास

१. इन पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो—

(क) भेद नभ-तल...बतला दिया।

(ख) जंगलों में भी महा मंगल रचा देते हैं वे।

२. इस कविता में कर्मवीर की जिन-जिन विशेषताओं का उल्लेख हुआ है, उन सबकी एक सूची बनाओ।

३. इस कविता के विषय में नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। कोष्ठकों में लिखे जिस शब्द से वे पूरे होते हों उस पर यह चिह्न (√) लगाओ।

(क) इस कविता की भाषा (मधुर, कर्कश, मुहावरेदार) है।

(ख) कविता (वीर, करुण, हास्य) रस की है।

(ग) इस कविता की भाषा पर (अंग्रेजी, उर्दू, बंगला) का प्रभाव है।

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

बाधा=रुकावट। विघ्न=अड़चन। भाग=भाग्य। आन (अरबी शब्द)=क्षण। मरुभूमि=रेगिस्तान। जल-राशि=जल का ढेर, अथाह जल। भेद=रहस्य।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—६

कर्तव्य-परायणता

[कर्तव्य-परायणता मानव-जीवन का प्रमुख गुण है। देश की उन्नति और उसकी समृद्धि के लिए यह आवश्यक है कि हम सभी अपना कार्य पूर्ण निष्ठा, लगन और ईमानदारी से करें। प्रस्तुत कहानी में नागरिकता के इसी गुण का सजीव चित्रण किया गया है। कहानी के लेखक श्री कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर आधुनिक हिन्दी साहित्य में अपनी नवीन शैली के लिए विख्यात हैं। 'नयी पीढ़ी नये विचार', 'दीप जले शंख बजे', 'जिन्दगी मुसकराई' आदि इनकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।]

जफर मियाँ एक दिलचस्प आदमी हैं, मेरा बहुत लिहाज करते हैं। जब मैं उनके सैलून में पहुंचा वे एक आदमी की हजामत बना रहे थे और आरा चलाने वाले दो मजदूर इन्तजारी में बाहर बैठे थे।

मेरे दुकान में पहुंचते ही जफर मियाँ ने उस्तरा रख दिया। मेरे लिए उन्होंने कुरसी बिछायी और बाहर की दुकान से चाय का एक प्याला लाकर मुझे दिया। मैं चाय पीने लगा और जफर फिर हजामत बनाने लगे।

हजामत निपटी, तो मुझे लगा कि मेरा नम्बर है, पर जफर मियाँ ने उन मजदूरों में से एक को बुला लिया और वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसके बाल काटने लगे। तभी आ गया उनका असिस्टेंट और वह दूसरे मजदूर की हजामत बनाने लग गया।

अब मैं बैठा हूँ कुरसी पर और देख रहा हूँ कि मियाँ जफर उस मजदूर के बाल काट रहे हैं। मैं मजदूर को देखता हूँ और सोचता हूँ—यह शायद ५-७ दिन से नहीं नहाया। बालों में उसके रेत भरी है और बुरादा भी। उसकी गर्दन काली चीकट हो रही है। और तो और, मुँह पर भी धूल है, पर जफर साहब बड़ी लगन से उसके बाल काट रहे हैं, जैसे यह मजदूर नूरजहाँ का सगा भाई हो।

कभी कंघे से नापते हैं, कभी कैंची से, और फिर फुरक-फुरक दो चार कैंची मारते हैं। मैं देख रहा हूँ कि जफर बालों में इतने लीन हैं कि उन्हें यह याद नहीं कि मैं भी यहाँ बैठा हूँ और उन्हें मेरे भी बाल काटने हैं। वह बालों की कटाई को अपने ज्ञान और कला की चरम सीमा तक पहुँचाना चाहते हैं। उनका ध्यान इस पर नहीं है कि यह मजदूर इस कारीगरी को नहीं समझ सकता। वे यह भी नहीं सोचते कि इस मजदूर की स्थिति ऐसी नहीं है कि वह इन बालों को ठीक रख सके।

मैं सोच रहा हूँ सम्भवतः यह मजदूर हजामत के बाद आज नहायेगा और बालों में तेल डाल कंघा करेगा? पर कल इनमें फिर यही धूल और बुरादा भर जायेगा और ये ऐसे ही उलझ जायेंगे जैसे आज उलझे हुए हैं।

मैं यह सब सोच रहा हूँ पर जफर इनमें से कोई भी बात नहीं सोच रहे हैं। वे अपनी धुन में हैं। वे कंघा चलाते हैं, पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वह नहीं चलता——उलझे बालों में अटक जाता है। जफर मियाँ बाल सुलझाते हैं और कंघा बढ़ाते हैं। कभी वह झुक कर बालों का मिलान देखते हैं, कभी उभारकर, कभी इधर और कभी उधर। एक-एक बाल पर एक-एक ढलाव पर, एक-एक मिलान पर जफर की निगाह है, जैसे कोई इंजीनियर किसी पुल के खम्भों का मिलान देख रहा हो।

यों कटिंग पूरी हुई और तब कैंची को चार बार ताल के साथ खाली ही चुकर-चुकर चला, जफर ने कहा——"लो सरकार, कट गये आपके बाल।"

अब उन्होंने उठाया ब्रुश और जुटे हजामत पर। हजामत में भी वही तल्लीनता। एक हाथ सीधा, तो एक उलटा और तब यह देखभाल कि कहीं कोई कील तो नहीं रह गयी। कील ही नहीं, कलम से लेकर मूंछों की छटाई तक के काम उन्होंने पूर्ण सुन्दरता से किये।

बीस मिनट से ज्यादा मैं जफर की इस तल्लीनता को देखता रहा। सच यह है कि जफर उस मजदूर के बालों में लीन थे और मैं जफर में। देखते-देखते मैं भावों से भर उठा था, यहाँ तक कि हजामत की ऊँची कुरसी पर आने को जब मैं उठा तो इतना भाव-विभोर था कि मैंने जफर को अपने में दबोच लिया।

पैसे देकर जब वह मजदूर चला गया तो मैंने कहा——"जफर मियाँ! तुम तो उस मजदूर को ऐसा लिपटे कि जैसे जिले का कलक्टर ही तुम्हारी दुकान पर आ बैठा हो।"

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जफर ने जो जवाब दिया, उससे आगरे का पेठा और दिल्ली का सोहन हलवा दोनों फीके पड़ गये। बोले—"बाबू जो, मेरे लिए तो जो इस कुरसी पर बैठता है, वही किलट्टर है।"

मैं स्मृतियों की सरिता में तैरने लगा। जफर मियाँ अपना काम पूरा कर चुके। 'लो सरकार बन गयी हजामत' उन्होंने कहा, तो मैं चौंक पड़ा, पर यह क्या मैं इधर उठ रहा हूँ उस कुरसी से और उधर मेरे सामने उतरी जा रही है जीवन-वेद की यह ऋचा—

"हर एक नागरिक में अपने काम के लिए यह चाव, श्रम के प्रति यह श्रद्धा और पेशे के प्रति ईमानदारी के इस भाव का जागरण ही राष्ट्र की जीवन-शक्ति का सर्वोत्तम माप-दंड है।"

अध्ययन

प्रश्न

१. जफर मियाँ के बाल काटते समय लेखक क्या सोच रहा था?
२. बाल काटते हुए जफर मियाँ को देखकर लेखक भाव-विभोर क्यों हो गया?
३. राष्ट्र की जीवन-शक्ति का माप-दंड क्या है?
४. पाठ का शीर्षक कर्त्तव्य-परायणता क्यों रखा गया है? दूसरा कोई और शीर्षक क्या हो सकता है?

अभ्यास

१. नीचे लिखे प्रश्नों के कई उत्तर दिये हुए हैं। उनमें एक ही उत्तर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सही है। ठीक उत्तर पर (√) यह चिह्न लगाओ—

(१) जफर मियाँ ने मजदूरों के बाल पहले क्यों बनाये ?
  (क) इसलिए कि जफर मियाँ उनसे डरते थे।
  (ख) इसलिए कि वे मजदूर अत्यन्त गरीब थे।
  (ग) इसलिए कि वे पहले आये थे।

(२) जफर मियाँ बाल काटने में तल्लीन क्यों हो जाते थे ?
  (क) क्योंकि वे बाल काटना सीखना चाहते थे ?
  (ख) क्योंकि कार्य करने में उनकी निष्ठा थी।
  (ग) क्योंकि बाल काटना उन्हें अच्छी तरह आता था।

२. "तल्लीन" शब्द 'तत्' और 'लीन' के योग से बना है। इसमें 'तत्' के 'त्' और लीन के 'ल्' का परस्पर योग हुआ है। इस सन्धि में 'त्' का 'ल्' हो गया है। 'त्' व्यंजन है। इस प्रकार की सन्धि को जिसमें पहला शब्द व्यंजनान्त हो, व्यंजन सन्धि कहते हैं। इसी प्रकार व्यंजन सन्धि के चार अन्य उदाहरण दो।

टिप्पणी

दिलचस्प=मनोरंजक। लिहाज करना=ध्यान रखना। असिस्टेंट=(अंग्रेजी शब्द) सहायक। भाव-विभोर=तल्लीन। स्मृति=याद। जीवन-वेद की ऋचा=जीवन व्यतीत करने का सच्चा सिद्धान्त। ऋचा=वैदिक मन्त्र। माप-दंड=पैमाना, जाँच।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—७

चन्द्रशेखर आजाद

[इस पाठ के लेखक पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी हिन्दी के अनुभवी तथा लब्ध-प्रतिष्ठ पत्रकार एवं लेखक हैं। 'विशाल भारत' और 'मधुकर' मासिक पत्रिकाओं का उन्होंने बहुत दिनों तक सम्पादन किया। इस समय वे अपने नगर फिरोजाबाद (आगरा) में रहते हैं और भारत की स्वतन्त्रता के लिए शहीद होने वाले सशस्त्र क्रान्तिकारियों का जीवन-वृत्त लिखने में लगे हैं। प्रस्तुत पाठ उसका एक उदाहरण है।]

काशी के जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में बड़ी भीड़ थी। भीड़ के बीच से हथकड़ी पड़े हुए एक सोलह वर्ष के बालक को चार सिपाही बड़ी सतर्कता से लाये। बालक के मुखमंडल पर स्वाभिमान, निर्भीकता और आत्म-विश्वास के भाव स्पष्ट थे। अदालत में पहुंचने पर बालक की हथकड़ियां खोल दी गयीं। मुकदमा प्रारम्भ हुआ। मजिस्ट्रेट ने बालक से पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

बालक ने सगर्व उत्तर दिया—"आजाद।"

मजिस्ट्रेट ने पूछा—"तुम्हारा घर कहाँ है?"

बालक ने उत्तर दिया—"जेलखाना।"

मजिस्ट्रेट ने खीझ कर पूछा—"तुम क्या काम करते हो?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालक ने कहा--"भारत माँ को स्वाधीन कराने की साधना।"

अब मजिस्ट्रेट के रोष का ठिकाना न रहा। उसने झल्लाकर कहा, "ऐसे बेढंगे उत्तर क्यों देते हो? जानते नहीं यह अदालत है?" बालक ने उसी प्रकार निर्भीकता से उत्तर दिया, "मेरे उत्तर बेढंगे नहीं, सही हैं। विदेशी सरकार की पराधीनता स्वीकार न करने पर हमारा सच्चा नाम आजाद ही हो सकता है। जब तक पराधीनता की श्रृंखलाओं को तोड़ न देंगे तब तक हमारा सच्चा घर जेलखाना और वास्तविक कार्य भारत-माता की स्वाधीनता की साधना ही हो सकती है।"

मजिस्ट्रेट ने फिर झल्लाकर पूछा, "क्या तुमने सिपाही पर हमला किया।"

आजाद ने दृढ़ता से उत्तर दिया, "हाँ, क्योंकि सिपाही शान्त सत्याग्रहियों को बूट की ठोकरें मार रहा था और गालियाँ बक रहा था।" मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, "इसे ले जाओ और पन्द्रह कोड़े लगाकर मुक्त कर दो।"

कोड़े खाकर बालक जब जेल से बाहर निकला तो उसका शरीर लोहूलुहान था। कोड़ों के निशान स्पष्ट थे और जगह-जगह से रक्त निकल रहा था। परन्तु बालक उसी प्रकार से शान्त और दृढ़ था। जेल के फाटक से बाहर बहुत से स्त्री पुरुष उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने फूल-मालाओं से उसके कंठ को भर दिया और 'भारत माता की जय', 'चन्द्रशेखर आजाद की जय' के गगनभेदी नारों से सारा वायुमंडल गूँज उठा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहीं चन्द्रशेखर आजाद आगे चल कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन सेना' के प्रधान सेनापति नियुक्त हुए और इन्होंने ही क्रान्तिकारियों के एक विशाल दल का संगठन किया जिसमें सरदार भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त जैसे सदस्य थे।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्य प्रदेश में झाबुआ जिले के भावरा नामक ग्राम में हुआ था। उनके पिता पं० सीताराम तिवारी उन्नाव जिले के बदरखा नामक ग्राम के निवासी थे। जीविकोपार्जन के लिए वे भावरा पहुंच गये थे। वेतन उन्हें लगभग आठ रुपया मासिक मिलता था। इसी में उन्हें अपने परिवार का पालन करना पड़ता था। अतः आजाद का बाल्यकाल अत्यन्त निर्धनता में व्यतीत हुआ। चौदह-पन्द्रह वर्ष की अवस्था में वे विद्याध्ययन के लिए काशी आ गये और एक छोटी सी कोठरी लेकर संस्कृत का अध्ययन करने लगे।

सन् १९२१ में जब काशी में असहयोग आन्दोलन चल रहा था, तब चन्द्रशेखर भी उसमें सम्मिलित हुए। महात्मा गांधी पर उनकी अपार श्रद्धा थी परन्तु शान्त सत्याग्रहियों पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों को उनका हृदय सहन न कर सका। चौरीचौरा का हत्याकांड होने पर महात्मा गांधी ने असहयोग आन्दोलन स्थगित कर दिया। चन्द्र-शेखर आजाद और उनके अन्य साथियों के मन में यह विचार उठा कि अहिंसा द्वारा जन-जागृति तो होती है परन्तु केवल इसी का सहारा लेकर विदेशी सरकार को नहीं निकाला जा सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

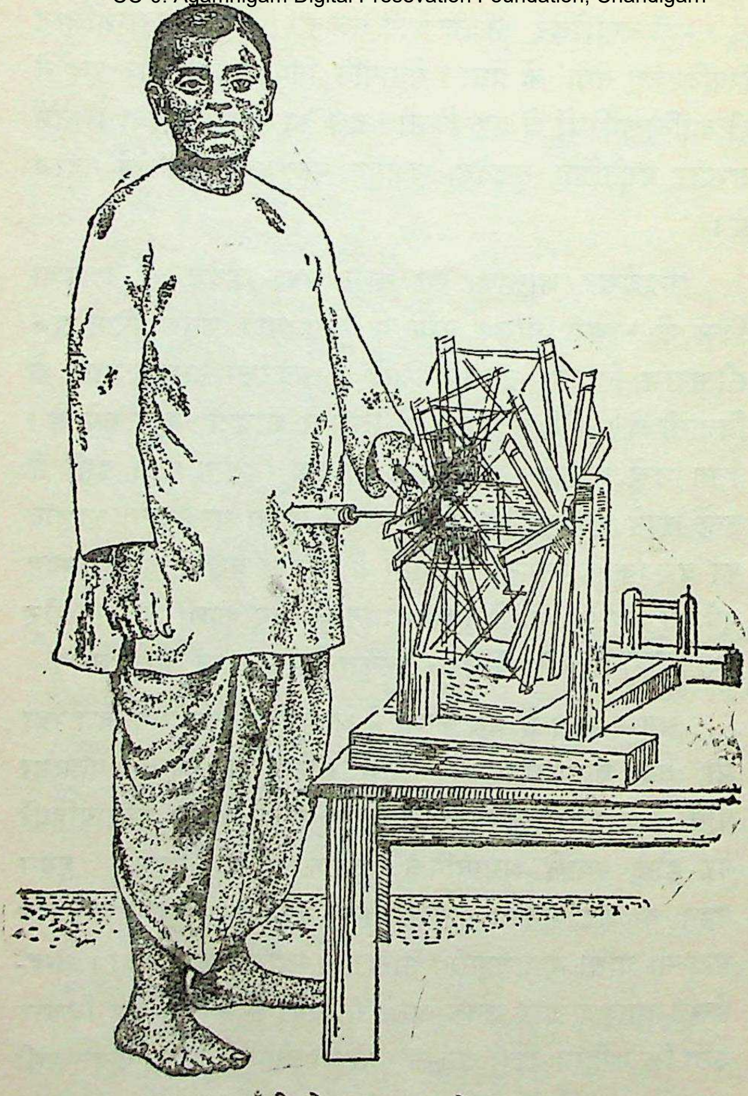

महात्मा गाँधी के भक्त चन्द्रशेखर आजाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सरकार को आतंकित करने के लिए सशस्त्र उपायों का भी अवलम्बन करना चाहिए। अतः क्रान्तिकारी आन्दोलन छेड़ा गया।

सारे देश में क्रान्तिकारियों की गुप्त सभाएं होने लगीं और ऐसे नवयुवकों की खोज होने लगी जो जान हथेली पर रखकर क्रान्तिकारी उपायों का अवलम्बन कर सकें और घोर यन्त्रणाएं देने पर भी दल का भेद न बतायें और हँसते-हँसते फाँसी के तख्ते पर झूल जायँ। स्थान-स्थान पर ऐसे दल बने और उन्हें संगठित करके हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सेना का संगठन किया गया। दल के पास संगठन करने के लिए रुपये न थे। अतः सन् १९२५ की ९ अगस्त को काकोरी के पास एक पैसेंजर गाड़ी रोक कर सरकारी खजाना लूटा गया। यह काम शहीद रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में किया गया था और उसमें आजाद भी शामिल थे। कालान्तर में इस डकैती के सिलसिले में बहुत से क्रान्तिकारी पकड़े गये, केस चला और रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खाँ तथा राजेन्द्र लहरी को फाँसी की सजा दी गयी। जेल में घोर यन्त्रणाएं देने पर भी उन्होंने अपने फरार साथियों का भेद न बताया और वे—

'सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,
देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है।'

गाते हुए फाँसी के तख्ते पर झूल गये।

चन्द्रशेखर आजाद पुलिस के हाथ न लग सके। उनको पकड़ने के लिए बड़े-बड़े इनाम घोषित किये गये। भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के प्रत्येक नगर और गाँव में उनके फोटो चिपकाये गये परन्तु उन्हें पुलिस गिरफ्तार न कर सकी। विशेषता यह थी कि आजाद किसी जंगल या पहाड़ में छिप कर नहीं रहते थे। वे वेश और नाम बदल कर जगह-जगह घूमते रहते थे और चारों आर घूम-घूम कर अपने दल का संगठन करते थे। कई बार उनका ऐसे गुप्तचरों का भी साथ हो गया जो उन्हीं को पकड़ने की फिक्र में थे। आजाद को देखकर उन्हें बार-बार सन्देह होता था परन्तु उनकी वेश-भूषा और बातचीत करने के ढंग को देखकर उनका मन उन्हें आजाद मान लेने को तैयार न होता था। आजाद उनके साथ अपने ही पकड़वाने के उपायों पर बातचीत करके चले आते। झाँसी में कुछ दिनों तक उन्होंने मोटर ड्राइवर बनकर मोटर चलाना सीखा और पुलिस सुपरिंटेंडेंट को अपना मोटर चलाना दिखाकर ड्राइवरी का लाइसेन्स भी प्राप्त कर लिया।

साइमन कमीशन का विरोध करते हुए पंजाब केसरी लाला लाजपतराय को पुलिस ने लाठियों से इतनी बुरी तरह पीटा था कि कुछ दिनों बाद उनकी मृत्यु हो गयी। सारा देश राष्ट्र के इस अपमान से क्षुब्ध हो उठा। क्रान्तिकारी दल ने आजाद और भगतसिंह के नेतृत्व में इसका बदला लेने का निश्चय किया और योजना के अनुसार आजाद की देखरेख में भगतसिंह और राजगुरु ने लाहौर के डिप्टी-सुपरिंटेंडेंट सांडर्स को गोली से मार दिया जिसकी लाठी से लालाजी घायल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुए थे। यह घटना दिसम्बर १९२८ की है। आजाद और उनके साथियों के इस कार्य से देश में हर्ष और उत्साह की एक लहर सी दौड़ गयी।

उन दिनों देश में अंग्रेजों के खिलाफ काफी असन्तोष था। मजदूर व्यापक पैमाने पर हड़ताल कर रहे थे। अंग्रेज सरकार ने जनता को कुचलने के लिए दो दमनकारी बिल केन्द्रीय असेम्बली में पेश किये। देश ने एक स्वर से उनका विरोध किया। लेकिन विदेशी सरकार सत्ता के मद में पागल हो रही थी। उसे जनता का विरोध सुनायी नहीं पड़ रहा था और वह दोनों बिलों को पास कराने पर तुली थी। आजाद और उनकी पार्टी ने बहरों के कान खोलने का निश्चय किया। तय किया गया कि केन्द्रीय असेम्बली में बम फेंक कर बिलों का विरोध किया जाय। योजना के अनुसार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका और वहीं गिरफ्तार हो गये। अदालत के सामने उन्होंने जो बयान दिया उसने सिद्ध कर दिया कि क्रान्तिकारी दल का उद्देश्य डाके डालना और दूसरों की हत्या करना नहीं बल्कि देश को स्वाधीन कराना है और इसके लिए वे हँसते-हँसते घोर यन्त्रणाओं को सहने और सहर्ष फाँसी के तख्ते पर भी चढ़ने को तत्पर हैं।

इसके बाद आजाद के और भी साथी गिरफ्तार हो गये। अपने प्रमुख साथियों के गिरफ्तार होने पर दल के पुनर्गठन और आन्दोलन को आगे बढ़ाने का समस्त भार आजाद पर आ गया। अपनी जान पर खेल कर आजाद इसे बराबर निभाते रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

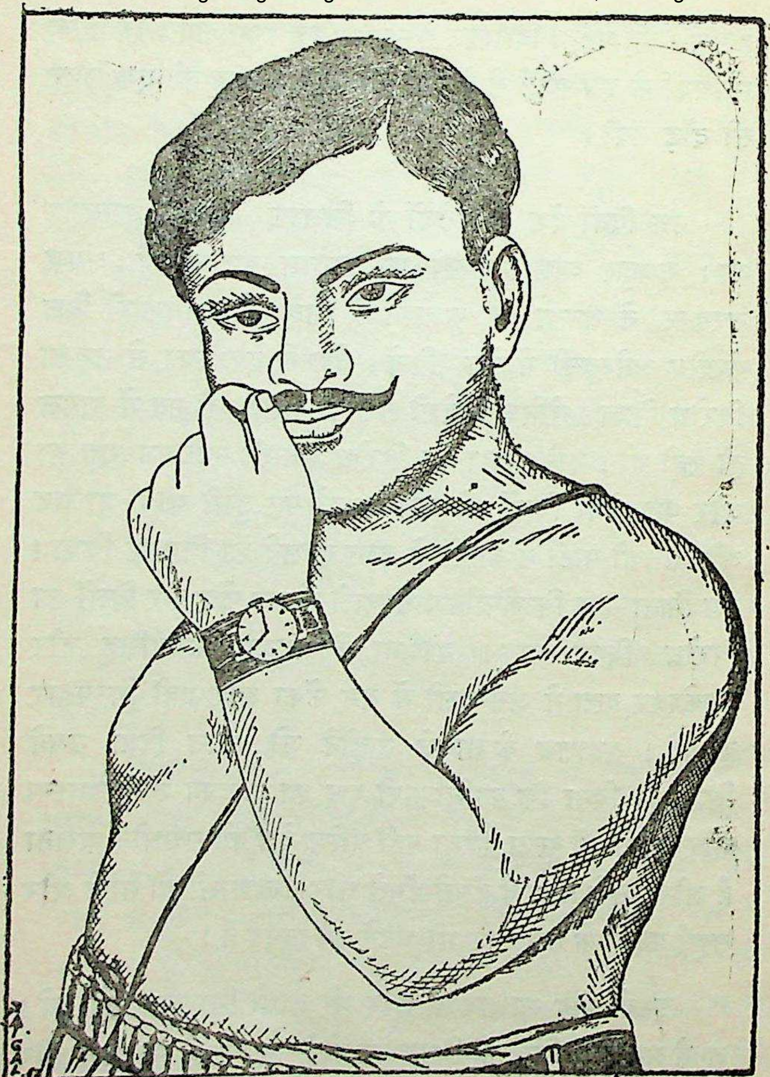

क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी कार्य के लिए उन्हें प्रयाग आना पड़ा। प्रयाग में एक दिन जब वे अल्फ्रेड पार्क में बैठे हुए थे, एक विश्वासघाती के सूचना देने पर एकाएक पुलिस का एक बड़ा दल वहाँ आ गया। आजाद सारी स्थिति समझ गये। पुलिस के घेरे से बच निकलने का कोई उपाय न देखकर वे एक विशाल वृक्ष की आड़ में स्थिर भाव से खड़े होकर अपने रिवाल्वर से गोलियाँ चलाने लगे। पुलिस के विशाल दल में से किसी भी व्यक्ति को उनके पास पहुँचने का साहस न हुआ। यह लड़ाई लगभग एक घंटा चली और आजाद की गोलियों से पुलिस के कई आदमी घायल हुए। कहते हैं कि जब उनके पास केवल एक गोली बची तब उसे उन्होंने स्वयं अपनी कनपटी पर दाग लिया और अमर होकर भारत-माता की गोद में सदा के लिए सो गये।

आजाद वीरता की मूर्ति थे, स्फूर्ति उनके अंग-अंग से झलकती थी। वे निर्भीकता के साक्षात स्वरूप थे। राष्ट्र ने उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उनकी एक मूर्ति उसी स्थान पर स्थापित की है जहाँ वे वीरगति को प्राप्त हुए थे। मूर्ति के निकट ही आजाद पुस्तकालय है, जहाँ पर भारतमाता की स्वाधीनता के लिए फाँसी पर झूलने वाले उनके अनेक साथियों की जीवन-गाथायें सुरक्षित रूप से हैं—

शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. मजिस्ट्रेट के पूछने पर आजाद ने अपना परिचय किस प्रकार दिया ?
२ चन्द्रशेखर आजाद के बाल्य जीवन के विषय में तुम क्या जानते हो ?
३. क्रान्तिकारी आन्दोलन क्यों छेड़ा गया ?
४. हिन्दुस्तान रिपब्लिकन सेना के संगठन का क्या उद्देश्य था ?
५. चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस क्यों नहीं पकड़ सकी ?
६. लाजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिए कौन-सी योजना बनायी गयी ?
७. आजाद की मृत्यु किस प्रकार हुई ?
८. अल्फ्रेड पार्क में आजाद का स्मारक स्थापित करने के क्या कारण हैं ?

अभ्यास

१. सेनापति की तरह पति जोड़कर पाँच अन्य शब्दों की रचना करो।
२. 'राम धीरे-धीरे चलता है'। इस वाक्य में 'धीरे-धीरे' शब्द 'चलता है' क्रिया की विशेषता बताता है। ऐसे शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं। नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया विशेषण शब्दों को रेखांकित करो—

(अ) कमल जल्दी-जल्दी पढ़ता है।
(ब) तोता पिंजड़े से निकल कर तेजी से उड़ गया।
(स) मेरे पास शीघ्र आओ।

३. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखो और अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका प्रयोग करो—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साधना, लोहूलुहान, अमानुषिक, यन्त्रणा, पुनर्गठन, भावपूर्ण, सार्थक।

आदेश—एक लेख लिखो जिसमें देश की स्वतन्त्रता के लिए 'आजाद' द्वारा की गयी सेवाओं का वर्णन हो।

टिप्पणी

सगर्व=स्वाभिमान पूर्वक, घमंड के साथ। रोष=क्रोध। बेढंगा=बुरे ढंग का, भद्दा। शृंखला=बेड़ी, कड़ी। गगनभेदी=आकाश को भेदने वाला, बड़े जोर का। असहयोग आन्दोलन=विदेशी सरकार से सहयोग न करने का आन्दोलन जो गाँधीजी ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए चलाया था। अपार=जिसका पार या अन्त न हो, अत्यधिक। अमानुषिक=जो मनुष्योचित न हो, पैशाचिक, पाशविक। जागृति=जागरण। आतंक=भय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—८

सहकारी खेती

(रेडियो गोष्ठी)

[हमारे देश में खाद्यान्न के अभाव की समस्या भयंकर रूप धारण करती जा रही है। प्रस्तुत पाठ में इस समस्या के समाधान का एक उपाय सुझाया गया है।]

[उद्घोषक—यह आकाश वाणी लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी और रामपुर है। इस समय एक बज कर बीस मिनट हुए हैं। अब माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए सहकारी खेती पर एक गोष्ठी प्रस्तुत की जाती है।]

कई समवेत स्वर—विनोद भाई नमस्ते, नमस्ते विनोद भाई।

विनोद—नमस्ते भाई नमस्ते। भाई केशव, आज तुम्हारे आने में इतना विलम्ब क्यों हो गया? हम लोग बड़ी देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

केशव—जरा अनाज की मंडी की ओर चला गया था। गेहूँ खरीदना था। क्या बतायें, गेहूँ का भाव तो आकाश पर चढ़ता जा रहा है।

रहीम—गेहूँ का ही क्यों? चावल, चना, ज्वार-बाजरा सभी अनाजों की यही स्थिति है। पिछले सप्ताह में जितना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गल्ला लाया था उतने के लिए अब सवाया-ड्योढ़ा पैसा चाहिए। हर हफ्ते की यही कहानी है। क्यों भाई विनोद, क्या इसका कोई कारण तुम्हें ज्ञात है ?

विनोद—हाँ, इसका मूल कारण है कि हमारे देश में आबादी के अनुपात में खाद्यान्नों का उत्पादन कम है।

केशव—ठीक कहते हो भाई विनोद, इसीलिए तो प्रति वर्ष 'अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन' चलाया जाता है। पर उत्पादन बढ़ता क्यों नहीं ? क्या हम लोग इसके लिए पर्याप्त प्रयत्न नहीं करते ?

विनोद—नहीं, ऐसी बात नहीं है। हमने विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत उत्पादन-वृद्धि के अनेक प्रयास किये हैं। देश में नयी-नयी नहरें निकाली गयी हैं, नलकूपों की व्यवस्था की गयी है और किसानों को कुएं खोदने के लिए सहायता दी गयी है। विकास विभाग के माध्यम से उत्तम बीज और खाद की भी व्यवस्था की गयी है।

रहीम—पर इतना सब होने पर भी हमारा देश खाद्यान्न के सम्बन्ध में आत्म-निर्भर क्यों नहीं हो पाता ?

केशव—मेरे विचार से तो जनसंख्या की वृद्धि ही इसका मुख्य कारण है।

विनोद—तुम्हारा कथन अंशतः ठीक है। किन्तु यही एक मात्र कारण नहीं है और न मुख्य कारण ही। आबादी बढ़ने की समस्या सभी देशों में है पर अन्न की कमी की समस्या इतनी भयंकर कहीं नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोविन्द—मैं समझता हूँ कि इसका कारण सिंचाई आदि की व्यवस्था में कमी है। मैंने अखबारों में पढ़ा भी था कि गत वर्ष पानी न बरसने से देश के कई भागों में अकाल पड़ गया था और इस वर्ष भी कई भागों में अकाल पड़ जाने की सम्भावना है।

विनोद—तुम्हारा भी कहना ठीक है, पर आंशिक रूप में ही।

केशव—(हँसकर) तो फिर पूरा ठीक क्या है?

रहीम—आधी बात तुमने कही और आधी गोविन्द ने, दोनों को मिला दो तो पूरा उत्तर मिल जायगा।

(सबके हँसने की ध्वनि)

विनोद—भाई मैं पूरा उत्तर जानने की डींग तो नहीं हांकता पर इतना अवश्य कहूँगा कि अन्न के अभाव को दूर करने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम सहकारी खेती की विधि अपनायें। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस दिशा में कुछ प्रयत्न हुआ भी है।

केशव—मैंने अखबारों में सहकारिता सम्बन्धी शीर्षक तो बहुत से देखे हैं पर उसके विषय में कुछ ज्ञान या रुचि न होने से उसके विस्तार में नहीं जा सका। तुम्हारे कहने के अनुसार तो यह कोई महत्त्वपूर्ण योजना मालूम होती है।

विनोद—हाँ, सचमुच यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण योजना है।

गोविन्द—यह किस प्रकार? कुछ विस्तारपूर्वक समझाओ भी तो।

विनोद—देखो, भाई, हमारे देश की वर्तमान कृषि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
व्यवस्था बड़ी दोषपूर्ण है। कृषि योग्य भूमि का लगभग ८० प्रतिशत भाग ऐसे लोगों के पास है जो उत्पादन तो अधिक चाहते हैं पर स्वयं कृषि नहीं करते, मजदूरों से कराते हैं। खेती से कार्य करने वाले मजदूरों का उत्पादन के घटने या बढ़ने से कोई मतलब नहीं क्योंकि उन्हें तो बँधी-बँधायी मजदूरी भर मिलेगी। कृषि-योग्य भूमि का लगभग २० प्रतिशत भाग उन छोटे-छोटे किसानों के पास है जो खेती में मन लगाते हैं, स्वयं परिश्रम भी करते हैं पर उनके पास पूँजी नहीं है और पूँजी के अभाव में वे आधुनिक उपकरणों का उपयोग नहीं कर सकते। विकास-विभाग की सहायता भी वे नहीं ले पाते।

रहीम—मैं समझ गया। तुम्हारे कहने का तात्पर्य है कि हमारी वर्तमान कृषि-व्यवस्था में पूँजी एक के पास है, श्रम दूसरे के पास तो मन किसी और के पास। इसी कारण उत्पादन कम है।

विनोद—हाँ, बिलकुल यही परिस्थिति है।

केशव—ऐसी स्थिति में तो उत्पादन कदापि नहीं बढ़ सकता। पर इन सबको एक कैसे किया जा सकता है?

विनोद—इनके एक करने का उपाय ही सहकारिता है। यह वह योजना है जो कृषि के इन तीनों प्रमुख साधनों को इकट्ठा कर देती है।

गोविन्द—यह कैसे? ये तीनों भला एक कैसे किये जा सकते हैं?

विनोद—सहकारी पद्धति में खेतों पर उनके मालिकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
का स्वामित्व बना रहता है और उन्हीं के अनुपात में उन्हें उत्पादन का भाग मिलता है। इससे वे सन्तुष्ट रहते हैं। उत्पादन के अनुपात में ही श्रम का पुरस्कार रखा जाता है। इससे श्रमिक वर्ग भी सन्तुष्ट रहता है। न श्रम की कमी रहती है, न पूंजी की। इसीलिए आधुनिक यन्त्रों का उपयोग भी सम्भव हो जाता है।

गोविन्द—यह तो ठीक है, किन्तु इसका प्रबन्ध कैसे होता है ?

विनोद—इसका प्रबन्ध एक समिति बना कर किया जाता है। भूमिधर और मजदूर दोनों ही इसके सदस्य होते हैं। समिति खेती का पूरा प्रबन्ध करती है। इस सहकारी समिति को सहकारिता विभाग से सहायता भी मिल जाती है। किसी बड़ी समिति से वह ऋण भी ले सकती है। इसे कृषि उपकरण सस्ते दामों पर मिल जाते हैं। उत्तम बीज तथा खाद भी इसे आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

गोविन्द—तब तो भाई सहकारिता बड़ी अच्छी चीज है। हमें इसे अवश्य अपनाना चाहिए।

समवेत स्वर—हाँ भाई, हमें इसे अवश्य अपनाना चाहिए।

विनोद—आज तो बहुत देर हो गयी, चलो घर चला जाय। (समवेत स्वर) हाँ भाई, चलो।

(उद्घोषक—अभी आपने सहकारिता सम्बन्धी गोष्ठी की बातचीत सुनी। कल भी इसी समय हमारा कार्यक्रम उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों के लिए होगा।)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. रेडियो गोष्ठी में किस समस्या पर विचार किया गया?

२. खाद्यान्न की कमी के क्या कारण बताये गये?

३. हमारे देश में खाद्यान्न की कमी को दूर करने के लिए क्या उपाय किये गये हैं?

४. विनोद ने खाद्यान्न के उत्पादन में कमी का प्रमुख कारण क्या बताया?

५. सहकारी खेती की व्यवस्था किस प्रकार होती है?

अभ्यास

१. 'वर्षीय' शब्द की रचना पर ध्यान दो। मूल शब्द से इसके रूप और अर्थ में क्या परिवर्तन दिखायी पड़ता है? निम्न-लिखित शब्दों से इसी रूप और अर्थ वाले अन्य शब्द बनाओ—
पठन, कथन, सराहना, दर्शन।

२ यातायात में दो शब्द हैं—यात+आयात। ये शब्द एक दूसरे के विलोमार्थी हैं। निम्नलिखित में से जो शब्द इसी प्रकार बने हों उन पर यह चिह्न (✓) लगाओ।
कृष्णार्जुन, गमनागमन, हिमालय, लाभालाभ, खाद्याभाव।

३. निम्नलिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—
अनुपात, पर्याप्त, अंशतः, सम्भावना, सन्तुष्ट।

आदेश—अपने पुस्तकालय से सहकारी खेती सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ो और 'सहकारी खेती' पर एक निबन्ध लिखो।

टिप्पणी

उद्घोषक=घोषणा करने वाला। समवेत=समन्वित, मिले-जुले। यातायात=(यात+आयात) भेजना और मँगाना। उपकरण=सामग्री। पद्धति=विधि। स्वामित्व=अधिकार। परिस्थिति=स्थिति या दशा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—९

बीज

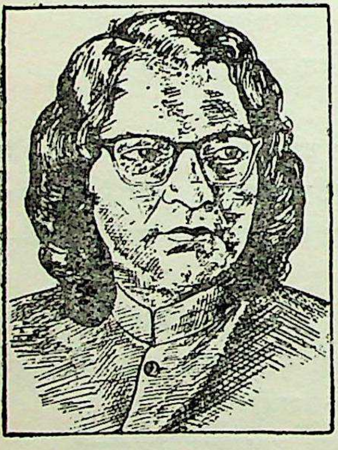

[इस कविता में कवि ने बीज की आश्चर्यजनक विशेषताओं का वर्णन किया है। उसने बीज जैसी छोटी वस्तु की विकास-शक्ति की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट कर उसे महत्त्वपूर्ण बना दिया है। कविता के रचयिता श्री सुमित्रा-नन्दन पन्त हैं।]

मिट्टी का गहरा अन्धकार,
डूबा है उसमें एक बीज—
वह खो न गया, मिट्टी न बना,
कोदों, सरसों से क्षुद्र चीज।

उस छोटे उर में छिपे हुए
हैं डाल-पात औ स्कन्ध मूल,
गहरी हरीतिमा की संसृति
बहु रूप रंग, फल और फूल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह है मुट्ठी में बन्द किये
वट के पादप का महाकार
संसार एक! आश्चर्य एक!
वह एक बूंद सागर अपार!

बन्दी उसमें जीवन अंकुर
जो तोड़ निखिल जग के बन्धन—
पाने को है निज सत्व,—मुक्ति
जड़ निद्रा से जग, बन चेतन!

मिट्टी का गहरा अन्धकार
सोया है उसमें एक बीज—
उसका प्रकाश उसके भीतर
वह अमर पुत्र! वह तुच्छ चीज!

अध्ययन

प्रश्न

१. बीज का प्रारम्भिक जीवन कैसा होता है?
२. बीज अपने हृदय में क्या-क्या छिपाये रहता है?
३. कवि को बीज की किस विशेषता पर आश्चर्य है?
४. कवि ने बीज को 'अमर पुत्र' क्यों कहा है?

अभ्यास

१. निम्न पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो--

(क) गहरी हरीतिमा की संसृति।
(ख) बन्दी इसमें जीवन अंकुर।
(ग) वह एक बूंद सागर अपार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२. कविता में आये हुए कुछ विशेषण और विशेष्य नीचे दिये गए हैं। जिन विशेषण और विशेष्य शब्दों का परस्पर सम्बन्ध हो उनके पूर्व एक ही क्रमाक्षर लिखो जैसा कि एक उदाहरण में दिखाया गया है —

विशेषण	विशेष्य
(क) गहरा	( ) पुत्र
क्षुद्र	सागर
जड़	चीज
अपार	(क) अन्धकार
अमर	निद्रा

आदेश—अन्तिम चार पंक्तियों की व्याख्या करो।

टिप्पणी

क्षुद्र=हीन, तुच्छ। स्कन्ध=कन्धा, तना। मूल=जड़। हरीतिमा=हरियाली। संसृति=सृष्टि, संसार। पादप=वृक्ष। जीवन-अंकुर=जीवन रूपी अंकुर। निखिल=सम्पूर्ण। सत्व-मुक्ति=जीवन और स्वतन्त्रता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१०

ईदगाह

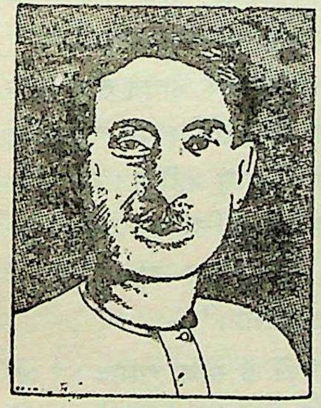

[प्रस्तुत कहानी में एक भोले-भाले बच्चे की विवेक शक्ति और कर्तव्य-भावना का हृदयग्राही चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी के लेखक उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द हैं।]

रमजान के पूरे तीस रोज के बाद ईद आयी है। कितना मनोहर और सुहावना प्रभात है। वृक्षों में कुछ अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो। कितना प्यारा, कितना शीतल मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो। गाँव में कितनी हलचल है। ईदगाह की तैयारियां हो रही हैं। लड़के सबसे अधिक प्रसन्न हैं। जल्दी मची ह कि लोग ईदगाह के लिए चलत नहीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हामिद बड़ा प्रसन्न है। वह चार-पाँच साल की गरीब-सूरत, दुबला-पतला लड़का, जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती-होती एक दिन मर गयी। हामिद अब अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में ही सोता है।

अमीना का दिल कचपचा रहा है। गाँव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं। हामिद का बाप अमीना के सिवा कौन है? उसे कैसे अकेले मेले में जाने दे। उस भीड़-भाड़ में बच्चा कहीं खो जाय तो क्या हो। नन्हीं सी जान। तीन कोस पैदल कैसे चलेगा? पैरों में छाले पड़ जायेंगे। पर हामिद के उत्साह का क्या करे? अधिक पैसे भी पास नहीं हैं। क्या कुछ करके वह कुल तीन पैसे हामिद को मेले के लिए जुटा पायी है। हामिद भीतर जाकर कहता है—"तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले आऊंगा, बिलकुल मत डरना।"

गाँव से मेला चला। अन्य बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़ कर आगे निकल जाते। कभी किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों की प्रतीक्षा करते।

सहसा ईदगाह पर दृष्टि पड़ी। ऊपर इमली के घने वृक्षों की छाया है। नीचे पक्का फर्श है जिस पर बिछायत हो रही है। रोजेदारों की पंक्तियां एक के पीछे एक न जाने कहाँ तक चली गयी हैं। नये आने वाले आकर पीछे की कतार में खड़े हो जाते हैं। आगे जगह नहीं है। धन और पद का यहाँ कोई प्रश्न है नहीं। लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुकते हैं। फिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं। एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। जैसे बिजली की लाखों बत्तियां एक साथ जल उठें और फिर एक साथ बुझ जायँ। अपूर्व दृश्य था——मानो भ्रातृत्व भाव का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोये हो।

नमाज समाप्त हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। बूढ़े और बच्चे सभी मगन हैं। मिठाई और खिलौना की दुकान पर धरना शुरू हो गया। उधर दुकानों की कतारें लगी हैं। तरह-तरह के खिलौने हैं। सिपाही और मुजरिम, राजा और वकील, भिश्ती और धाबी। वाह कितने सुन्दर खिलौने हैं। बस अब बाला ही चाहते हैं। महमूद सिपाही लेता है—— खाकी वरदी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बन्दूक रखे हुए। मालूम होता है, अभी कवायद किये चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसन्द आया——कमर झुकी है, ऊपर मशक रखी है। नूरे को वकील से प्रेम है——काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानूनी पोथा लिये हुए। मालूम होता है, अभी-अभी अदालत से बहस किये चले आ रहे हैं। सब दो-दो पैसों के
अदालत से बहस किये चले आ रहे हैं। सब दो-दो पैसों के
खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। वह इतने मँहगे खिलौने कैसे ले ?

खिलौने के बाद मिठाइयों का नम्बर आता है। किसी ने रेवड़ियां ली हैं, किसी ने गुलाब-जामुन। मजे से खा रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

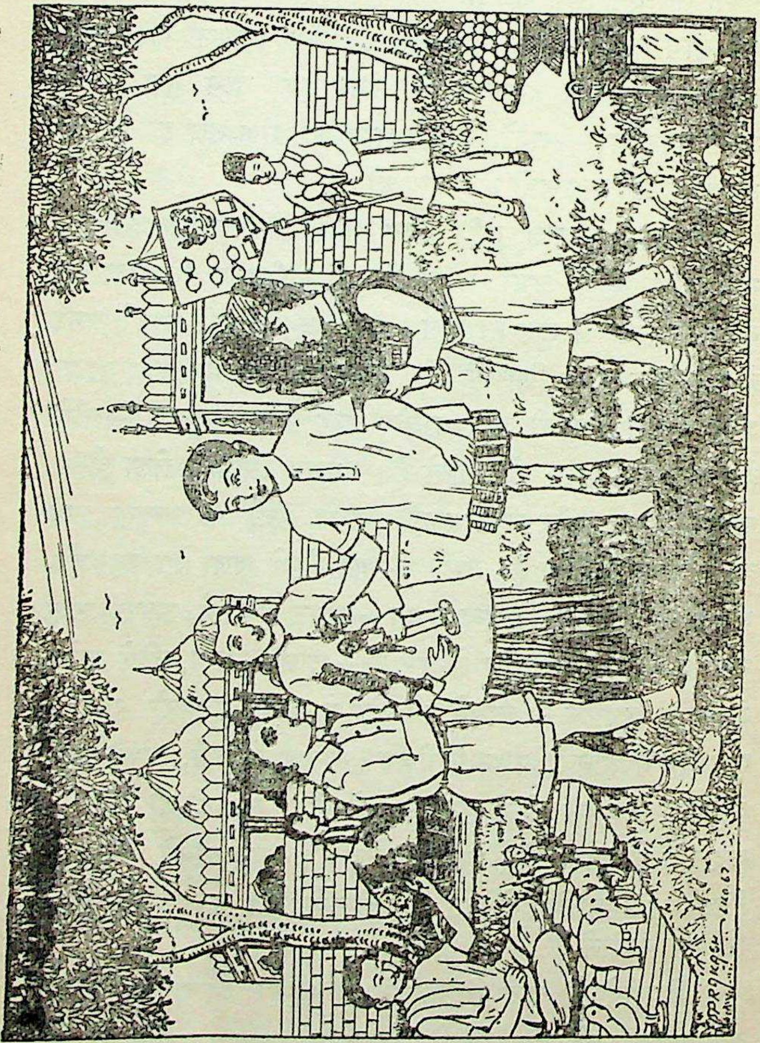

ईदगाह के मेले में हामिद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की थीं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। अकेला हामिद लोहे की दूकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे ख्याल आया—दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियां उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी। फिर उसकी अँगुलियां कभी न जलेंगी। खिलौनों से क्या फायदा? जरा देर तो खुशी होती है। फिर तो कोई उनकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता। कई तो घर पहुँचते-पहुँचते ही टूट-फूट कर बराबर हो जायेंगे।

हामिद के साथी आगे बढ़ गये हैं। सवील पर सबके सब शरबत पी रहे हैं। हामिद सोचता है। देखो, कैसे हैं, ये सब। इतनी मिठाइयाँ लीं। मुझे किसी ने एक भी नहीं दी। उस पर कहते हैं, मेरे साथ खेलो। खायें मिठाइयाँ, उन्हीं का मुँह सड़ेगा, फोड़े फुन्सियाँ निकलेंगी, जबान चटोरी हो जायगी। मैं क्यों जीभ खराब करूँ? मैं तो चिमटा ही लूँगा। दादी उसे देखेंगी। दौड़कर मेरे हाथ से ले लेंगी। कहेंगी—मेरा बच्चा अम्मा के लिए चिमटा लाया है। हजारों दुआएं देंगी। इन लोगों के खिलौनों पर कौन इन्हें दुआ देगा? मेरे पास पैसे नहीं हैं, तभी तो मोहसिन और महमूद मिजाज दिखाते हैं। सबके सब खूब हँसेंगे कि हामिद ने चिमटा लिया है? हँसो, मेरी बला से।

उसने दूकानदार से पूछा—"यह चिमटा कितने का है?" दूकानदार ने छः पैसे बताये। हामिद का दिल बैठ गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"ठीक ठीक बताओ।"

"ठीक-ठीक पाँच पैसे लगेंगे। लेना हो तो लो, नहीं चलते बनो।"

हामिद ने कलेजा मजबूत करके कहा—"तीन पैसे लोगे?"

और यह कहता हुआ, वह आगे बढ़ गया कि कहीं कानदार घुड़क न दे। लेकिन दुकानदार ने घुड़की नहीं दी। बुलाकर तीन पैसे में चिमटा दे दिया। हामिद ने इस तरह उसे कन्धे पर रखा मानो वह बन्दूक हो, और शान से अकड़ता हुआ संगियों के पास गया। मोहसिन ने हँसकर कहा—"यह चिमटा क्यों लाया, पगले।" हामिद ने सफाई दी, —"तुम्हारे खिलौने क्या हैं? कोरी मिट्टी। जरा नीचे गिर पड़े तो टूट-फूट कर खतम हो जायँ। अगर कोइ शेर आ जाय तो मियाँ भिश्ती के छक्के छूट जायँ, मियाँ सिपाही मिट्टी की बन्दूक छोड़कर भाग जायँ, वकील साहब चोगे में मुँह छिपाकर जमीन पर लेट जायँ। मगर यह चिमटा, यह बहादुर, यह रुस्तमे हिन्द लपक कर शेर की गरदन पर सवार हो जायगा, और उसकी आँखें निकाल लेगा।"

हामिद के तर्क का और बच्चों के पास जवाब न था। औरों ये तीन-तीन चार-चार आने पैसे खर्च किये पर कोई काम की चीज नहीं ले सके। हामिद ने तीन पैसे में रंग जमा दिया। हामिद की बात का ऐसा रोब पड़ा कि जो साथी अभी तक उसे कुछ समझ ही नहीं रहे थे, वे बारी-बारी से उसे अपने खिलौने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दिखाने लगे। हामिद ने भी खुले दिल से उनके खिलौनों की तारीफ की। उसका चिमटा भी बारी-बारी से बच्चों के हाथों में से गुजरा और सबने उसे सराहा।

ग्यारह बजे सारे गाँव में हलचल मच गयी। मेले वाले घर पहुँचे। मोहसिन की छोटी बहिन ने दौड़ कर भिश्ती उसके हाथ से छीन लिया और मारे खुशी के जो उछली तो मियाँ भिश्ती नीचे आ रहे और सुरलोक सिधारे।

मियाँ नूरे ने दीवार पर दो खूँटियाँ गाड़ीं। उन पर लकड़ी का एक पटरा रखा। पटरे पर कागज का कालीन रखा गया और नूरे के वकील साहब उस पर राजा भोज की तरह विराजे। नूरे ने उन्हें पंखा झलना शुरू किया। मालूम नहीं, पंखे की हवा से या पंखे की चोट से वकील साहब लुढ़क पड़े और उनका माटी का चोला माटी में मिल गया।

रहा महमूद का सिपाही उसके लिए एक टोकरी आयी। उसमें कुछ लाल रंग के फटे-पुराने चिथड़े बिछाये गये, जिसमें सिपाही आराम से लेटे। महमूद ने टोकरी उठायी और द्वार पर चक्कर लगाने लगा। उसके दोनों छोटे भाई सिपाही की तरफ से 'जागते रहो' पुकारते हुए चले। इतने में महमूद को ठोकर लगी। टोकरी नीचे गिरी, और उसके साथ मियाँ सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ रहे। बेचारे की एक टाँग टूट गयी।

अब मियाँ हामिद का हाल सुनिये। अमीना उसकी आवाज सुनते ही दौड़ी और उसे गोद में लेकर प्यार करने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लगी। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंकी।

"यह चिमटा कहाँ था?"

"मैंने मोल लिया है।"

"कितने पैसे में।"

"तीन पैसे में।"

अमीना को क्रोध आया। दो पहर हो गये। न कुछ खाया, न पिया। तीन पैसे थे। उनका भी यह चिमटा उठा लाया।

हामिद ने अपराधी भाव से कहा, "तुम्हारी अँगुलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।"

अमीना का क्रोध काफूर हो गया। बच्चे में कितना त्याग है? दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा। पर इसे वहाँ भी अपनी बुढ़िया दादी का इतना ध्यान रहा। यह सब सोचते हुए बुढ़िया गद्गद हो गयी और रो उठी। दामन फैलाकर हामिद को दुआएं देती जाती थी और उसकी आँखों से आँसुओं की बड़ी-बड़ी बूंदें गिरती जाती थीं।

और उधर हामिद? वह अपनी दादी की प्यार भरी गोदी में दुबका जा रहा था।

अध्ययन

प्रश्न

१. हामिद की पारिवारिक स्थिति के बारे में तुम क्या जानते हो?

२. हामिद को ईदगाह भेजते समय उसकी दादी के मन में क्या विचार आये?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. ईदगाह के किन दृश्यों ने हामिद को अत्यधिक प्रभावित किया ?
४. हामिद के सामने खिलौने और मिठाइयां खरीदने में क्या कठिनाई थी ?
५. हामिद ने चिमटा खरीदने के पक्ष में क्या तर्क दिया ?
६. चिमटा खरीदने की बात जानने पर हामिद की दादी क्यों गद्-गद हो गयी ?

अभ्यास

१. इस कहानी में उन स्थलों का चयन करो जिनमें हास्य रस की झलक है।
२. नीचे लिखे अधूरे वाक्य पूरे करो—
   (क) अमीना ने हामिद को कुल तीन ही पैसे दिये क्योंकि.....।
   (ख) चिमटे का मूल्य सुनकर हामिद का दिल बैठ गया क्योंकि..........।
   (ग) चिमटा खरीदने की बात पर अमीना यह सोचकर क्रुद्ध हो उठी कि.................।
   (घ) हामिद से चिमटा खरीदने का कारण सुनकर अमीना यह सोचकर गद्गद हो गयी कि............।
३. निम्नलिखित मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो— धरना देना, छक्के छूटना, मिजाज दिखाना, मुँह छिपाना, रंग-जमाना, माटी का चोला माटी में मिलना, काफूर होना।
४. दुबले-पतले का तात्पर्य है—दुबले और पतले। इसमें 'और' शब्द को हटाकर दुबल-पतले समस्त पद बनाया गया है। संक्षेप करने की इस क्रिया को 'समास' कहते हैं तथा जहाँ 'और' शब्द का लोप होकर समस्त पद बनता है, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। इस पाठ में आये द्वन्द्व समास के पाँच अन्य उदाहरण छाँटो।

आदेश—हामिद के शब्दों में इस कहानी का वर्णन करो।

टिप्पणी

रौनक=शोभा। रोजेदार=इसलाम धर्म के अनुसार 'रोजा' (व्रत) रखने वाले। बिछायत=बिछावन। सिजदा=सिर झुकाना। सबील=प्याऊ। दामन=अंचल। दुआ=आशीष।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—११

मैं और हाकी का खेल

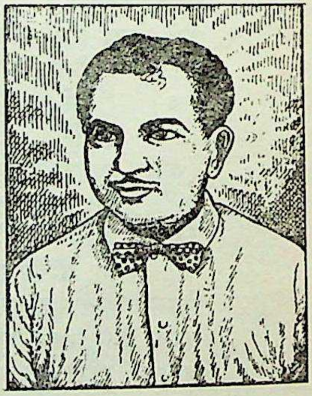

[हाकी हमारे देश का प्रसिद्ध खेल है। इस खेल की ओलम्पिक प्रतियोगिताओं में भारत प्रायः विजयी होता आया है। हाकी के खेल में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा-प्राप्त खिलाड़ी दिग्विजय सिंह "बाबू" ने हेलसिंकी में हुए हाकी मैच का संस्मरणात्मक परिचय दिया है।]

बहुत से लोगों का ऐसा विचार है कि खेल-कूद में समय नष्ट होता है और स्वास्थ्य के लिए व्यायाम कर लिया जाय, यही काफी है। पर यह ठीक नहीं। खेल-कूद से स्वास्थ्य तो बनता ही है साथ-साथ मनुष्य कुछ ऐसे गुण भी सीखता है जिनका जीवन में विशेष महत्त्व होता है और जो व्यायाम से नहीं प्राप्त हो सकते; यथा घमंड न करना, हारने में साहस न छोड़ना, दूसरे से चोट लग जाय तो उसे सहर्ष सहन कर लेना, विशेष ध्येय के लिए नियमपूर्वक कार्य करना आदि। लोग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सफलता न पाने पर साहस छोड़ बैठते हैं और दोबारा प्रयास नहीं करते। परन्तु खिलाड़ी ऐसा नहीं करता। हार के बाद भी वह प्रयास करता रहता है कि हारी हुई वाजी जीत ले। इन बातों से प्रतीत होता है कि खेल के मैदान में केवल स्वास्थ्य ही नहीं बनता, वरन मनुष्य बनता है। खिलाड़ी वे बातें सीखता है जो जीवन की हर समस्या को सुलझाने में सहायता देती हैं, चाहे वे नगर की समस्याएं हों चाहे देश और चाहे अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की।

दृढ़ संकल्प द्वारा अपने देश की सेवा का मेरा स्वप्न उस दिन पूरा हुआ जिस दिन मैं हेलसिंकी (फिनलैंड) के मैदान में अपनी हाकी-टीम को अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक में जिता सका। उस दिन के 'जनगणमन' का मधुर वादन आज १५ साल के पश्चात भी मेरे कानों में गूंज रहा है।

यों तो खेल मेरे सारे कुटुम्ब को प्रिय है, परन्तु यह कहना भी आवश्यक है कि मरे पिता स्वर्गीय राय बहादुर रघुनाथ सिंह खेल में विशेष रुचि रखते थे और टेनिस उनको सबसे प्रिय था। मेरे सभी भाई, स्वर्गीय रमेश मोहन, राजा और सुरेश देश और प्रान्त क अच्छे खिलाड़ियों में रहे हैं और उन्होंने विश्वविद्यालय की टीमों का नेतृत्व किया है। मेरे पास बहुत सी तस्वीरों के साथ एक तस्वीर अपनी ढाई साल की उम्र की है जिसमें मैं हाकी और बाल लिये बठा हूँ।

मेरे खेल का प्रारम्भ बाराबंकी में हुआ। मेरे बड़ों का कहना है कि काफी पैसा मेरे घर के मोटरखाने का फाटक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
बनवाने में खर्च हुआ, क्योंकि वह हर महीने हाकी की गेंद से टूटता था। कुछ ऐसी ही कहानी लखनऊ के कान्यकुब्ज कालेज में छात्रावास की दीवारें भी कहती हैं। मुझे आज तक यह ठीक से याद है कि जब मैं बाराबंकी से लखनऊ पढ़ने आया तो मेरे सामान में सबसे अधिक हाकी स्टिक की महत्ता थी। अपने कालेज की टीम में खेलने का मुझे उसी साल सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय के अध्यापकों में एक अच्छी बात यह थी कि वे विद्यार्थियों के साथ रोजाना खेलते थे। प्रतिदिन मिठाई की ऐसी बाजियां लगती थीं कि हर दिन का खेल एक अच्छे मैच के बराबर होता था।

मेरे सभी बड़े भाई लखनऊ के प्रसिद्ध एल० वाई० ए० क्लब में खेला करते थे। क्लब को उस समय—'राइट इन' की आवश्यकता थी। क्लब के कार्यकर्त्ताओं ने हमारे शिक्षक जमा साहब को बताया कि कुँवर भाइयों में से एक और भाई बाराबंकी से आ गया है। क्लब के कार्यकर्त्ताओं के अनुरोध पर जमा साहब ने गोरों की एक टीम के विरुद्ध क्लब की ओर से मुझे खेलने का अवसर दिया। मैं कैसा खेला, यह तो मुझे नहीं बताया गया, परन्तु इसके बाद मुझे खेलने का बराबर अवसर दिया जाने लगा।

सन् १९३८ में मैं देहली के एक टूर्नामेंट में खेलने गया जिसमें हमारे विरुद्ध भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध खिलाड़ी मो० हुसैन फुल बैक खेल रहे थे। उस दिन के खेल पर मुझे एक सुन्दर उपहार मिला। मेरा साहस और प्रयास बढ़ता गया। सदैव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इच्छा होती रही कि किस प्रकार खेलूं कि जिससे इस खेल के सबसे ऊँचे स्तर पर पहुँच जाऊँ। सन् १९३९-४० में मुझको अपने प्रदेश की ओर से खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

सन् १९४६-४७ में मुझको पहली बार भारतवर्ष की टीम की ओर से खेलने का अवसर मिला। उस समय पाकिस्तान और भारतवर्ष का विभाजन नहीं हुआ था। सन् १९४७ में सुप्रसिद्ध खिलाड़ी ध्यानचन्द के नेतृत्व में मैं ईस्ट अफ्रीका गया और वहाँ स्थान-स्थान पर कई मैच खेले और उनसे खेल के विषय में बहुत कुछ सीखा। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात १९४८ में मुझे लन्दन में वर्ल्ड-ओलम्पिक में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस खेल में पहली बार ऐसा हुआ कि भारतवर्ष और इंग्लैंड दोनों ने साथ-साथ अन्तर्राष्ट्रीय हाकी के मैदान में भाग लिया। आज जब मैं यह लिख रहा हूँ तो मुझे ठीक से याद है कि लाखों की भीड़ में भारतवर्ष के थोड़े से आदमियों ने किस तरह से चीख-चीखकर अपने देश का साहस बढ़ाया था। उनकी छोटी-सी आवाज सहस्रों अंग्रेजों के आगे फीकी पड़ रही थी। खेल के शुरू होने के थोड़ी देर बाद जब भारतवर्ष के खिलाड़ी अच्छा खेलने लगे और उन्होंने इंग्लैंड के ऊपर दो गोल कर दिये तो अंग्रेज जनता भी भारतीय टीम की हर चाल की सराहना करने लगी। खेल समाप्त होने पर हम लोगों को वहाँ से निकलने में दो घंटे से ऊपर समय लगा। इतनी देर में वे लोग भारतीय टीम की प्रशंसा करते रहे और किसी ने हस्ताक्षर माँगे, किसी ने खाने पर और किसी ने चाय पर आमन्त्रित किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १९५२ में मेरी मनोकामना पूर्ण हुई। मेरे प्रयास तथा लगन का पुरस्कार मिला और मुझे भारतवर्ष की टीम का नेतृत्व करने का सुयोग मिला। इस बार ओलम्पिक के खेल फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी में हुए। मैं एक अजीब परिस्थिति में था। जहाँ एक ओर मेरी मनोकामना पूरी हुई वहाँ दूसरी ओर इतनी बड़ी जिम्मेदारी से मेरा जी घबड़ाने लगा। परन्तु अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लेकर मैं लक्ष्य की ओर बढ़ा। कुछ दैनिक पत्रों ने यह घोषणा की कि शायद इस बार भारत विजेता न हो। पर इन बातों से हम लोगों का साहस न छूटा। लगन अवश्य बढ़ गयी।

हेलसिंकी में बड़ी ठंडक पड़ती है। इसलिए २० दिन पहले हम लोगों की टीम डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगन पहुँच गयी। इसके पश्चात हम लोग हेलसिंकी पहुँचे। इस देश में एक अजीब बात है। गरमी में वहाँ २० घंटे दिन रहता है और ४ घंटे थोड़-सा अँधेरा और रात। इसके ठीक विपरीत वहाँ जाड़े में लम्बी रातें और छोटे दिन होते हैं। हम लोगों को परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढालने में कुछ समय लगा।

अन्त में वह दिन आया जब खेल के मैदान में हमारी टीम को अपने देश का गौरव बढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। हेलसिंकी के ओलम्पिक में १२ देशों से हाकी की टीमें आयीं थीं। पिछली सफलताओं के आधार पर इनमें चार टीमों को वरीयता दी गयी। उनमें भी भारत को प्रथम स्थान दिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
गया। पाकिस्तान को दूसरा, नीदरलैंड को तीसरा और ग्रेट ब्रिटेन को चौथा स्थान मिला।

सेमी फाइनल में भारत का सामना ब्रिटेन से हुआ। ब्रिटेन के एक गोल के विरुद्ध भारत ने ३ गोल किये और वह विजयी घोषित हुआ। मुझे आज तक याद है कि सेमी फाइनल के बाद जो दो दिन का अवकाश मुझे मिला वह किस तरह कटा। परन्तु साहस और धैर्य ने साथ नहीं छोड़ा।

फाइनल मैच में हमारी टीम का मुकाबला नीदरलैंड की टीम से हुआ। यद्यपि पहले से ही किसी के मन में सन्देह नहीं रह गया था कि विजय-श्री भारत को मिलेगी किन्तु नीदरलैंड की टीम ने प्रशंसनीय कौशल का प्रदर्शन किया। खेल आरम्भ होने के पन्द्रह मिनट तक दोनों टीमें बराबर रहीं। इसके बाद हमारी टीम ने गोल करना शुरू किया और हर पन्द्रह मिनट के व्यवधान पर उसने चार गोल किये। हाफ टाइम के बाद नीदरलैंड की टीम ने और भी चौकस खेल दिखाया और उसने एक गोल भी किया। लेकिन इसके विरुद्ध हमारी टीम ने दो गोल किये। इस तरह हमने नीदरलैंड के एक गोल के विरुद्ध उसे छः गोल से हराया।

प्रेक्षकों का कहना था कि हमारी विजय का सबसे बड़ा कारण गेंद पर हमारा नियन्त्रण था। हमारे खिलाड़ी गेंद को वश में करके उसे केवल 'डिबुल' करने या 'पास' देने में ही दक्ष नहीं थे, बल्कि दूसरों से प्राप्त गेंद को भी वे बड़ी शीघ्रता और कुशलता से अपने नियन्त्रण में कर लेते थे। उनमें यह भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कौशल था कि वे बहुत संकुचित स्थान में गेंद के साथ पैंतरे-बाज़ी दिखा सकते थे। तीसरे, हमारी टीम का हर खिलाड़ी अपने स्थान के महत्त्व को समझता था और उसे प्रतिरक्षा और आक्रमण के मौके की पूरी पहचान थी।

'जनगणमन' हमेशा प्रिय होता है, पर उस दिन की बात और ही थी। आखिरकार वह दिन आया जबकि मैं 'विक्ट्री स्टैंड' पर खड़ा हुआ। मैंने अपने भाग्य को सराहा कि हाकी में विश्वविजयी होने के भारत के गौरव की मैं रक्षा कर सका। उस दिन मुझे यह विश्वास हो गया कि यदि मनुष्य अपना धैर्य और साहस न छोड़े और निरन्तर प्रयास करता रहे तो वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। स्वदेश लौटने पर मुझे पद्मश्री की उपाधि मिली जिसे मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि मानता हूँ।

अध्ययन

प्रश्न

१. हमारे लिए खेल क्यों आवश्यक हैं?
२. लेखक को जब हाकी के नेतृत्व का अवसर मिला तो वह असमंजस में क्यों पड़ गया?
३. ओलम्पिक खेल में भारत की विजय के क्या कारण थे?
४. आदमी अपने लक्ष्य को किस प्रकार प्राप्त कर सकता है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताओ और अपने बनाये हुए वाक्यों में उनका प्रयोग करो—
अनुरोध, मनोकामना, प्रेक्षक।

२. निम्नलिखित की व्याख्या करो—
ओलम्पिक, फुलबैक, विक्ट्री स्टैंड, पद्मश्री।

३. छठे और सातवें अनुच्छेद में आये हुए निम्नलिखित विशेषण शब्दों के प्रकार बताओ—सुप्रसिद्ध, उस, पहली, कई, सहस्रों, भारतीय, फीकी, इतनी।

आदेश—अपने देखे हुए किसी हाकी मैच का वर्णन करो।

टिप्पणी

संकल्प = निश्चय। अनुरोध = आग्रह। उपहार = भेंट। सुयोग = अच्छा अवसर। वरीयता = प्राथमिकता।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--१२

कबीर के दोहे

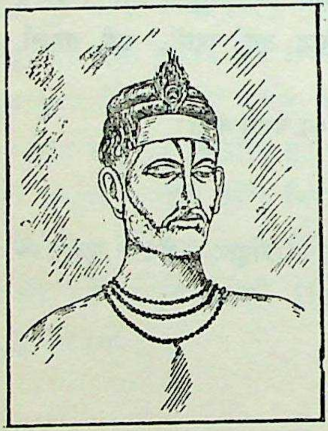

[हिन्दी साहित्य के सन्त कवियों में कबीरदास का प्रमुख स्थान है। वे भक्त और कवि होने के साथ-साथ समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपनी कविता में समाज की प्रचलित कुरीतियों और अन्ध विश्वासों पर गहरी चोट की है। प्रस्तुत दोहों में उन्होंने नीति की बड़ी अच्छी बातें बतायी हैं।]

साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय ॥१॥
दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, दुख काह को होय ॥२॥
माला फेरत जुग भया, फिरा न मनका फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मन का फेर ॥३॥
साइं इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ॥४॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिन ढूंढा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठि।
मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठि ॥५॥

सूरा सोइ सराहिए, लड़ै धनी के हेत।
पुरजा पुरजा होइ रहै, तऊ न छांड़े खेत ॥६॥

सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर होय।
जैसे बाती दीप की, कटि उजियारा होय ॥७॥

पपिहा का मन देखकर, धीरज रहै न रंच।
मरते दम जल में पड़ा, तऊ न बोरी चंच ॥८॥

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागों पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय ॥९॥

सब धरती कागद करूँ, लेखनि सब बनराय।
सात समुद की मसि करूँ, गुरु-गुन लिखा न जाय ॥१०॥

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ गढ़ काढ़े खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ॥११॥
सोना सज्जन साधु जन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुम्भ कुम्हार के, एकै धका दरार ॥१२॥
ऐसा यह संसार है, जैसा सेमर फूल।
दिन दस के व्योहार में, झूठे रंग न भूल ॥१३॥
कुटिल बचन सब से बुरा, जारि करै तन छार।
साधु बचन जल रूप है, बरसै अमृत धार ॥१४॥
आव गयी आदर गया, नैनन गया सनेह।
ये तीनों तब ही गये, जबहि कहा कछु देह ॥१५॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोष परीया देखि करि, चले हसन्त हसन्त।
अपने याद न आवई, जाको आदि न अन्त ॥१६॥
कविरा नवै सो आपको, पर को नवै न कोय।
घालि तराजू तौलिए, नवै सो भारी होय ॥१७॥
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजों आपना, मुझ सा बुरा न होय ॥१८॥

अध्ययन

प्रश्न

१. कबीर ने साधु की क्या विशेषता बतायी है?
२. कबीर की दृष्टि में भगवान के भजन की क्या विधि होनी चाहिए?
३. कबीर के विचार से सूरमा (वीर) में क्या गुण होने चाहिए?
४. कवि ने पपीहा के किस प्रण की ओर संकेत किया है?
५. कबीर ने गुरु को महान क्यों बताया है?
६. कबीरदास ने माँगने को बुरा क्यों कहा है?

अभ्यास

१. नीचे लिख दोहों के भाव स्पष्ट करो—
   (अ) माला फेरत जुग भया—
   (ब) सिर राख सिर जात है—
   (स) गुरु कुम्हार—
   (द) कुटिल वचन सबसे बुरा—
२. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो—
   कुम्हार, सिख, साईं, खेत, धरनी, गुन।
३. तीसरे दोहे में 'मनका' शब्द बार-बार आया है। एक का अर्थ है, 'माला की गुरिया' और दूसरे का अर्थ है 'मनका'। इस प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब कोई शब्द बार-बार आये और उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों तो यमक अलंकार होता है। नीचे लिखी पंक्तियों में उन शब्दों को रेखांकित करो जिनमें यमक अलंकार है—

(क) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग, वा पाये बौराय।।

(ख) रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरैं मोती मानुष चून।।

आदेश—इन दोहों को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

सार=तत्त्व, मुख्य अंश। फेर=चक्कर, विकार। बपुरा=बेचारा। मसि=स्याही। खोट=दोष। आव=प्रतिष्ठा। नवै=नम्रता का व्यवहार करता है। आपको=अपने हित के लिए। भारी=गौरवपूर्ण।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१३

ईसा मसीह

[ईसा मसीह ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक थे। प्रस्तुत पाठ में उनके जीवन-वृत्त तथा उपदेशों पर प्रकाश डाला गया है।]

तुम अपने शत्रुओं से प्रेम करो। तुम उनकी भलाई करो जो तुमसे घृणा करते हैं। उनको आशीर्वाद दो जो तुम्हें शाप देते हैं। उनके मंगल के लिए प्रार्थना करो जो तुमसे द्वेष करते हैं। यदि तुम्हारे एक गाल पर कोई तमाचा मारे तो तुम अपना दूसरा गाल भी उसकी ओर कर दो। जो तुम्हारा चोगा छीन ले उसे अपना कोट ले जाने से भी मत रोको। ये उपदेश हैं ईसाई धर्म के प्रवर्त्तक ईसा मसीह के जिनकी पुण्य स्मृति में ईसवी सन् चल रहा है।

संसार के इस महापुरुष की जन्म-कथा कितनी विचित्र है। योरुसलम के पास बतलहम नाम के छोटे से ग्राम में उनका जन्म हुआ था। उनके माता-पिता मरियम और यूसुफ नाजरत में रहते थे जो आजकल पश्चिमी जार्डन में है। उन दिनों यह प्रथा थी कि जन-गणना के समय गाँव-गाँव से स्त्री-पुरुष तथा बच्चे अपने पूर्वजों के गाँव या नगर में एकत्र हो जाया करते थे। इसी उद्देश्य से वे अपने कुटुम्बों के रजिस्टर में नाम लिखाने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने पूर्वजों की जन्मभूमि बेतलहम पहुँचे। उस समय नगर में बड़ी भीड़ थी, उन्हें वहाँ ठहरने के लिए कोई स्थान न मिला। अन्त में हताश होकर वे नगर के बाहर एक गुफा सदृश कोठरी में ठहरे जहाँ कभी-कभी चरवाहे अपनी भेड़ों के साथ रात बिताते थे। रात के समय वहीं उनके एक पुत्र हुआ। नवजात पुत्र को एक साधारण कपड़े में लपेट कर चरही में लिटा दिया गया। इस बालक का नाम जीसस क्राइस्ट रखा गया।

यहूदियों के इस देश में उस समय रोमन राजा हेरोद राज्य करता था। वह दुष्ट था अतः प्रजा उससे बहुत पीड़ित थी। एक दिन उसने तीन ज्ञानी पुरुषों से सुना कि बेतलहम में यहूदियों के भावी राजा ने जन्म ले लिया है, और वे ज्ञानी-पुरुष उसी की पूजा करने आये हैं। वह बहुत घबराया, क्योंकि उसे भय लगा कि मैं अब राजा न रह पाऊँगा। उसने बालक जीसस की खोज की जिससे कि वह उसे मार डाले। लेकिन बालक का कुछ पता न चला। स्वर्गदूत ने पहले ही उनके पिता को स्वप्न में सावधान कर दिया था कि तुम बालक को लेकर बेतलहम छोड़कर बाहर चले जाओ और वे मिस्र चले गये थे। अतः राजा हेरोद ने क्रुद्ध होकर अपने सैनिक बेतलहम भेजे और उन्हें आदेश दिया कि दो वर्ष के नीचे तक के सब बालकों की हत्या कर दी जाय। उसने सोचा था कि इस प्रकार उसके शत्रु का नाश अवश्य हो जायगा।

जब हेरोद मर गया तो जीसस और उनके माता-पिता फिर अपने देश लौट आये और नाजरत में बेखटके रहने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक बार यूसुफ और मरियम जीसस को लेकर धार्मिक उत्सव में सम्मिलित होने के लिए योरुसलम गये, जो यहूदियों का तीर्थ स्थान है। योरुसलम के पवित्र मन्दिर को देखकर जीसस बहुत प्रभावित हुए और जब उनके माँ-बाप यात्रा के बाद लौटने लग तो वे वहीं ठहर गये। कुछ दूर जाने पर जब माता-पिता ने देखा कि जीसस उनके साथ नहीं है, तो वे उन्हें खोजने के लिए लौटे। जीसस उन्हें मन्दिर में मिले जहाँ वे शान्त भाव से धर्म-गुरुओं के चरणों में बैठे हुए धार्मिक चर्चा कर रहे थे। वे प्रश्न कर रहे थे और स्वयं ही उन प्रश्नों का उत्तर भी दे रहे थे। आचार्य उनकी अन्तर्दृष्टि की प्रशंसा कर रहे थे। जीसस की प्रतिभा देखकर यूसुफ और मरियम चकित रह गये और बालक को लेकर लौट आये।

लगभग तीस वर्ष तक जीसस अपने पिता के साथ बढ़ई का धन्धा करके जीवन-यापन करते रहे। इकतीस वर्ष की अवस्था में जीसस को ईश्वरीय प्रेरणा मिली। उन्होंने अपनी जन्म-भूमि छोड़ दी और सन्त जान से वपतिस्मा लेकर वे तप करने के लिए एकान्त स्थान में चले गये। चालीस दिन तक वे प्रार्थना और उपवास करते रहे। जीसस को तपस्या में लीन देखकर शैतान ने उन्हें तरह-तरह के लोभ और भय दिखाये परन्तु वे विचलित न हुए।

तपस्या पूरी कर जीसस ने उपदेश देना प्रारम्भ किया। शीघ्र ही उनके कुछ शिष्य हो गये। अपने शिष्यों के साथ वे गांव-गांव घूमते और लोगों को उपदेश देते। इसके बाद जो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

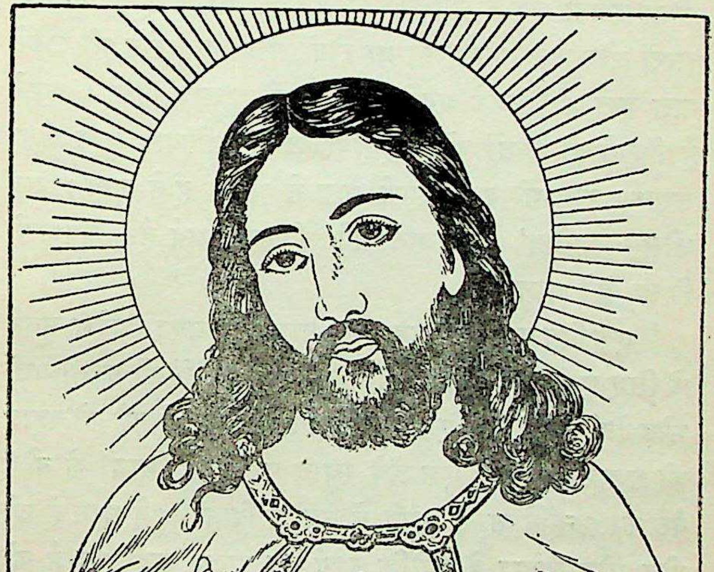

प्रभु ईसा मसीह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय बचता उसे वे रोगियों की सेवा में लगाते। उनका यश चारों ओर फैल गया। असाध्य रोगों से पीड़ित लोग भी उनके पास जाते और उनके आशीर्वाद से आरोग्य लाभ करते। कहते हैं कितने ही अन्धों को उन्होंने दृष्टि-दान किया। कुष्ठ जैसा असाध्य रोग भी उनके स्पर्श मात्र से अच्छा होने लगा। अब जीसस 'मसीहा' कहे जाने लगे जिसका अर्थ है—मुर्दों को जिला देने वाला।

एक दिन एक बहुत बड़ा जन-समुदाय उनका उपदेश सुनने के लिए एकत्र हो गया। जब उन्होंने श्रोताओं की इतनी बड़ी भीड़ देखी तो वे उन्हें एक बड़े मैदान की ओर ले गये जो पहाड़ की तलहटी में था। एक ऊँचे स्थान पर अपने शिष्यों के बीच बैठ कर उन्होंने शान्त वाणी में उपदेश दिया—"वे धन्य हैं जो दीन और विनम्र हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है जो हृदय के शुद्ध हैं, क्योंकि वे ईश्वर के दर्शन करेंगे, और वे भी धन्य हैं जो पापों के लिए पश्चाताप करते हैं क्योंकि उन्हें सान्त्वना प्राप्त होगी। वे धन्य हैं जो मेल-मिलाप कराने वाले हैं क्योंकि वे ही ईश्वर के सच्चे पुत्र हैं। धन्य हैं वे भी जो न्याय के लिए कष्ट उठाते हैं क्योंकि स्वर्ग उन्हीं का है।" प्रभु ईसा के ये उपदेश 'सरमन आन द माउंट' अर्थात पहाड़ पर के उपदेश के नाम से विख्यात हैं।

ईसा मसीह के उपदेश यहूदियों के धर्म-गुरुओं को अच्छे नहीं लगे क्योंकि वे अपने को ईश्वर का पुत्र कहते थे तथा यहूदियों की पूजा-पद्धति और बलिदान का विरोध करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे अपने को यहूदियों का राजा भी कहते थे। अतः यहूदी उनके शत्रु बन गये और उन्हें पकड़कर राज-दंड दिलाने की चेष्टा करने लगे। जीसस बहुत दिन तक बचते रहे परन्तु एक दिन अपने एक शिष्य के विश्वासघात के कारण पकड़ लिये गये। जीसस को इसका आभास भी हो गया था क्योंकि उन्होंने अपने शिष्यों के साथ अन्तिम भोजन के दिन कहा था कि मेरा एक शिष्य ही मेरे साथ विश्वासघात करेगा, और मुझे शत्रुओं को पहचनवा देगा। और हुआ भी यही। जब वे शिष्यों क साथ बैठे थे, शत्रु उन्हें पकड़ने के लिए आ गये। उनके विश्वास-घाती शिष्य ने उनका चुम्बन किया, जो पूर्व निर्धारित संकेत था। जीसस पकड़ लिये गये। उन्हें न्यायालय में उपस्थित किया गया। यहूदियों ने रोमन राजा पाइलट से प्रार्थना की कि जीसस को प्राणदंड दिया जाय क्योंकि उन्होंने अपने को ईश्वर का पुत्र कहा है और यहूदियों का राजा घोषित किया है जो राज-द्रोह है। ईसा को अपराधी ठहराया गया और उनके लिए प्राणदंड का आदेश हुआ।

यहूदियों ने ईसा को फटे-पुराने कपड़े पहना कर नगर में घुमाया। उनके कोड़े लगाये गये। उन्हें काँटों का मुकुट पहनाया गया और फिर उन्हें दो साधारण लुटेरों के साथ वेलवरी नामक स्थान पर क्रूस पर लटका दिया गया। उनके विरोधी उनका उपहास कर रहे थे, किन्तु ईसा ने उनके अपराधों क लिए क्षमा माँगते हुए कहा—"हे पिता! इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं।" यह कहते-कहते उनका

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिर लटक गया और उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये। कहते हैं प्रकृति भी इस अत्याचार को सहन न कर सकी। चारों ओर अँधेरा छा गया। धरती हिल उठी और वेलवरी की चट्टानें फट गयीं, मानो ईश्वर के पुत्र के साथ किये गये दुर्व्यवहार से क्षुब्ध होकर प्रकृति ने भी अपना दुःख प्रकट किया। जनश्रुति है कि मृत्यु के तीन दिन बाद ईसा फिर जीवित हो गये तथा चालीस दिन तक उन्होंने पुनः अपने शिष्यों को दर्शन और उपदेश दिये।

अपने अनुपम बलिदान द्वारा ईसा अमर हो गये।

अध्ययन

प्रश्न

१. ईसा मसीह का जन्म किन परिस्थितियों में हुआ था?

२. ईसा मसीह के जन्म के समय उन्हें मार डालने के प्रयत्न क्यों किये गये?

३. ईसा मसीह के धर्म-प्रचार से पहले यूरोप की धार्मिक स्थिति कैसी थी?

४. ईसाई धर्म की मुख्य शिक्षाएं क्या हैं?

५. ईसा मसीह की मृत्यु के विषय में तुम क्या जानते हो?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों के सन्धि-विच्छेद करो और बताओ कि उनमें परस्पर किन स्वरों का योग हुआ है जैसा कि एक उदाहरण में दिखाया गया है—

अज्ञानान्धकार=अज्ञान+अन्धकार (अ+अ=आ)

लोकोक्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युगावतार
परोपकार
समानान्तर

२. निम्नलिखित वाक्यों की क्रियाओं के लिंग और वचन पर ध्यान दो—

(क) उसने पानी पिया।
(ख) मैंने रोटियां खायीं।

पहली क्रिया एक वचन और पुल्लिग में तथा दूसरी क्रिया बहु-वचन और स्त्रीलिंग में है। ऐसा क्यों है?

याद रखो—जब कर्त्ता में 'न' विभक्ति लगी हो तो क्रिया के लिंग और वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

३. धार्मिक शब्द 'धर्म' में 'इक' जोड़कर बनाया गया है। धर्म संज्ञा है और धार्मिक विशेषण।

निम्नलिखित शब्दों में 'इक' प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाओ और देखो कि प्रथम अक्षर की मात्रा में क्या परिवर्तन करना पड़ता है।

पक्ष, वर्ष, सप्ताह, अंश।

टिप्पणी

योरुसलम=फिलिस्तीन का एक नगर तथा ईसाइयों का तीर्थ स्थान। अन्तर्दृष्टि=प्रतिभा। जीवन यापन=जीवन निर्वाह। बपस्तिमा=ईसाई धर्म की दीक्षा के समय किया जाने वाला संस्कार। विचलित होना=डिगना। असाध्य=अति कठिन, अच्छा न होने वाला। सान्त्वना=ढाढ़स। विश्वासघात=विश्वास के विपरीत कार्य करना।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१४

रोमांचकारी कुश्ती

[इस पाठ के लेखक श्रीराम शर्मा, शिकार साहित्य के प्रसिद्ध लेखक थे। 'शिकार', 'प्राणों का सौदा' और 'बोलती प्रतिभा' उनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने सिंह और सूअर की रोमांचकारी कुश्ती का सजीव वर्णन किया है।]

एक दिन जेम्स साहब अपनी नील की कोठी का निरीक्षण कर रहे थे। इतने में उनको खबर लगी कि कोठी से कुछ दूर एक शेर ने गाय मारी है। शीघ्रता से उस ओर जाकर देखा तो तुरन्त की मारी हुई गाय की एक लाश मिली। थोड़ी ही दूर पर शेर के पग-चिह्न भी मिले। फिर क्या था! शिकार के लिए बैठने का स्थान बनने लगा। एक गड्ढा खोदा गया। चारों ओर से उसे काँटों और लक्कड़ों से सुरक्षित कर जेम्स साहब एक साथी को लेकर उस गड्ढे में घुस गये।

दस बजे रात का समय होगा। अर्धचन्द्र बादलों के क्षीण टुकड़ों से टक्कर लेता हुआ छिप-छिप कर अपने मार्ग पर जा रहा था—दूर, काफी दूर पर रात की नीरवता में गंगा की धार अनवरत रूप से जम्हाई-सी लेती सुनायी पड़ती थी। ठंडी हवा का झोंका जैसे ही लम्बी घास में अठखेलियां करता निकलता,

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh
वैसे ही जान पड़ता मानो रात्रि देवी के हृदय से एक ठंडी कँप-कँपाती सी आह निकल रही है। सहसा नदी के किनारे से चकव की पुकार निस्तब्धता को भंग करती पर शीघ्र ही फिर नीरवता का राज्य फैल जाता।

गड्ढे में बैठे दोनों आदमी सजगता की प्रतिमा बने प्रकृति की छटा देख रहे थे। कुछ प्रतीक्षा के उपरान्त जेम्स साहब के साथी ने उनका हाथ दबाया और कान में धीरे से कुछ कहा। जेम्स साहब केवल इतना सुन पाये कि दायीं ओर को देखो। जेम्स साहब ने जो आँख उठायी तो शरीर में बिजली सी दौड़ गयी। धुँधले क्षितिज पर रात्रि की लम्बी और भूरी छाया म एक भीमकाय आकृति दिखायी पड़ी। वह ठीक गड्ढे की ओर आ रही थी। कुछ और निकट आने पर ज्ञात हुआ कि वह एक सूअर था।

जेम्स साहब ने बन्दूक उठाकर जैसे ही निशाना साधा, वैसे ही सूअर ने अपना सिर ऊपर उठाया और उसका आकार स्पष्ट दिखायी पड़ने लगा। अपार शक्ति और शान का वह प्रतिबिम्ब अकड़कर खड़ा हो गया। उसी समय अकस्मात जंगल से गुर्राहट और गर्जना सुनायी पड़ी। वनराज अपन शिकार-पथ पर था। साथी ने गोरे की बाँह जोर से दबायी और कान से मुँह लगाकर कहा—'शेर'।

दोनों आदमियों के स्नायु खिच गये। उत्सुकता से दिल की धड़कन बढ़ गयी। शूकरराज चौकन्ना, पर लापरवाही से खड़ा था। उसके ढंग से प्रतीत होता था कि उसका रोम-रोम कह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहा है—इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं। सिर झुकाकर और क्रोधपूर्ण झटके से उसने भयंकर शब्द किया—'हू हुक्ख।' दूसरी ओर से आवाज आयी—'ऊँगा।' सूअर ने अपनी आवाज फिर दुहराई। शेर की चुनौती को सूअर ने स्वीकार कर लिया। शेर ने और भी भयंकर गर्जना की, मानो उसने भी चुनौती पर अन्तिम निर्णय कर लिया हो।

तुरन्त ही अखाड़े में वह बलशाली शेर कूद पड़ा। शेर क्रोध से भिन्नाया हुआ था। ओठ पीछे खींचे, मूँछें खड़ी किये, दाँतों का प्रदर्शन करते और पूँछ को अपनी बगलों से मारते हुए युद्ध और विजय की इच्छा से शेर आघात करने को आ खड़ा हुआ। यौवन की उन्मत्तता में नदी की बाढ़ के समान वह किसी को गिनने वाला न था। सैकड़ों सूअरों को उसने खा डाला होगा। सम्भवतः दो चार ने हमला किया था क्योंकि उसके शरीर पर थोड़ी बहुत खरोंच और दो चार घाव सूअर की काँप के थे भी। शेर जवानी की धार में बह रहा था। पर सूअर ने शेर की तनिक भी परवाह न की। उसने 'हू हुक्ख' की ताल ही नहीं ठोकी वरन शेर की ओर एक छोटी सी दौड़ भी लगायी और गर्दन के बाल फुलाकर पूँछ ऊपर की। यह उसके आक्रमण का संकेत था। सूअर बड़ा विकट होता है। एक बार हमले की ठानकर फिर पीठ नहीं दिखाता।

दोनों लड़ाके मैदान में जम गये। शेर घात लगाकर कभी लपकता और कभी सूअर के चारों ओर रेंगता सा चलता जिससे किसी प्रकार पीछे से उस पर हमला कर सके। सूअर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी शेर की घात का ख्याल करके पेंतरे बदलता और अपना सिर उसकी ओर ही रखता। दायें-बायें, गोलाकार चक्कर में शेर और सूअर सँभले, तने और कुछ देर तक हमले का अवसर देखते रहे। पेंतरों का चक्कर कुछ और संकीर्ण हुआ। गुर्राहट और 'हू हुक्ख' के ताल दोनों ही पहलवान ठोंक

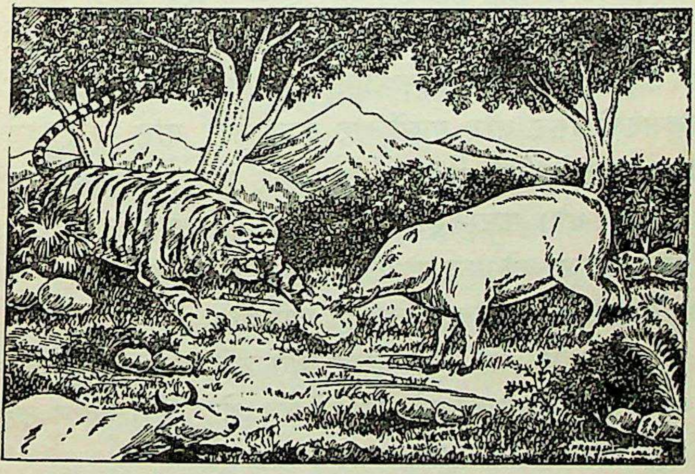

शेर और सूअर मैदान में

रहे थे। शेर एक बार लम्बा होकर जमीन से मिल सा गया। पुट्ठों और स्नायुओं को खींच कर उसने अपने फुर्तीले शरीर को एकत्र-सा किया। जंगल को दहलाने वाले गर्जन के साथ शक्ति का वह पुंज विद्युत गति से सूअर के ऊपर टूट पड़ा। एक मिनट के लिए दोनों की लड़ाई में रोमांचकारी उत्तेजना आ गयी। एक ही तेज और कौशलपूर्ण थाप से, जो सूअर के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जबड़े पर पड़ी थी, बलिष्ठ सूअर लड़खड़ाने लगा। उस थाप के साथ शेर का बोझ तीव्रगति से सूअर के ऊपर गिरा था, पर सँभल कर सूअर ने 'हू हुक्ख' की ध्वनि की जलती हुई क्रोधपूर्ण आँखों से पैंतरा बदल कर उसने अपनी अटूट गर्दन और मजबूत सिर से तीन चार तीव्र वार शेर पर किये। शेर की बगल में तीन-चार छेद हो गये और उसके शरीर से खून के झरने से झरने लगे। इस प्रकार पहली कुश्ती बराबर पर छूटी, पर मार अधिक खायी सूअर ने। शेर के प्रहार से सूअर के सिर और गालों पर खाल और मांस के चिथड़े लटक रहे थे, सिर की खाल उधड़ कर सूअर की आँखों पर आ पड़ी थी। फलस्वरूप वह अब अन्धा सा हो गया था। लेकिन सूअर की युद्ध-प्रवृत्ति और क्रोध की मात्रा घटी न थी, वरन और भी प्रज्वलित हो गयी थी।

शेर पर भी बुरी तरह बीत रही थी। छाती और बगल के छेदों से फव्वारे छूट रहे थे। शेर मानो मन में कह रहा था कि मैं किस बला में आ फँसा।

सूअर क्रोध से भिन्ना रहा था। बिगड़ कर और ललकार कर वह शेर पर टूट पड़ा, पर फुर्ती की प्रतिमा शेर ने सूअर के वार को बचा लिया और जैसे दोहरी-सी होकर बिल्ली चूहे पर टूट पड़ती है, वैसे ही शेर उछल कर सूअर की गरदन पर आ गिरा। शीघ्र ही सूअर के अगले पुट्ठों में शेर के कीले घुस गये और उसके पंजों ने सूअर को फाड़ना प्रारम्भ कर दिया। भँभोड़ने और फाड़ने से भारी भरकम सूअर की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दुर्दशा होने लगी। शेर तगड़ा ही नहीं पड़ रहा था, वरन अपने प्रतिद्वन्द्वी को ठंडा करता हुआ भी दिखायी देता था। सूअर लड़खड़ा कर आग को गिरा; मार की चोट से अथवा दांव-घात से, सो कहना कठिन है। यह हुई दूसरी कुश्ती जो बराबर रही। शेर ने सूअर की दुर्गति कर डाली।

मगर सूअर के गिरने का फल यह हुआ कि शेर सूअर के सिर पर होकर आगे गिर पड़ा। शेर के आगे गिरते ही सूअर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। अपने अगले पैर शेर की छाती पर रख कर सूअर ने तीन चार विकट हमले किये। अपनी पैनी और बड़ी काँपों से उसने शेर की छाती को फाड़ डाला। चोट करके, शेर को छोड़ कर, सूअर लड़खड़ाता और थका हुआ सा कुछ दूर जा बैठा। क्रोधित शेर एक ओर पड़ा हुआ अपना रोष प्रकट कर रहा था। यह थी तीसरी कुश्ती, जिसमें सूअर तगड़ा पड़ा, पर जोड़ रहा बराबर।

प्राण वेदना को कम करने के लिए दो आवाजें हुईं—धांय-धांय। जंगल गूँज गया। चकवा ने कौतूहल से पूछा—'के ऊँ'। दूसरे तट से चकवी ने उत्तर दिया—'के ऊँ'। जंगल प्रतिध्वनित हुआ 'अ र र घ र र र' और दोनों लड़ाके शान्त हो गये।

अध्ययन

प्रश्न

१. जेम्स साहब ने शेर को मारने की क्या योजना बनायी ?

२. शेर और सूअर की कुश्ती किस प्रकार प्रारम्भ हुई ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. शेर ने सूअर पर आक्रमण करने के लिए किन-किन दाँव-पेंचों का प्रयोग किया?

४. शेर के आक्रमण से सूअर की क्या दशा हो गयी?

५. शेर और सूअर की कुश्ती का क्या परिणाम हुआ?

अभ्यास

१. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करो—
बिजली दौड़ जाना, काम तमाम करना, घात लगाना, ठंडा होना, टूट पड़ना, पीठ दिखाना।

२. क्रोध में पूर्ण जोड़ कर 'क्रोधपूर्ण' शब्द बनता है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से विशेषण बनाओ—
शक्ति, उत्सुकता, उत्तेजना, कौशल, गौरव, भाव, कला।

आदेश—श्रीराम शर्मा की पुस्तक 'शिकार' और 'प्राणों का सौदा' पुस्तकालय से लेकर पढ़ो।

टिप्पणी

नीरवता=शान्ति। अनवरत=निरन्तर, लगातार। निस्तब्धता=पूर्ण शान्ति। प्रतिमा=मूर्ति। क्षितिज=वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिले मालूम पड़ते हैं। भीमकाय=विशाल शरीर वाला। आकृति=शक्ल। संकीर्ण=सँकरा। प्रतिद्वन्द्वी=विरोधी।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--१५

इतने ऊँचे उठो

[श्री द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी ने इस कविता में प्राचीन स्वस्थ परम्पराओं के प्रति आस्था प्रकट करते हुए जीर्ण-शीर्ण रूढ़ियों को तोड़कर नवीन और प्रगतिशील विचारों को ग्रहण करने का आह्वान किया है।]

इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है।
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से
सिंचित करो धरा, समता की भाव-वृष्टि से,

जाति - भेद की, धर्म - वेश की
काले गोरे रंग - द्वेष की
ज्वालाओं में जलते जग में
इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है ॥१॥

नये हाथ से वर्तमान का रूप सँवारो
नयी तूलिका से चित्रों के रंग उभारो

नये राग को नूतन स्वर दो
भाषा को नूतन अक्षर दो
युग की नयी मूर्ति - रचना में
इतने मौलिक बनो कि जितना स्वयं सृजन है ॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है
जीर्ण-शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है

तोड़ो बन्धन, रुके न चिन्तन
गति, जीवन का सत्य चिरन्तन
धारा के शाश्वत प्रवाह में
इतने गतिमय बनो कि जितना परिवर्तन है ॥३॥

चाह रहे हम इस धरती को स्वर्ग बनाना
अगर कहीं हो स्वर्ग, उसे धरती पर लाना

सूरज, चाँद, चाँदनी, तारे
सब हैं प्रतिपल साथ हमारे
दो कुरूप को रूप सलोना
इतने सुन्दर बनो कि जितना आकर्षण है ॥४॥

अध्ययन

प्रश्न

१. राग-द्वेष से जलते संसार को शीतल करने के लिए कवि ने क्या सन्देश दिया है ?
२. 'युग की नयी मूर्ति' रचने के लिए कवि ने क्या सुझाव दिया है ?
३. जीवन को गतिमय बनाने के लिए कवि ने क्या युक्ति बतायी है ?
४. अन्तिम छन्द में कवि ने क्या अभिलाषा व्यक्त की है ?
५. कवि ने इस कविता में किन-किन गुणों को अपनाने पर बल दिया है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो—

(क) देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से।

(ख) नये हाथ से वर्तमान का रूप सँवारो।

(ग) लो अतीत से उतना ही जितना पोषक है।

२. इस कविता में "गगन" ऊँचाई का सूचक होकर आया है। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्द जिन गुणों की सूचना देने के लिए प्रयुक्त हों, उन्हें इन शब्दों के सामने लिखो—

मलय पवन—

सृजन—

परिवर्तन—

आकर्षण—

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

सिंचित करना=सींचना। तूलिका=कूँची (ब्रश)। मौलिक=नवीन। सृजन=सृष्टि करना। अतीत=प्राचीन। द्योतक=सूचित करने वाला। चिरन्तन=सदैव रहने वाला। शाश्वत=निरन्तर रहने वाला। सलोना=सुन्दर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१६

रेडक्रास

[स्काउटिंग की भाँति रेडक्रास भी एक समाज-सेवी संस्था है जिसका अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व है। प्रस्तुत पाठ में इसके इतिहास एवं सिद्धान्तों का परिचय कराया गया है।]

नेफा के हिममंडित पर्वत-शिखरों पर हाड़ कँपाने वाली विकट शीत-लहरी है। प्रचंड वायु के झोंके उसकी तीव्रता में और भी वृद्धि कर रहे हैं। चारों ओर सन्नाटा है। एक ओर गगनचुम्बी हिममंडित पर्वत-शिखर दिखायी देते हैं तो दूसरी ओर पाताल तक पहुँचने वाले गहरे खड्ड। पर्वत-शिखरों के बीच एक समतल स्थान में भारतीय प्रतिरक्षा दल का एक शिविर लगा हुआ है। भारतीय वीर सिपाही अपना प्राण हथेली पर लिये सीमा की रक्षा करने को उद्यत हैं।

इसी शिविर में नीचे की ओर एक बड़ा सा घेरा है जिसमें कई तम्बू लगे हैं, जिनके ऊपर श्वेत पताकाएं फहर रही हैं। इन पताकाओं पर लाल रंग का + चिह्न है। तम्बुओं में इस लाल चिह्न से अंकित श्वेत वस्त्र पहने नर्स और डाक्टर आहतों की सेवा में लगे हैं। हिमशीत की कठोरता और भूख

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्यास की चिन्ता न करके ये चौबीसों घंटे सेवा में तल्लीन हैं। स्ट्रेचरों पर घायल सिपाही आ-जा रहे हैं। किसी का हाथ टूटा है तो किसी का पैर, किसी की पसली टूटी है तो किसी की खोपड़ी। इतनी लगन से इन आहतों की सेवा करने वाले नर्स और डाक्टर उस संस्था के सदस्य हैं जो रेडक्रास नाम से प्रसिद्ध है।

रेडक्रास संस्था का इतिहास मानव-सेवा का इतिहास है। इसका कार्य पीड़ितों, घायलों तथा रोगी और दुखी मनुष्यों की सेवा-शुश्रूषा करना है। यह संस्था बिना किसी भेदभाव के मनुष्य-मात्र की सेवा करने के लिए उद्यत रहती है। शान्ति काल में तो यह संस्था मानव-जाति की दशा सुधारने और उसे रोगों से मुक्त करने के प्रयत्न करती ही है, युद्धकाल में इसका दायित्व और भी बढ़ जाता है। जहाँ एक ओर युद्ध में पाशविकता का नग्न नृत्य होता है तथा पल-पल पर रक्तपात के दृश्य उपस्थित होते रहते हैं, वहाँ दूसरी ओर रेडक्रास संस्था युद्ध-पीड़ितों के कष्ट निवारण में निरन्तर प्रयत्नशील रहती है।

सबसे पहले युद्ध के घायलों की सेवा-शुश्रूषा करने के उद्देश्य से इंग्लैंड में 'सेंट जान एम्बुलेंस' नामक संस्था बनी थी। इसकी स्थापना सन् १०४७ ई० में क्रूसेड या धर्मयुद्ध में जाने वाले सैनिकों की सहायता के लिए की गयी थी। यूरोप में धर्मयुद्ध के समाप्त हो जाने पर यह संस्था अधिक क्रियाशील न रही।

नैपोलियन बोनापार्ट के समय जब यूरोप में भीषण नर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संहार होने लगा तो युद्ध के पीड़ितों की सेवा के लिए कुछ महिलाओं ने पुनः एक संगठन किया। कुछ ही दिनों बाद १८५४ ई० में क्रीमिया का युद्ध छिड़ गया। क्रीमिया के रणक्षेत्र में डाक्टरी सहायता की कोई सन्तोषजनक व्यवस्था न थी। इस अवसर पर इंग्लैंड से फ्लोरेंस नाइटिंगेल, अपने साथ चालीस स्वयं-सेविकाओं का दल लेकर क्रीमिया पहुँचीं। वहाँ सैनिक अस्पताल में उन्होंने घायलों एवं पीड़ितों की देखभाल की व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। थोड़े ही दिनों में अस्पताल की काया पलट गयी। जिस ओर फ्लोरेंस नाइटिंगेल लैम्प हाथ में लिये हुए पहुँच जाती उस ओर कराहती हुई पीड़ित मानवता को शान्ति की साँस मिल जाती। इंग्लैंड की इस महिला की संसार भर में प्रशंसा हुई और रोगियों के लिए धन, वस्त्र तथा आर्थिक सहायता प्रचुर मात्रा में प्राप्त होने लगी।

फ्लोरेंस नाइटिंगेल द्वारा घायलों एवं पीड़ितों की इस निःस्वार्थ सेवा का प्रभाव सबसे अधिक स्विटजरलैंड निवासी हेनरी ड्यूनांट नामक व्यक्ति पर पड़ा। हेनरी ने सन् १८५९ में फ्रांस और आस्ट्रेलिया के युद्ध में स्वयंसेवक के रूप में काम किया था। इसके तीन वर्ष पश्चात उन्होंने अपने अनुभवों का रोमांचकारी विवरण प्रकाशित किया। उन्होंने समस्त शिक्षित संसार से जोरदार अपील की और ऐसी संस्थाएं संगठित करने का सुझाव दिया, जो घायलों की समुचित सेवा कर सक। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप जेनेवा में सन् १८६३ ई० में एक अन्तर्राष्ट्रीय सभा बुलायी गयी। इसमें अनेक राष्ट्रों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

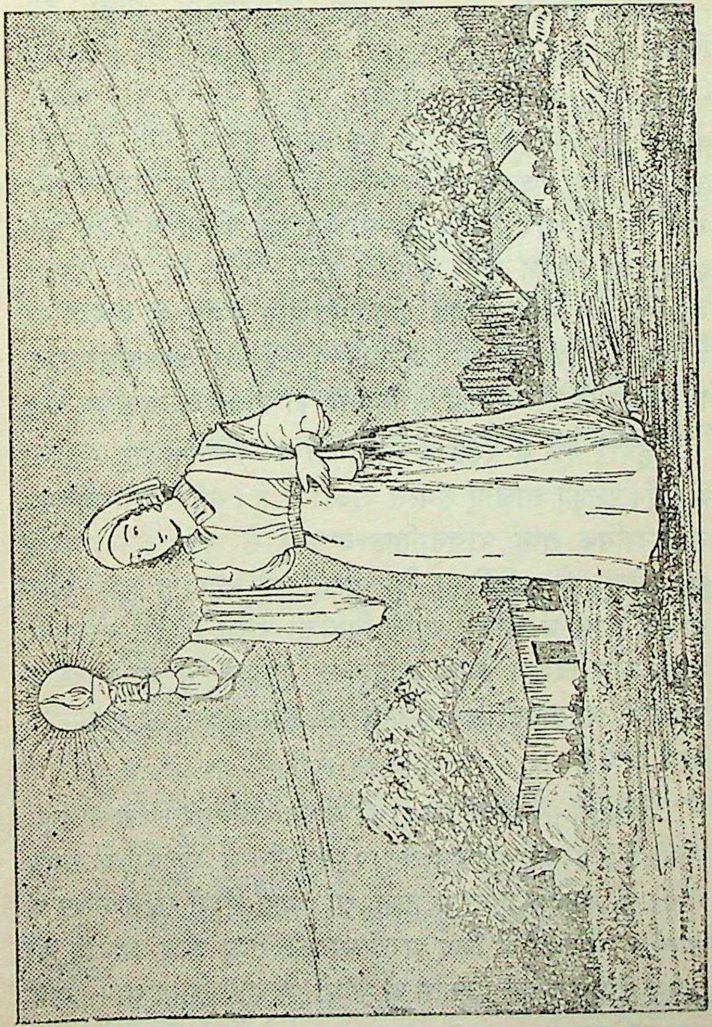

फ्लोरेंस नाइटिंगेल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १८६४ ई० में एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि हुई जिसमें अनेक देशों की सरकारों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर किये। इस सन्धि के अनुसार युद्ध के बीमार और घायल सैनिकों की सेवा करने वाली एक संस्था बनायी गयी जिसकी तटस्थता तथा जिसके कार्यकर्त्ताओं की सुरक्षा के सिद्धान्त सब राष्ट्रों ने स्वीकार किये। यह भी स्वीकार किया गया कि इस संस्था का चिह्न लाल क्रास + होगा। इसी पर इस संस्था का नाम भी रेडक्रास पड़ गया। रेडक्रास संस्था के नियमों में समय-समय पर कई बार परिवर्तन हुए हैं और आज सभी राष्ट्र इस संसार व्यापी संगठन के नियमों का पालन करते हैं।

हमारे देश में रेडक्रास सोसायटी की स्थापना सन् १९२० में हुई। इसकी शाखाएं समस्त राज्यों में हैं। यह संस्था धार्मिक, साम्प्रदायिक तथा राजनीतिक बन्धनों से मुक्त है। घायलों की सेवा के अतिरिक्त विस्थापितों की सहायता करने और दुर्भिक्ष काल में भोजन आदि वितरित करने में इस संस्था ने अपूर्व योग दिया। इसके अतिरिक्त विदेशों में भी भारतीय रेडक्रास सोसायटी ने घायलों की सेवा-शुश्रूषा में प्रशंसनीय कार्य किये हैं।

रेडक्रास संस्था की बच्चों की शाखा 'जूनियर रेडक्रास' कहलाती है। इसका आरम्भ सन् १९१४ ई० में महायुद्ध के समय कैनेडा के क्यूबेक प्रान्त में हुआ था। यहाँ सबसे पहले स्कूल के छात्रों ने सैनिकों के लिए मरहम-पट्टी तथा अन्य आराम की वस्तुएं तैयार करके रेडक्रास के कामों में भाग लिया था। इसके बाद जूनियर रेडक्रास का प्रचार अन्य देशों में भी होने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भारत में रेडक्रास का जूनियर विभाग सन् १६२५ ई० में स्थापित किया गया। सर्व प्रथम इसका प्रचार पंजाब के स्कूलों में हुआ। आजकल इसका प्रसार देश भर के स्कूलों में है। जूनियर रेडक्रास संस्था के सदस्यों को अपने और दूसरों को स्वस्थ रखने, रोगी तथा दुखी लोगों की सेवा करने तथा संसार के समस्त बालकों को अपना मित्र समझने की शपथ लेनी पड़ती है।

रेडक्रास संस्था की सहायता घायलों और पीड़ितों की सहायता है। इस संस्था के कार्यों में सहयोग देना हममें से प्रत्येक का कर्तव्य होना चाहिए। यह सहयोग हम इस संस्था के सदस्य बनकर, स्वयं-सेवक बनकर अथवा आर्थिक सहायता प्रदान कर दे सकते हैं।

अध्ययन

प्रश्न

१. 'नेफा' की प्राकृतिक दशा के विषय में लेखक ने क्या बातें बतायी हैं?
२. रेडक्रास के शिविर का दृश्य कैसा है?
३. रेडक्रास संस्था कौन-कौन से कार्य करती है?
४. रेडक्रास की नींव किस प्रकार पड़ी?
५. भारतीय रेडक्रास सोसायटी ने कौन-कौन से उल्लेखनीय कार्य किये हैं?
६. जूनियर रेडक्रास की स्थापना किस प्रकार हुई?
७. रेडक्रास के कार्यों में हम किस प्रकार सहयोग दे सकते हैं?

अभ्यास

१. 'दायित्व' और 'कठोरता' दोनों भाववाचक संज्ञाएं हैं। एक मूल शब्द दायी में 'त्व' जोड़ने से और दूसरा 'कठोर' में ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जोड़ने से बनी है। ऊपर पाठ में दोनों के प्रयोग देखो। वे किन-किन लिंगों में हैं? इससे तुम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हो? याद रखो—'त्व' से बनी हुई भाववाचक संज्ञाएं सदैव पुँल्लिग में प्रयुक्त होती हैं और 'ता' से बनी हुई सदैव स्त्रीलिंग में। नीचे दिये हुए शब्दों से दोनों प्रकार के शब्द बनाओ और उन्हें वाक्यों में इस प्रकार प्रयुक्त करो कि उनका लिंग-भेद स्पष्ट हो जाय—

गुरु, लघु, अमर, प्रभु, पशु, मनुष्य।

२. सेवा-शश्रूषा में दोनों शब्दों के एक ही अर्थ हैं। नीचे दिये हुए शब्दों के साथ उन्हीं अर्थों वाले जिन शब्दों का प्रयोग होता हो उन्हें उनके सामने लिखो—

काम, लड़ाई, धन, मान।

३. निम्नलिखित शब्दों का अपने बनाये हुए वाक्यों में प्रयोग करो—

यथोचित, मनुष्य मात्र, अन्तर्राष्ट्रीय, उद्यत, सतत।

आदेश—अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखो और उसे बताओ कि तुम्हारे विद्यालय की जूनियर रेडक्रास संस्था क्या-क्या काम करती है।

टिप्पणी

विकट=भयंकर। मंडित=सुशोभित। तल्लीन=(तत्+लीन) उसमें लगा हुआ। दायित्व=जिम्मेदारी। प्रवृत्ति=मन का झुकाव। यन्त्रणा=यातना। सतत=सदैव, लगातार। रोमांचकारी=रोंगटे खड़े कर देने वाला। अन्तर्राष्ट्रीय=(अन्तः+राष्ट्रीय) अनेक राष्ट्रों से सम्बन्धित। दुर्भिक्ष=अकाल। विस्थापित=(वि+स्थापित) उजड़े हुए। यथोचित=(यथा+उचित) जैसा उचित हो वैसा। प्रचुर=अधिक। काया पलटना=पूर्ण रूप से परिवर्तित हो जाना। सशस्त्र=शस्त्र सहित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१७

पांडव-वनवास

[युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ तक की कथा पिछली कक्षा में दी जा चुकी है। इस पाठ में महाभारत की आगे की कथा है, जिसमें पांडवों के वनवास का वर्णन है।]

(१)

राजसूय यज्ञ के पश्चात युधिष्ठिर की ख्याति चतुर्दिक फैल गयी थी। इस यज्ञ में दुर्योधन भी निमन्त्रित था। भेंट में आये हुए बहुमूल्य पदार्थों की सार-सँभाल का उत्तरदायित्व उसी पर था। सभा-भवन में चलते समय जल के स्थान पर थल और थल के स्थान पर जल का भ्रम होने से वह अपमानित हुआ ही था, राजसूय यज्ञ में मिली युधिष्ठिर की ख्याति से उसके मन में घोर ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। वह युधिष्ठिर को नीचा दिखाने की युक्तियां सोचने लगा।

एक दिन उसके मामा शकुनि न उसे एक युक्ति सुझायी। उसने कहा—"दुर्योधन! तुम पांडवों को युद्ध में नहीं जीत सकते। अर्जुन के गांडीव और भीम की गदा को चुनौती देना हँसी खेल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं। उन्हें छल से जीतना सरल है। तुम युधिष्ठिर को द्यूत-क्रीड़ा के लिए निमन्त्रित करो। तुम्हारी ओर से जुआ खेलकर मैं उनका सारा राजपाट हर लूँगा। उन्हें दर-दर का भिखारी बनाकर मैं तुम्हारा मार्ग निष्कंटक कर सकता हूँ।

दुर्योधन को यह युक्ति बहुत पसन्द आयी। दुर्योधन और शकुनि के आग्रह से धृतराष्ट्र युधिष्ठिर को द्यूत-क्रीड़ा का निमन्त्रण देने को तैयार हो गये। महात्मा विदुर को यह निमन्त्रण लेकर इन्द्रप्रस्थ जाना पड़ा। युधिष्ठिर ने द्यूत-क्रीड़ा के निमन्त्रण को धृतराष्ट्र की आज्ञा मानते हुए स्वीकार कर लिया। वे अपने भाइयों, माता कुन्ती तथा द्रौपदी सहित हस्तिनापुर के लिए चल पड़े। हस्तिनापुर में इसके लिए 'तोरण स्फाटिक' नाम का एक विशाल सभा-भवन तैयार कराया गया। द्यूत-क्रीड़ा प्रारम्भ हुई। खेल को देखने के लिए सारा हस्तिनापुर उमड़ पड़ा।

कौरवों की ओर से शकुनि खेलने बैठा। पहले दाँव पर युधिष्ठिर ने अपना सुन्दर मणिमय हार रखा और शकुनि की ओर से दुर्योधन ने बहुत सी मणियां और धन। शकुनि ने पासा फेंकते हुए कहा—"युधिष्ठिर, यह दाँव मेरा रहा।" लोगों ने साश्चर्य देखा, जीत शकुनि की थी। युधिष्ठिर दाँव पर दाँव हारते गये। युधिष्ठिर जितना ही हारते, अगली बार जीतने की आशा उन्हें पुनः जुआ खेलने को प्रेरित करती। शकुनि भी बीच-बीच में उन्हें उत्साहित करता। परिणाम यह हुआ कि युधिष्ठिर अपने सारे धन को, अपन भाइयों को तथा अन्त में द्रौपदी को भी हार गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्योधन को बदला लेने का अच्छा अवसर मिला। उसने द्रौपदी को बलपूर्वक, भरी सभा में लाकर अपमानित किया। पांडव अपमान का घूंट पीकर रह गये। जुए की अन्तिम शर्त के अनुसार पांडवों को बारह वर्ष के बनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के लिए जाना पड़ा। जुए की एक शर्त यह भी थी कि यदि अज्ञातवास में वे पहचान लिये गये तो उन्हें फिर बारह वर्ष का बनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास भोगना पड़ेगा। और यदि अज्ञात रह सके तो उन्हें अपना राज्य वापस मिल जायगा।

पांडव जब द्रौपदी सहित वन को चलने लगे तब उनकी प्रजा में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ। लोग अपने सुख-दुःख की चिन्ता न कर घर बार छोड़कर उनके पीछे-पीछे चलने लगे। युधिष्ठिर ने बहुत समझा-बुझाकर उन्हें लौटाया।

वन में पहुँचकर युधिष्ठिर को अपने तथा अतिथियों के भोजन की कठिनाई होने लगी। तब उन्होंने सूर्य की उपासना की। सूर्यदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें एक अक्षय पात्र दिया। इस पात्र की महिमा यह थी कि उसका भोजन तभी समाप्त होता जब भोजन बनाने वाला स्वयं भोजन कर लेता। युधिष्ठिर ने वह पात्र द्रौपदी को सौंप दिया। जब सब भोजन कर लेते और अतिथियों का भी समय निकल जाता तभी द्रौपदी भोजन करती। पांडव कभी एक वन में ठहरते तो कभी दूसरे वन में। मार्ग में जहाँ कोई राक्षस मिला उसका संहार भी करते और उसके अत्याचार से पीड़ित जनता को सुखी बनाते। व्यास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और विदुर जैसे महात्मा जब-तब पांडवों का समाचार लेने वन में आया करते थे।

वनवास के समय में ही अर्जुन ने इन्द्र, यम, आदि देवताओं को प्रसन्न कर अमोघ अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किये। शिवजी से उन्ह पाशुपत अस्त्र मिला। इसकी कथा यह है कि शंकरजी ने अर्जुन की भक्ति और शस्त्र की परीक्षा लेने के लिए एक बार किरात का रूप धारण किया और उनके आदेश से एक दानव ने वाराह का रूप धारण कर अर्जुन पर आक्रमण कर दिया। अर्जुन ने अपना गांडीव धनुष उठाकर उसे एक तीर से मार डाला। ठीक इसी समय किरात का बाण भी उसे आ लगा। अब वाराह को मारने का श्रेय लेने के लिए दोनों में कहा-सुनी हो गयी। धीरे-धीरे इस कहा-सुनी ने युद्ध का रूप ले लिया। युद्ध करते हुए अर्जुन ने साश्चर्य देखा—उनके बाण का किरात पर कोई आघात नहीं हो रहा है। उनका तरकस खाली हो गया और उनकी तलवार के दो टुकड़े हो गये। अस्त्र-शस्त्र समाप्त हो जाने पर उन्होंने वृक्ष और पत्थरों से हथियार का काम लिया। पर किरात खड़ा हँसता रहा। हारकर अर्जुन ने शिवजी की एक मिट्टी की मूर्ति बनायी और शंकरजी को प्रसन्न करने के लिए उसकी पूजा करने लगे। अर्जुन ने ज्यों ही फूलों की माला उस मूर्ति के गले में अर्पित की, माला किरात के गले में जा पड़ी। यह देखकर अर्जुन को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने समझ लिया कि वह किरात नहीं, किरात वेश में शंकर हैं। तब उन्होंने किरात के चरण पकड़ लिये। शंकरजी ने भी किरात का रूप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छोड़कर अर्जुन को गले से लगा लिया और उन्हें पाशुपत नामक अस्त्र दिया। इस कथा के आधार पर भारवि ने संस्कृत में एक महाकाव्य की रचना की है जिसे 'किरातार्जुनीय' कहते हैं।

पांडवों को विपन्न स्थिति में देखने को कौरव लालायित रहते। एक बार उन्होंने इसी उद्देश्य से द्वैत वन में जाने की योजना बनायी जहाँ पांडव रह रहे थे। कौरवों की प्रजा के बहुत से ग्वाले द्वैत वन में पशु चराने के लिए रहा करते थे। उनकी देखभाल का बहाना लेकर कौरवों को वहाँ जाने की आज्ञा धृतराष्ट्र से मिल गयी। कौरव अपने परिवार क लोगों तथा एक बड़ी सेना के साथ द्वैतवन को चल पड़े।

द्वैतवन में घूमते-फिरते कौरव एक दिन उस सरोवर के पास गये जहाँ पांडवों की कुटी थी। उस समय वहाँ गन्धर्वों का राजा चित्रसेन सपरिवार स्नान करने के लिए आया हुआ था। स्त्रियों के स्नान करने का समय था। अतः चित्रसेन के दरवानों ने दुर्योधन के आदमियों को सरोवर पर जाने से रोक दिया। इस बात को लेकर दोनों दलों में मारपीट होन लगी। देखते-देखते भयंकर युद्ध छिड़ गया। गन्धर्वों के सामने दुर्योधन और कर्ण आदि की एक न चली। गन्धर्वों ने उन्हें बांध लिया और अपने साथ ले जाने लगे। कौरवों क बचे खुच आदमियों न भागकर 'त्राहिमाम्-त्राहिमाम्' की पुकार करते हुए पांडवों की शरण ली। उनकी दशा देखकर भीम आदि अत्यन्त प्रसन्न हुए।

उस समय युधिष्ठिर हवन कर रहे थे। उन्होंने कौरवों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दुर्दशा सुनी तो अपने भाइयों से बोले—"यह ठीक है कि कौरव हमसे ईर्ष्या रखते हैं और वे हमारा जी दुखाने के लिए ही यहाँ आये थे। पर एक बाहरी शत्रु के सामने उनकी पराजय हमारी भी पराजय है। हम आपस में लड़ते समय भले ही पाँच और सौ अलग-अलग रहें परन्तु बाहरी शत्रु के आक्रमण के समय हम एक सौ पाँच हो जाना चाहिए।" युधिष्ठिर की बात सुनकर उनके भाइयों ने तुरन्त ही चित्रसेन की सेना पर आक्रमण कर दिया। चित्रसेन पराजित हुआ। अर्जुन का चित्रसेन से पूर्व परिचय भी था पर दोनों ने एक दूसरे को युद्ध के पश्चात ही पहचाना। जब चित्रसेन युधिष्ठिर के समक्ष लाया गया तब युधिष्ठिर ने उसे भी स्वतन्त्र कर दिया और कहा—"अब तुम अपने घर जाओ। दुर्योधन हमारा छोटा भाई है। तुम्हें उसे बाँधने का दुस्साहस नहीं करना चाहिए था।"

इस घटना के पश्चात दुर्योधन की ईर्ष्याग्नि और भी भड़क उठी। पांडवों का कृतज्ञ होने के स्थान पर वह उनसे और अधिक जलने लगा।

इन्हीं दिनों एक दिन दुर्वासा ऋषि अपने दस हजार शिष्यों सहित हस्तिनापुर आ पहुँचे। वे बड़े क्रोधी थे। स्वागत-सत्कार में रंच मात्र भी कमी हुई कि वे शाप दे दिया करते थे। दुर्योधन ने उनका बड़ा सत्कार किया। दुर्वासा ने उससे प्रसन्न होकर कहा—"मैं तुम्हारे आतिथ्य से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मुझसे क्या चाहते हो?" दुर्योधन ने उन्हें पांडवों के अनिष्ट का साधन बनाने की इच्छा से कहा—"एक बार आप अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिष्य-मंडली सहित युधिष्ठिर को भी दर्शन दें। वे आपके दर्शनार्थ लालायित हैं। हाँ, वहाँ उस समय जाइयेगा जब द्रौपदी सहित पांडव भोजन कर चुकें।" दुर्वासा ने ऐसा ही किया। वे अपने दस हजार शिष्यों सहित पांडवों की कुटिया पर उस समय जा पहुँचे जब द्रौपदी भी भोजन कर चुकी थी और पांडवों का अक्षय पात्र रिक्त हो चुका था।

दुर्वासा ऋषि ने आते ही कहा—"मैं अपनी शिष्य-मंडली के साथ स्नान करने जा रहा हूँ। लौटकर भोजन करूँगा।" अब पांडव बड़े असमंजस में पड़े। दस हजार व्यक्तियों के भोजन का प्रबन्ध कैसे होता। कोई उपाय न देखकर द्रौपदी ने श्रीकृष्ण का ध्यान किया। श्रीकृष्णजी तुरन्त प्रकट हुए। उन्होंने द्रौपदी से कहा—"पहले भोजन कराओ, फिर बात करो।" द्रौपदी ने कहा—"जिस संकट के निवारणार्थ मैंने आपका स्मरण किया है, वही संकट आप स्वयं प्रस्तुत कर रहे हैं। मुझे दस हजार शिष्यों सहित दुर्वासा का स्वागत करना है। मेरा अक्षय पात्र खाली हो चुका है। समझ नहीं पाती कि क्या करूँ?"

श्रीकृष्ण ने वह पात्र मँगवाया। द्रौपदी ने अक्षयपात्र लाकर सामने रख दिया। श्रीकृष्ण ने देखा कि उसमें शाक का एक टुकड़ा लगा रह गया। उन्होंने उसे निकाल कर खा लिया। उनका शाक के टुकड़े का खाना था कि दुर्वासा और उनकी शिष्य मंडली की क्षुधा जाती रही। उनके पेट फूलने लगे और यह लगने लगा मानो प्राण ही निकल जायेंगे। दुर्वासा ने द्रौपदी से क्षमा माँगी और अपने शिष्यों सहित चले गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२)

एक बार वन में घूमते-फिरते पांडव प्यास से बड़े व्याकुल हो गये। वे एक वृक्ष की छाया में बैठ गये। नकुल जल की खोज में निकले। कुछ ही दूर जाने पर नकुल को जलाशय दिखायी पड़ा। उसका जल अत्यन्त स्वच्छ था। वे जल के लिए जलाशय में घुसे ही थे कि एक आवाज आयी--"पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो तब जल पियो।" नकुल ने इस आवाज पर कोई ध्यान न दिया और जल पीने लगे। जल पीते ही वे अचेत होकर गिर पड़े।

नकुल के लौटने में विलम्ब होते देख युधिष्ठिर ने सहदेव को उनकी खोज करने के लिए भेजा। सहदेव भी नकुल को ढूँढ़ते हुए उसी जलाशय पर जा पहुँचे। उनको भी वही ध्वनि सुनायी पड़ी। पर वे भी उसे अनसुनी कर जल पीने लगे। जल पीते ही उनकी भी वही दशा हुई जो नकुल की हुई थी। इसी प्रकार एक दूसरे की खोज में भीम और अर्जुन भी उसी जलाशय पर गये और प्यास को न रोक सकने के कारण जल पीते ही अचेत होकर गिर पड़े। अन्त में युधिष्ठिर की बारी आयी। वे भी वहीं जा पहुँचे। चारों भाइयों को अचेत पड़ा देखकर उन्हें अत्यन्त आश्चर्य और दुःख हुआ। भाइयों के शरीर पर घाव के कोई चिह्न न थे। युधिष्ठिर नेसोचा सम्भव है ये प्यास क कारण अचेत होकर गिर पड़े हों। स्वयं जल पीकर इन्हें भी पिलाऊँ। यह सोचकर उन्होंने ज्यों ही जल में हाथ लगाया, उन्हें भी वही ध्वनि सुनायी पड़ी। युधिष्ठिर ने ध्यान से देखा तो ज्ञात हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि वह ध्वनि बगुले की थी। युधिष्ठिर रुक गये। उन्होंने उस पक्षी से कहा—"मेरे चारों भाई महान बली और युद्ध में अजेय हैं। इन्होंने दिग्विजय की है। इन्हें मारने या अचेत करने की शक्ति किसी साधारण व्यक्ति में नहीं हो सकती। अतः आप अपना वास्तविक रूप प्रकट करें और बतायें कि मेरे भाइयों की यह दशा क्यों हुई है।"

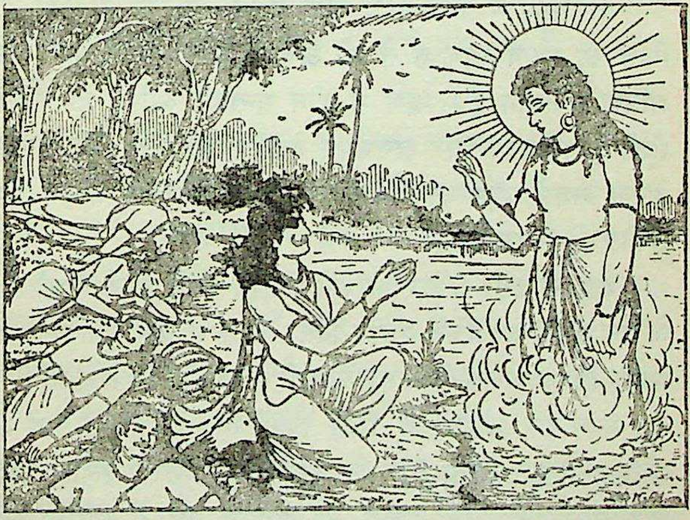

युधिष्ठिर और यक्ष

यह सुनते ही बगुले ने अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया। युधिष्ठिर ने देखा—वह एक यक्ष था। यक्ष ने कहा—"युधिष्ठिर, इस जलाशय पर आकर जो मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं देता उसकी यही दशा होती है। बिना मेरे प्रश्नों का उत्तर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
दिये जल पीने पर तुम्हारी भी यही दशा होगी। यदि तुम इस जलाशय का जल पीना चाहते हो तो पहले मेरे प्रश्नों का उत्तर दो।" युधिष्ठिर यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देने को तैयार हो गये। यक्ष ने पूछा—"युधिष्ठिर, पृथ्वी से भी बड़ा, आकाश से भी ऊँचा और वायु से भी अधिक गतिवान क्या है? सबसे सुखी कौन है, सबसे बड़ा आश्चर्य क्या है और सन्मार्ग क्या है?"

युधिष्ठिर ने कहा—"हे यक्ष, माता पृथ्वी से भी बड़ी है, पिता का स्थान आकाश से भी ऊँचा है और मन वायु से भी अधिक गतिवान है। ऋण से हीन सन्तोषी व्यक्ति ही सबसे सुखी है, जीवन को क्षणभंगुर देखकर भी जीने की इच्छा करना सबसे बड़ा आश्चर्य है और महापुरुषों के जीवन की लकीर ही सन्मार्ग है।"

यक्ष ने इसी प्रकार के अनेक प्रश्न किये और युधिष्ठिर ने उन सबके यथोचित उत्तर दिये। अन्त में यक्ष युधिष्ठिर से प्रसन्न होकर बोला—"अब तुम जल पी सकते हो। इसके अतिरिक्त तुम अपने इन भाइयों में जिस किसी एक को कहो, उसे मैं जीवित भी कर सकता हूँ।" यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा—"यदि आप प्रसन्न हैं तो नकुल को जीवित कर दें क्योंकि वह मेरी दूसरी माता माद्री का पुत्र है। मेरी दोनों माताओं के एक-एक पुत्र तो रहेगा।"

यक्ष युधिष्ठिर के इस उत्तर से और भी अधिक प्रसन्न हुआ। उसने युधिष्ठिर को और भी वर माँगने को कहा। युधिष्ठिर ने वर माँगकर अपने सभी भाइयों को जिला लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
यक्ष ने प्रसन्न होकर उन्हें विदा किया और कहा—"जाओ, तुम्हारा मार्ग निष्कंटक हो।"

इसी तरह की अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए पांडवों ने वनवास के बारह वर्ष पूरे कर लिये। अब एक वर्ष का अज्ञातवास और व्यतीत करना शेष था। आपस में गुप्त रूप से विचार-विमर्श कर उन्होंने तेरहवाँ वर्ष राजा विराट के यहाँ व्यतीत करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने साथ रहने वाले समस्त ऋषि-मुनियों से विदा माँगी। वे कहाँ गये, यह किसी ने न जाना।

पांडवों ने मत्स्य देश के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर वे राजा विराट की राजधानी के बाहर ही रुक गये। उन्होंने अपने अस्त्र-शस्त्र एक वृक्ष पर टाँग दिये और प्रच्छन्न रूप में नगर में प्रवेश किया। एक के पश्चात एक वे राजा विराट के दरबार में गये और नौकरी की प्रार्थना की। युधिष्ठिर ने अपना नाम कंक बताया। उन्हें राजा के साथ चौपड़ खेलने का काम मिला। भीम रसोइया हो गये। अर्जुन स्त्री का वेश धारण कर दरबार में गये। उन्होंने अपना नाम बृहन्नला बताया और राजकुमारी उत्तरा को नृत्य और संगीत की शिक्षा देने लगे। सहदेव और नकुल गायों और घोड़ों की देख-रेख का काम करने लगे। द्रौपदी सैरन्ध्री नाम से परिचारिका का काम करने लगी।

अज्ञातवास की इस अवधि में दुर्योधन भी चुप नहीं बैठा था। उसने अपने गुप्तचर छोड़ रखे थे जो पांडवों का पता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लगाने में व्यस्त थे। पर पांडव इतने सतर्क रहते कि किसी को उनकी गन्ध तक न मिलती। जब अज्ञातवास की अवधि पूरी होने को ही थी, तभी एक महत्त्वपूर्ण घटना घटित हुई। द्रौपदी को अपमानित करने के कारण भीम ने राजा विराट के साले और सेनापति कीचक को गुप्त रूप से मार डाला। कीचक की मृत्यु का समाचार सुनकर दुर्योधन को सन्देह हुआ कि सम्भव है पांडव वहीं हों। उसने एक बड़ी सेना लेकर राजा विराट पर आक्रमण कर दिया और उनकी गायें छीन लीं। राजा विराट अपनी सेना लेकर युद्ध के लिए निकल पड़े परन्तु वे पराजित हुए। कौरवों ने उन्हें बन्दी बना लिया। यह समाचार सुनकर युधिष्ठिर ने अर्जुन को विराट के पुत्र उत्तर कुमार के साथ युद्ध के लिए भेजा। अर्जुन उसके सारथी बन कर गये। उत्तर को यह पता न था कि अर्जुन उसका सारथी है।

कौरवों की सेना को देखते ही उत्तर घबरा गया। उसने सारथी को रथ लौटाने की आज्ञा दी। पर अर्जुन ने रथ नहीं लौटाया। उत्तर रथ से कूद कर भागने ही वाला था कि अर्जुन ने उसे पकड़ लिया और अपना वास्तविक परिचय देकर धीरज बंधाया। तब अर्जुन अपना रथ उसी वृक्ष के निकट ले गये जिस पर उनका गांडीव धनुष और अक्षय तरकस रखा था। उन्होंने अपना धनुष उतारा और देवदत्त नामक शंख बजाकर कौरवों को चुनौती दी। शंख-ध्वनि और धनुष की टंकार सुनते ही कौरवों ने अनुमान किया कि यह अर्जुन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब उनमें परस्पर विवाद होने लगा कि अर्जुन के अज्ञातवास के दिन पूरे हो गये हैं या नहीं। अन्त में भीष्म ने गणना कर अपना निर्णय देते हुए कहा—पांडवों के वनवास और अज्ञातवास की अवधि ही पूरी हो चुकी है।

अर्जुन का शंख बजाकर कौरवों को चुनौती देना।

अब युद्ध छिड़ गया। अर्जुन ने अपूर्व रण-कौशल दिखलाया। उन्होंने प्रारम्भ के दो बाण इस प्रकार छोड़े कि वे द्रोणाचार्य के चरणों पर आकर गिरे। इसके पश्चात उनके द्वारा छोड़े गये दो तीर द्रोणाचार्य के कानों को स्पर्श करते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुए निकल गये। इस प्रकार उन्होंने वीरोचित ढंग से अपने गुरु को प्रणाम किया और कुशल पूछी। उन्होंने कौरव पक्ष के सभी वीरों को एक-एक कर पराजित किया और अन्त में सम्मोहनास्त्र छोड़कर सबको अचेत कर दिया। राजकुमार उत्तर ने विजय के चिह्न स्वरूप कौरव महारथियों के अनेक वस्त्र और आभूषण ले लिये। अर्जुन फिर उसी वृक्ष के निकट आकर बृहन्नला के रूप में हो गये और विराट की राजधानी को चल दिये।

इधर भीम, सहदेव और नकुल राजा विराट को लेकर राजधानी में लौट चुके थे। कौरवों की पराजय का समाचार सुनकर विराट अत्यन्त प्रसन्न थे। वे समझते थे कि उत्तर ने ही उन्हें मुक्त कराया है। पर उत्तर के आने पर पांडवों का भेद खुला। पांडवों का वास्तविक परिचय पाकर राजा विराट अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने पांडवों से क्षमा माँगी और उनका यथोचित सम्मान किया। राजा विराट ने अर्जुन से अपनी पुत्री उत्तरा के विवाह का भी प्रस्ताव रखा। पर अर्जुन ने कहा—"उत्तरा मेरी शिष्या है अतः मेरी पुत्री के समान है। मैं उसे अपनी पुत्र-वधू बनाना चाहूँगा।" कुछ दिनों के पश्चात उत्तरा का विवाह अभिमन्यु के साथ हो गया।

अब पांडवों के वनवास की अवधि पूरी हो चुकी थी। वे पुनः राज्य प्राप्त करने की आशा में अपनी राजधानी को चल पड़े। राजा विराट ने भी उन्हें प्रसन्नता पूर्वक विदा किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. दुर्योधन के मन में पांडवों के प्रति ईर्ष्या क्यों उत्पन्न हुई?
२. उसने पांडवों से किस प्रकार बदला चुकाया?
३. द्वैतवन की घटना से पांडवों के चरित्र के विषय में क्या पता लगता है?
४. दुर्योधन ने दुर्वासा ऋषि को पांडवों के पास क्यों भेजा?
५. युधिष्ठिर ने यक्ष को किस प्रकार प्रसन्न किया?
६. पांडवों के अज्ञातवास का पता कौरवों को किस प्रकार लगा?

अभ्यास

१. हसी-खेल न होना, अपमान का घूंट पीना, गन्ध तक न मिलना, मुहावरों का अर्थ बताओ और उनका प्रयोग अपने वाक्यों में करो।
२. 'वनवास' एक समस्त पद है। 'वन' और 'वास' के बीच से 'में' कारक चिह्न का लोप करके यह शब्द बनाया गया है। विभक्तियों के लोप से बने इस प्रकार के शब्द 'तत्पुरुष' समास कहलाते हैं। इस पाठ से तत्पुरुष समास के अन्य उदाहरण छाँटकर लिखो।

आदेश—पांडव वनवास की मुख्य-मुख्य घटनाओं को अपने शब्दों में लिखो।

टिप्पणी

ख्याति=प्रसिद्धि। चतुर्दिक=चारों दिशाओं में। युक्ति=उपाय। निष्कंटक=बाधा रहित। अमोघ=अचूक। विपन्न=दुखी। त्राहिमाम=मेरी रक्षा करो। अनिष्ट=बुराई, अहित। निवारणार्थ=दूर करने के लिए। क्षणभंगुर=क्षण में नष्ट होने वाला। प्रच्छन्न=छिपा हुआ। परिचारिका=सेविका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--१८

घट

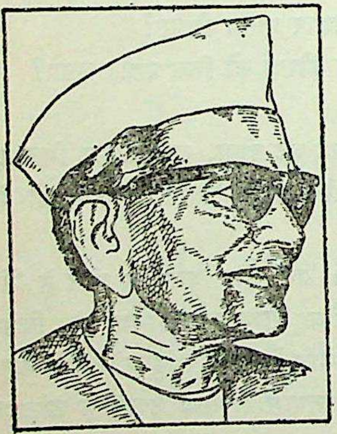

[प्रस्तुत कविता में कविवर सियाराम शरण गुप्त ने घट जैसी सामान्य वस्तु द्वारा जीवन के लिए एक महान सन्देश दिया है।]

कुटिल कंकड़ों की कर्कश रज
घिसघिस कर सारे तन में,
किस निर्मम निर्दय ने मुझको
बाँधा है इस बन्धन में ?
फांसी - सी है पड़ी गले में
नीचे गिरता जाता हूं,
बार - बार इस महाकूप में
इधर - उधर टकराता हूं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर नीचे तम ही तम है
बन्धन है अवलम्ब यहाँ,
यह भी नहीं समझ में आता
गिरकर मैं जा रहा कहाँ।
काँप रहा हूँ विवश, करूँ क्या,
नहीं दीखता एक उपाय,
यह क्या ? यह तो श्याम नीर है,
डूबा, अब डूबा मैं हाय।
भगवन, हाय ! उबार मुझे लो,
तुम्हें पुकारूँ मैं जब तक,
हुआ तुरन्त निमग्न नीर में,
आर्तनाद करके तब तक।
चढ़ा जा रहा हूँ ऊपर अब,
परिपूरित गौरव लेकर,
उऋण हो सकूंगा क्या तुमसे,
यह नवजीवन भी देकर ?

अध्ययन

प्रश्न

१. कुएं में डाले जाने से पूर्व घड़े को क्या-क्या यातनाएं दी गयी थीं ?
२. नीचे उतरते समय घड़ा क्या-क्या सोच रहा था ?
३. जल से स्पर्श होने पर घड़े ने ईश्वर को क्यों पुकारा ?
४. ऊपर चढ़ते समय घड़े में क्या अन्तर आ गया था ?
५. कवि को इस कविता के माध्यम से हमें क्या बताना है ?

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. नीचे लिखे हुए वाक्य कोष्ठक में दिये हुए शब्दों में से किसी एक से पूरे होते हैं। उस शब्द को ढूंढ़कर रेखांकित करो—

(क) कुएं में डाले जाते समय घड़ा नीचे डालने वाले व्यक्ति को (परोपकारी, क्रूर, मित्र) समझ रहा था।

(ख) घड़ा नीचे उतरते समय इसलिए भयभीत हो रहा था कि कुएं में नीचे ऊपर (तम ही तम, जल ही जल, शून्य ही शून्य) था।

(ग) जल से स्पर्श होते ही घड़ा (सिंहनाद, कलनाद, आर्तनाद) करके ईश्वर को पुकार उठा।

२. नीचे बायीं ओर इस कविता से सम्बन्धित कुछ शब्दों के विशेषण लिखे हैं और दाहिनी ओर उनके विशेष्य। दाहिनी ओर लिखे शब्दों से पूर्व उनसे सम्बन्धित विशेषणों के क्रमाक्षर लिखो—

(क)	कर्क	गौरव
(ख)	स्याम	जीवन
(ग)	परिपूरित	कूप
(घ)	नव	रज
(ङ)	महा	नीर

३ इस कविता से अनुप्रास अलकार के तीन उदाहरण छांटकर लिखो।

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

कुटिल=टेढ़े मेढ़े, खुरदरे। कर्क=कठोर। रज=धूल। निर्मम=ममत्व रहित। तम=अन्धकार। अवलम्ब=सहारा। स्याम=श्याम, काला। निमग्न=डूबा हुआ। आर्तनाद=दुख की आवाज, कराहना। परिपूरित=भरा हुआ। गौरव=भारीपन, महत्त्व। उऋण=ऋण से मुक्त।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—१९

तमिलनाड

[इस पाठ में तमिलनाड प्रदेश का परिचय कराया गया है जिसकी कला, संस्कृति और इतिहास अत्यन्त प्राचीन है।]

तमिलनाड या मद्रास हमारे देश का सुदूर दक्षिणवर्ती राज्य है। यह वह प्रदेश है जहाँ तमिल भाषा बोली जाती है। तमिल भारत की सबसे प्राचीन भाषा है। कहा जाता है कि इस भाषा का साहित्य २५०० वर्ष पुराना है। एक ऐतिहासिक मत है कि तमिलनाड के निवासियों के पूर्वज किसी समय सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर भारत और पाकिस्तान में रहते थे। उनकी सभ्यता और संस्कृति अत्यन्त उच्च कोटि की थी। सिन्धु घाटी में खुदाई से हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नाम के जो दो नगरों के अवशेष प्राप्त हुए हैं, उनसे इस बात की पुष्टि होती है। नगर-व्यवस्था तथा अन्य उपलब्ध सामग्री से पता चलता है कि यहाँ के निवासी कुशल, सुसंस्कृत और बुद्धिमान थे।

तमिलनिवासी बड़े साहसी एवं अध्यवसायी हैं। समुद्र तटवासी होने के कारण उन्हें दूरस्थ समुद्र-यात्रा अनन्तकाल से अत्यन्त प्रिय रही है। उनका निकटतम पड़ोसी लंका द्वीप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर्व प्रथम उनके प्रभाव में आया। लंका और मद्रास के पारस्परिक सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन हैं। आज भी लंका में तमिल भाषियों की संख्या पूरी आबादी की एक चौथाई है और वहाँ के व्यापारिक जीवन में उनका बहुत बड़ा हाथ है। केवल लंका ही नहीं, हिन्द महासागर में स्थित अन्य अनेक द्वीपों में भी तमिलनाड के लोगों ने अपने सम्बन्ध स्थापित किये। वस्तुतः सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, बाली, मलाया, सिंगापुर आदि में भारतीय संस्कृति के जो अवशेष आज मिलते हैं उसका बहुत कुछ श्रेय तमिल वासियों को ही है।

तमिलनाड पांड्य, चोल और पल्लव राजाओं का विशेष केन्द्र रहा है। उन्होंने इस राज्य की श्री-वृद्धि के लिए बड़े-बड़े विशाल मन्दिर और इमारतें बनवायीं। इन में मदुरा के प्राचीन राजमहल एवं मन्दिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर मीनाक्षी देवी का मन्दिर अत्यन्त विशाल एवं भव्य है। इसके समान आलीशान मन्दिर दक्षिण भारत में नहीं है। चारों दिशाओं में बारह द्वार हैं। मन्दिर के अन्दर बाजार लगता है। यह मन्दिर ७५ बीघे भूमि में बना है। मन्दिर के भीतर स्वर्णपुष्करणी नामक एक सरोवर है। मन्दिर में प्रवेश करते ही सिंह की एक विशाल मूर्ति के दर्शन होते हैं। इसके अतिरिक्त मन्दिर की दीवारों और छत के पत्थरों में हाथी, शेर, घोड़े, बैल आदि की मूर्तियां खोदी गयी हैं। मुख्य मन्दिर के बाहर और अन्दर दो संगीत स्तम्भ हैं। इनमें से प्रत्येक सात छोटे-छोटे खम्भों से मिलकर बना हुआ है। इन छोटे खम्भों को क्रम से ठोंकने पर संगीत के सातों स्वर निकलते हैं। मदुरा के महल की गणना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

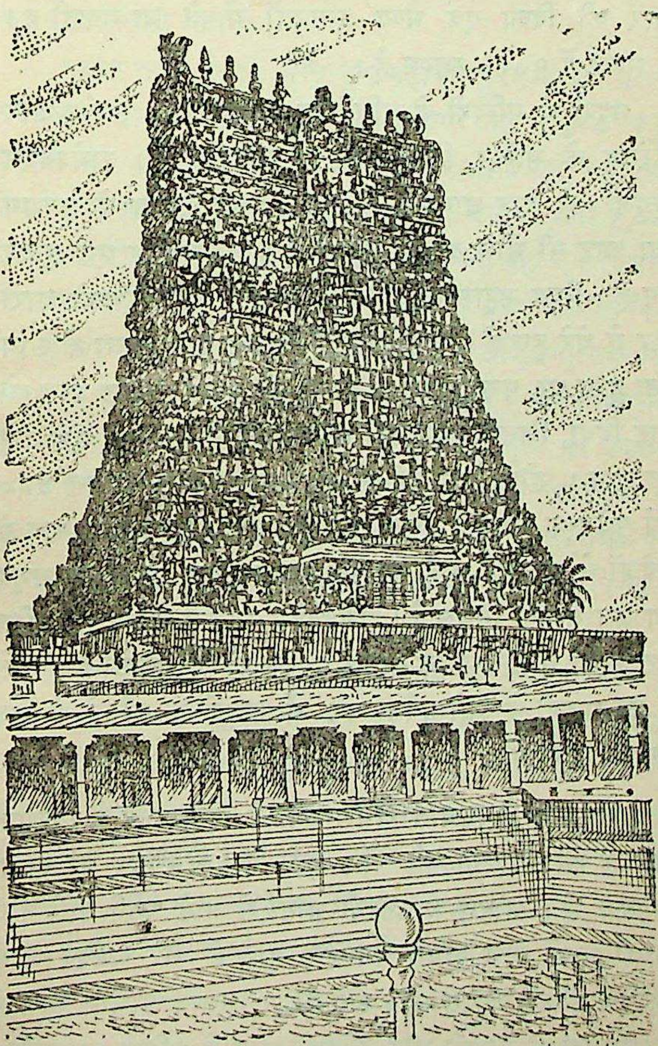

मीनाक्षी देवी का मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संसार की दिव्य एवं भव्य इमारतों में की जा सकती ह। इस महल में १००० स्तम्भ है।

मदुरा के मन्दिरों के अतिरिक्त रामेश्वरम, तंजौर और श्रीरंगम के मन्दिर विशेष रूप से दर्शनीय हैं। रामेश्वरम हिन्दुओं के चार धामों में से एक है। यह मद्रास से लगभग सवा चार सौ मील दक्षिण पूर्व में है। रामेश्वरम एक सुन्दर द्वीप है। हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी इसको चारों ओर से घेरे हुए हैं। कहा जाता है कि यह द्वीप भारत के साथ जुड़ा हुआ था, परन्तु बाद में सागर की लहरों ने कुछ भाग को काट दिया, जिससे यह चारों ओर पानी से घिर कर एक टापू बन गया। द्वीप तक पहुँचने के लिए आज से लगभग ४०० वर्ष पूर्व एक राजा ने पत्थर का पुल बनवा दिया था। बाद में अंग्रेजों ने इस पर लाहे का पुल बनवा दिया। यहाँ पर समुद्र का जल अत्यन्त निर्मल है। रामेश्वरम नगर से लगभग डेढ़ मील उत्तर पूर्व में गन्धमादन नामक एक छोटी सी पहाड़ी है। कहते हैं हनुमानजी ने इसी पर्वत पर से समुद्र को लाँघने के लिए छलाँग मारी थी।

सेतुबन्ध के पश्चात रामचन्द्रजी ने रामेश्वरम के विख्यात मन्दिर की स्थापना की थी। इसी से इस मन्दिर का इतना महत्त्व है। भारत के उत्तरी भागों से आने जाने वाले तीर्थ यात्री अपने साथ पवित्र गंगाजल लाते हैं और रामेश्वरम के मन्दिर में उसे चढ़ाते हैं। इस प्रकार अत्यन्त प्राचीन काल से हमारे देश के उत्तरी और दक्षिणी भाग में घनिष्ठ पारस्परिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्ध रहा है तथा सांस्कृतिक दृष्टि से एकता की भावना को बल मिलता रहा है।

मद्रास नगर से ३० मील दूर महाबलिपुरम में हमें प्रसिद्ध पल्लव वंशीय राजाओं की कलाकृतियों के उत्कृष्ट नमूने मिलते हैं। यहाँ पर चट्टानों को काटकर बनाये गये रथों तथा बैलों और हाथियों की विशाल मूर्तियां बनायी गयी हैं, जो एकदम सजीव प्रतीत हाती हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ एक विशाल चट्टान पर खुदाई द्वारा दैनिक जीवन के दृश्य अंकित किये गये हैं जो कला की दृष्टि से अद्वितीय हैं। तमिलवासियों को कला, नृत्य एवं अभिनय से अत्यन्त प्रेम है। भरत नाट्यम भी तमिलवासियों की ही देन है। अब तो इस नृत्य का प्रदर्शन हमारे देश तक ही सीमित नहीं है। यूरोप और अमेरिका में भी जहाँ-जहाँ भारतीय कलाकारों ने भरत नाट्यम का प्रदर्शन किया है, दर्शकों ने मन्त्रमुग्ध होकर इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

कन्या कुमारी अन्तरीप तमिलनाड का दक्षिणी भाग है और वहीं काशी-विश्वनाथ का भी मन्दिर है। इससे सिद्ध है कि उत्तर से दक्षिण का सारा भारत सदा से एक ही रहा है। कन्या कुमारी के प्रातःकालीन और सन्ध्या के दृश्य, जब सूर्य की सुनहरी किरणों से सारा समुद्र नहा जाता है, बड़े ही मनोरम होते हैं। वहीं वह शिला भी है, जिस पर बैठकर स्वामी विवेकानन्द ने माँ का ध्यान किया था।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात मद्रास राज्य दिन-प्रतिदिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
उन्नति के शिखर पर अग्रसर हो रहा है। इस राज्य ने शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामुदायिक विकास आदि क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रगति की है। तम्बाकू, काली मिर्च, सुपारी, काजू आदि मद्रास राज्य की प्रमुख उपज हैं। इनसे राज्य की आर्थिक उन्नति तो हुई ही है, साथ ही लोगों के रहन-सहन के स्तर में भी काफी सुधार हुआ है। काजू से पर्याप्त विदेशी मुद्रा भी प्राप्त होती है।

यहाँ की राजधानी मद्रास हमारे भारत का विशाल तथा प्रसिद्ध नगर है। यहाँ के विश्वविद्यालय का देश भर में नाम है। 'इंटीग्रल कोच फैक्टरी', जहाँ बड़ी लाइन के आधुनिक प्रकार के रेल के डिब्बे बनते हैं, यहीं पर है। मद्रास में समुद्र का सौन्दर्य बड़ा आकर्षक है। समुद्र तट बहुत विशाल है जहाँ पर सन्ध्या समय सहस्रों नर-नारी विश्राम और मनोविनोद के लिए आते हैं। विशाल सार्वजनिक सभाएं भी इसी मैदान में होती हैं। समुद्र तट पर कटान न होने के कारण यहाँ पर बन्दरगाह समुद्र में दीवार बनाकर निर्मित किया गया है। विदेशी व्यापार का यह नगर बड़ा केन्द्र है। हाईकोर्ट, विश्वविद्यालय, आधुनिक बाजार आदि से युक्त यह नगर दर्शनीय है।

तमिलनाड में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि सभी धर्मों के मानने वाले लोग हैं। सब में परस्पर मेलजोल का भाव है। यहाँ के हिन्दू शास्त्रीय धर्म-पालन के लिए भारत भर में प्रसिद्ध हैं। अंग्रेजों के दीर्घकालीन प्रभाव के कारण यहाँ के निवासी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी भाषा से भी अधिक परिचित हैं। साधारण दुकानदार भी अंग्रेजी बोल और समझ लेते हैं। अब यहाँ हिन्दी का भी प्रचार शीघ्रता से हो रहा है।

दक्षिण भारत, विशेष रूप से तमिलनाड अत्यन्त प्राचीन काल से महान सन्तों, भक्तों एवं विद्वानों का भी केन्द्र रहा है। यहाँ से ज्ञान-विज्ञान की जो किरणें फूटी हैं, उन्होंने सारे भारत को प्रकाशित किया है। इन सन्तों में सन्त वल्लुवर, विष्णुचित्त, आंडाल तथा रामानुजाचार्य अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। आज भी देश को मद्रास प्रान्त के चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य (राजा जी) जैसे विद्वान एवं दार्शनिक तथा चन्द्रशेखर वेंकटरमण जैसे विश्व-विख्यात वैज्ञानिक पर गर्व है।

अध्ययन

प्रश्न

१. तमिल निवासियों की सभ्यता और संस्कृति के प्राचीनतम अवशेष कहाँ मिलते हैं?

२. तमिलनाड में प्राचीन काल में किन राजवंशों का राज था? तमिलनाड को उनकी मुख्य देन क्या है?

३. मीनाक्षी मन्दिर की क्या विशेषताएं हैं?

४. रामेश्वरम के मन्दिर की रचना के विषय में क्या किंवदन्ती है?

५. स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात तमिलनाड ने औद्योगिक क्षेत्र में क्या प्रगति की है?

६. तमिलनाड की कलात्मक समृद्धि के विषय में तुम क्या जानते हो?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. अनन्त शब्द 'अन्+अन्त' से बना है। इसका अर्थ है 'जिसका अन्त न हो।' 'अन्' के योग से कुछ अन्य शब्दों की रचना करो।

२. घनिष्ठ, सांस्कृतिक, मन्त्रमुग्ध, दर्शनीय और सामुदायिक शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो।

आदेश--इस पाठ के आधार पर तमिलनाड के प्रमुख मन्दिरों की कला का वर्णन अपने शब्दों में करो।

टिप्पणी

आलीशान=प्रभावशाली, भव्य। भूरि-भूरि=बहुत अधिक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--२०

सिनेमा

[सिनेमा या चलचित्र आधुनिक युग में मनोरंजन का प्रमुख साधन है। प्रस्तुत पाठ में सिनेमा का सिद्धान्त और उसका इतिहास सरल ढंग से बताया गया है।]

मनोरंजन के वर्तमान साधनों में चलचित्र सबसे अधिक लोकप्रिय और व्यापक है। बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष, धनी-निर्धन, श्रमिक-पूंजीपति, अपढ़ और विद्वान सभी बड़े उत्साह से सिनेमा देखने जाते हैं। नये चित्र आने पर सिनेमाघरों में टिकट की खिड़कियों पर लगी हुई भीड़ और शीघ्र टिकट प्राप्त कर लेने की स्पर्धा से सहज ही अनुमान हो जाता है कि चलचित्र कितना लोकप्रिय है। पहले लोग नाटक, कठपुतली के नृत्य, स्वांग, नौटंकी आदि से मनोरंजन करते थे। विज्ञान की प्रगति के साथ चलचित्रों का आगमन हुआ और अब मनोरंजन के साधनों में इसी का सर्वप्रमुख स्थान है।

चलचित्र का जन्म तो गत शताब्दी में ही हो गया था किन्तु उसका विकास वर्तमान शताब्दी में ही हुआ है। वास्तव में चलचित्र कोई नया आविष्कार नहीं है। वह फोटोग्राफी और मैजिक लैंटर्न के सिद्धान्तों के मेल का परिणाम है। मैजिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लैंटर्न से किसी पारदर्शी पदार्थ पर बने हुए छोटे चित्र बड़े रूप में पर्दे पर दिखाये जाते हैं। तेज प्रकाश सचित्र पारदर्शी पदार्थ पर डाला जाता है। पारदर्शी पदार्थ में से होती हुई प्रकाश की किरणें पर्दे पर पड़ती हैं और उस पर बना हुआ चित्र पर्दे पर आ जाता है।

चलचित्र में भी 'मैजिक लैंटर्न' के इस सिद्धान्त का उपयोग होता है। सिलोलाइड की बनी हुई पारदर्शक पट्टी पर चित्रों की शृंखलाएं अंकित होती हैं। प्रकाश एक यन्त्र की सहायता से

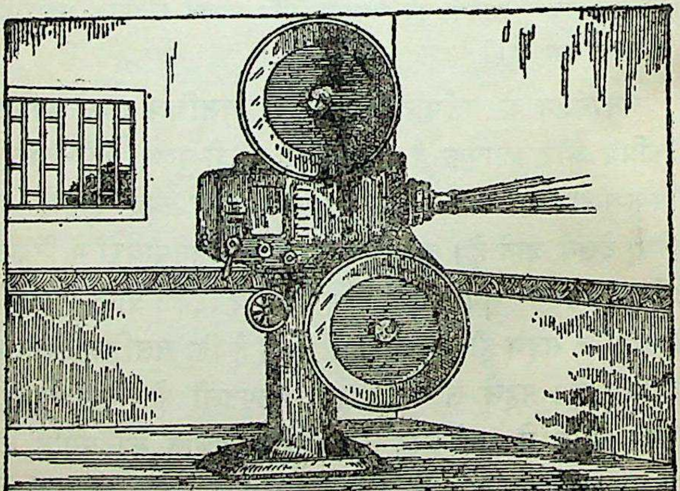

प्रक्षेपक

जिसे प्रक्षेपक (प्रोजेक्टर) कहते हैं, पट्टी पर डाला जाता है और चित्र पर्दे पर आ जाता है। चलचित्र पट्टी चलती रहती है और चित्र पर्दे पर आते रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब प्रश्न यह है कि पर्दे पर चलते-फिरते, हँसते-बोलते, नाचते-गाते और दौड़ते-भागते चित्र दिखायी देने का क्या रहस्य है? बात यह है कि ये चलते-फिरते चित्र अलग-अलग स्थितियों के सैकड़ों चित्रों के योग से दिखाये जाते हैं। उदाहरण के लिए रजत पट पर घोड़े से सवार के उतरने का जो चित्र हम देखते हैं, उसे प्रदर्शित करने के लिए सवार के घोड़े की पीठ पर उचकने, रकाब पर पैर से जोर देने, दूसरा पैर पीछे से लाने और जमीन पर पहुँच जाने के बीच के अनेक अलग-अलग चित्र लेने पड़ते हैं। अलग-अलग स्थितियों के ये चित्र अखंडित रूप में दिखायी देते हैं क्योंकि आँख की यह विशेषता है कि उसके सामने जो वस्तु आती है उसका चित्र दृष्टि-पटल पर उस वस्तु के हट जाने पर भी कुछ देर तक बना रहता है। इस गुण के कारण जब एक के बाद दूसरा चित्र १/२४ सेकेंड के अन्तर से आँख के सामने आता है तो आँख उन दोनों को मिला लेती है। उनके बीच होने वाले १/२४ सेकेंड के अन्तर का उस पर कोई प्रभाव नहीं होता।

ये चलचित्र फोटो लेने के सामान्य कैमरे से नहीं लिये जाते, क्योंकि उस दशा में एक कार्य की अनेक स्थितियों के अलग-अलग चित्र लेने के लिए एक साथ सैकड़ों कैमरों की आवश्यकता होगी। वास्तव में इस काम का आरम्भ हुआ तो ऐसे ही। सन् १८७७ में एक अंग्रेज वैज्ञानिक ने एक दौड़ते हुए घोड़े का फोटो खींचने के लिए २४ कैमरों का प्रयोग किया। उसने ये कैमरे मार्ग के किनारे एक पंक्ति में रख दिये। प्रत्येक कैमरे की खिड़की से उसने एक-एक तागा सड़क के उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार खूंटी से बाँध दिया। अब घोड़ा दौड़ाया गया। घोड़े के पैरों से तागा खिंच जाने के कारण कैमरों की खिड़कियां खुलती जाती थीं और घोड़े के दौड़ने की विभिन्न स्थितियों के फोटो खिंचते जाते थे। इस प्रकार दौड़ते हुए घोड़े का चित्र तो खिंच गया किन्तु उसमें असुविधा बहुत हुई। यह विधि व्यावहारिक नहीं हो सकती थी। वस्तुतः इस कार्य के लिए तो एक ही ऐसे

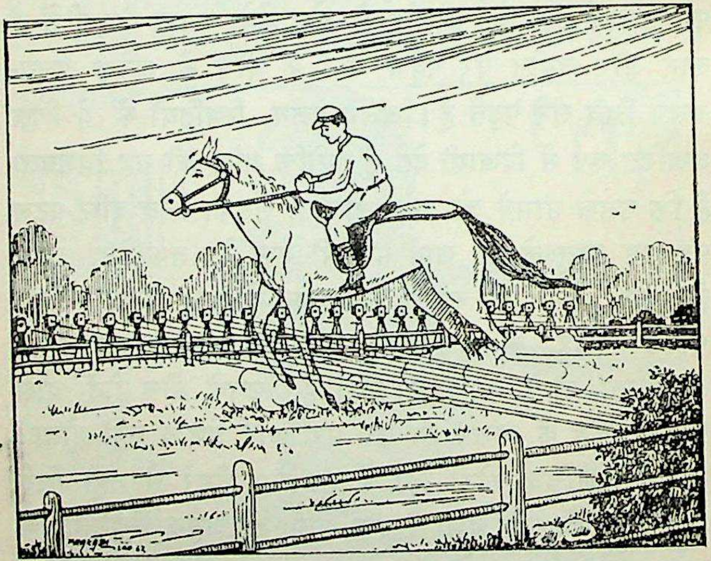

दौड़ते हुए घोड़े का फोटो खींचने का प्रयास

कैमरे की आवश्यकता थी जो गतिशील वस्तुओं का चित्र ले सके। १८८९ में विलियम ग्रीन ने एक ऐसे चलचित्र-कैमरे का आविष्कार कर लिया और यह काम सुगम हो गया। अतः विलियम ग्रीन को ही हम वर्तमान सिनेमा का जन्मदाता मान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकते हैं। ग्रीन द्वारा आविष्कृत कैमरे में निरन्तर सुधार होते रहे। अब चलचित्र कैमरे बड़े उन्नत तथा उत्कृष्ट हो गये हैं।

पहले चलचित्र मूक होते थे। आगे चल कर उनमें ध्वनि का समावेश किया गया। ध्वनि ग्रामोफोन के रेकार्ड में भर ली जाती थी और फिल्म प्रदर्शित करते समय वे रेकार्ड बजाये जाते थे। रेकार्ड बजाने में समय का ध्यान रखने की बड़ी आवश्यकता होती थी, जिससे कि दर्शकों को यही लगे कि अभिनेता ही बोल रहे हैं अथवा गा रहे हैं, अलग से रेकार्ड नहीं बज रहे हैं। परन्तु यह व्यवस्था सन्तोषजनक नहीं थी। कभी-कभी यह हो जाता था कि चित्र कुछ और दिखायी पड़ता था और ध्वनि कुछ और सुनायी देती थी। अब एक ही पट्टी पर चित्र के साथ-साथ ध्वनि की रेखाएं भी अंकित रहती हैं और पहले जैसा कोई व्यतिक्रम नहीं होता।

फिल्म तैयार करने के लिए विशेष भवन बने होते हैं, जिन्हें स्टूडियो कहते हैं। स्टूडियो के अन्दर ही दृश्यों का संयोजन करके अभिनय के चित्र लिये जाते हैं। कभी-कभी बाहर भी चित्र लिये जाते हैं, पर अधिकांशतः यह कार्य स्टूडियो में अन्दर ही होता है और दृश्य वहीं आवश्यकतानुसार आयोजित कर लिये जाते हैं। उदाहरण के लिए चलचित्र में जिस व्यक्ति को हम पर्वत की ऊँची चोटी पर चढ़ते हुए देखते हैं उसने वास्तव में ऐसा किया हो, यह आवश्यक नहीं। इसके लिए प्रायः कपड़े के ऊपर पर्वत शिखर का एक बड़ा चित्र बना लिया जाता है। फिर उस चित्र पर आदमी को पेट के बल चलाया जाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। इस दृश्य के चित्र ऐसी सावधानी से लिये जाते हैं कि यह प्रतीत होता है मानो वह व्यक्ति चोटी पर चढ़ा चला जा रहा है। इसी प्रकार ऊँची चोटी से गहरे समुद्र में कूदने या ढकेलने जैसे आश्चर्यजनक दृश्यों के चित्र भी लिये जाते हैं। लकड़ी के बने माडल से कुदाकर भी इस प्रकार के चित्र लिये जाते हैं।

चलचित्र-निर्माण के मुख्य अधिकारी को निदेशक कहते हैं। निदेशक फिल्म के लिए कहानी चयन करता है, दृश्यावली सहित उसे अभिनय के अनुकूल बनवाता है, अभिनेता और अभिनेत्रियों का चयन करता है और अभिनय का निर्देशन करता है। निदेशक की सहायता के लिए वेशभूषा, फोटोग्राफी, संगीत, ध्वनि-लेखन, फिल्म-सम्पादन आदि कार्यों में सहायता देने के लिए विशेषज्ञ होते हैं। फिल्म सम्पादक फिल्मों को काट-छाँट कर ऐसा बना देता है कि वे कलापूर्ण हो जायँ और वांछित समय में उनका प्रदर्शन पूरा हो जाय।

फिल्मों या चलचित्रों के निर्माण के व्यवसाय में बड़ी पूंजी की आवश्यकता होती है। रंगीन तथा तीन आयामों के चल-चित्र तो और भी अधिक व्यय-साध्य होते हैं। जिस फिल्म को हम ढाई-तीन घंटे में देख लेते हैं उसके निर्माण में महीनों और कभी-कभी वर्षों लग जाते हैं तथा उसमें सैकड़ों व्यक्तियों का परिश्रम और चिन्तन लगता है। फिल्म तैयार हो जाने पर सेंसर बोर्ड से उसके प्रदर्शन की अनुमति ली जाती है। यदि उसमें जनरुचि या जनहित के प्रतिकूल कोई बात हुई, तो उसे फिर से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्पादित करना पड़ता है। कभी-कभी पूरी की पूरी फिल्म ही रद्द कर दी जाती है। फिल्म कम्पनी के मालिक फिल्म की कई प्रतियां तैयार कराते हैं जिससे विभिन्न क्षेत्रों के वितरक उसे अपने-अपने क्षेत्रों में एक साथ प्रदर्शित करा सकें। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि बड़े-बड़े नगर हमारे देश में फिल्म निर्माण के मुख्य केन्द्र हैं। संसार के फिल्म निर्माण का सबसे बड़ा केन्द्र, अमेरिका का हालीवुड नगर है।

मनोरंजन के अतिरिक्त चलचित्र का शैक्षिक महत्व भी कम नहीं है। इसके द्वारा ज्वालामुखी का मूर्त उद्गार, एस्किमो की बरफ पर चलने वाली स्लेज गाड़ियां, रेंडियर, सील का शिकार, तूफानी समुद्र की भीषण गर्जना, समुद्र तल के विचित्र जीवजन्तु, मिस्र के पिरेमिड, शरीर का रक्त संचार, पाचन-प्रणाली में यकृत और अन्तड़ियों का कार्य आदि सब प्रत्यक्ष दिखायी देने लगते हैं। इसी प्रकार अन्य अनेक विषयों पर फिल्में बनी हैं। रूसवासी किस प्रकार बर्फ के तूफान से लड़ते हुए कुत्तों की सहायता से शेर को जीवित पकड़ लेते हैं, किस प्रकार अन्तरिक्ष-यात्री अनन्त अन्तरिक्ष की सैर करते हैं, यह भी चलचित्र ने शिक्षार्थियों के लिए प्रत्यक्ष कर दिया है। विश्व के प्रसिद्ध शिक्षकों के आदर्श पाठ, भ्रमणशील प्रक्षेपक की सहायता से सुदूर गाँवों तक पहुँचा दिये गये हैं। समाचार, सूचना और विज्ञापन का भी चलचित्र सबल साधन है। चलचित्र से और भी कितने लाभ हो सकते हैं, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. लेखक ने क्यों कहा है कि वास्तव में चलचित्र कोई नया आविष्कार नहीं है।

२. विलियम ग्रीन को ही वर्तमान सिनेमा का जन्मदाता क्यों माना जाता है?

३. स्टूडियो किसे कहते हैं? वहाँ चलचित्रों का निर्माण किस तरह होता है?

४. मनोरंजन के अतिरिक्त चलचित्र के शैक्षिक लाभों का वर्णन करो।

अभ्यास

१. स्पर्धा, ईर्ष्या और द्वेष शब्दों का अर्थ-भेद प्रयोग द्वारा स्पष्ट करो।

२. 'पारदर्शी' में 'दर्शी' का अर्थ है देखने या दिखायी देने वाला। 'दर्शी' लगाकर इस तरह के कुछ और शब्दों की रचना करो।

३. 'वितरक' में 'क' का अर्थ है 'करने वाला'। वितरक=वितरण करने वाला। 'क' के योग से इस तरह के पाँच और शब्द बनाओ।

आदेश—किसी शिक्षाप्रद चलचित्र का वर्णन करो जिसे तुमने देखा हो। यह भी बताओ कि तुमने उससे क्या सीखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टिप्पणी

स्वांग=नकल, परिहास पूर्ण खेल या तमाशा। पारदर्शी=जिसके आर पार की वस्तु दिखायी पड़े। व्यतिक्रम=क्रम का भंग। व्ययसाध्य= जिसके करने में अधिक धन लगे। आयाम=नाप। तीन आयामों के चलचित्रों में लम्बाई-चौड़ाई के साथ चित्रों से वस्तुओं की मोटाई का भी आभास होता है, जिससे उसमें बड़ी स्वाभाविकता और सजीवता आ जाती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२१

कृष्ण-सुदामा

[कृष्ण और सुदामा की मित्रता की कहानी बहुत ही लोकप्रिय है और मित्रता का आदर्श समझी जाती है। इस कथा के आधार पर नरोत्तम दास ने 'सुदामा चरित' नाम का एक सुन्दर काव्य ग्रन्थ लिखा है। नीचे इस पुस्तक से कुछ छन्द दिये जा रहे हैं।]

(१)

सीस पगा न झगा तन में, प्रभु जानै को आहि, बसै केहि ग्रामा।
धोती फटी-सी, लटी दुपटी, अरु पाँय उपानह की नहिं सामा।।
द्वार खड़ो द्विज दुर्बल देखि रह्यो चकि सो बसुधा अभिरामा।
पूछत दीनदयालु को धाम, बतावत आपुनो नाम सुदामा।।

(२)

बोल्यो द्वारपाल, सुदामा नाम पांडे, सुनि
छाँड़े राजकाज ऐसे जी की गति जाने को,
द्वारका के नाथ हाथ जोरि धाय गहे पाँय
भेटें भरि अंक लपटाय दुख साने को।।
नैन दोऊ जल भरि पूछत कुसल हरि
विप्र बोल्यो विपदा में मोहिं पहिचाने को।
जैसी तुम करी तैसी करै को दया के सिन्धु,
ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सों माने को।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

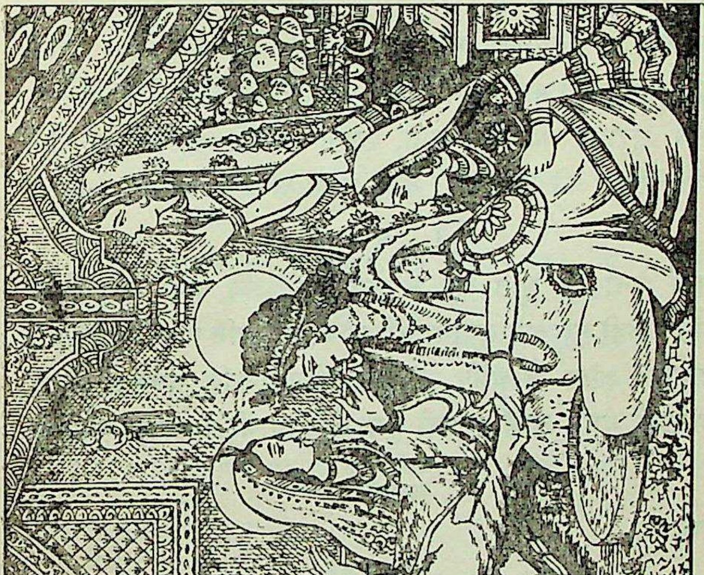

श्रीकृष्ण और सुदामा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३)

ऐसे बिहाल बिवाइन सों पग, कंटक-जाल लगे पुनि जोयें
हाय ! महादुख पाये सखा ! तुम आये इतै न, कितै दिन खोये ?
देखि सुदामा की दीन दसा, करुना करिकै करुनानिधि रोये
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये।

(४)

आगे चना गुरु मात दये, ते लये तुम चाबि, हमैं नहिं दीने,
स्याम कही मुसकाय सुदामा सों, चोरी की बानि में हौ जु प्रवीने।
गाँठरि काँख में चाँपि रहे तुम, खोलत नाहिं सुधारस भीने,
पाछिली बानि अजौं न तजी तुम, तैसेई भाभी के तन्दुल कीने।।

अध्ययन

प्रश्न

१. सुदामाजी कृष्ण के द्वार पर किस वेश-भूषा में पहुँचे ?
२. सुदामा के आगमन के समाचार का कृष्ण पर क्या प्रभाव पड़ा ?
३. 'नैनन के जल सों पग धोये' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
४. सुदामा के चरण धोते समय कृष्ण के रोने का क्या कारण था ?
५. कृष्ण ने सुदामा से मुस्करा कर क्या कहा ?

अभ्यास

१. उन पंक्तियों को छाँटो, जिनसे सुदामा की दीनता प्रकट हो रही है।
२. नीचे बायीं ओर कुछ पंक्तियां दी गयी हैं और दायीं ओर उन पंक्तियों के सारांश। प्रत्येक सारांश के सामने उससे सम्बन्धित पंक्ति का क्रमाक्षर लिखो—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(क) सीस पगा न झगा तन में	दरिद्रों से ऐसा प्रेम कोई नहीं करता।
(ख) ऐसी प्रीति दीनबन्धु दीनन सों माने को।	शरीर पर वस्त्र नहीं हैं।
(ग) तुम आये इतै न कितै दिन खोये।	दया करना अच्छा होता है।
(घ) पाछिलि बानि अजौं न तजी	दुःख सहन किया, किन्तु यहाँ नहीं आये।
	स्वभाव नहीं बदला।

३. पहले तथा तीसरे पद में आये हुए अनुप्रास अलंकार छाँटो।

आदेश—१. पहला और तीसरा पद कंठस्थ करो।

२. कृष्ण और सुदामा की मित्रता का अपने शब्दों में वर्णन करो।

टिप्पणी

झगा=ढीला कुरता, अँगरखा। उपानह=जूता। सामा=सामर्थ्य। अक=गोद। बिहाल=वेहाल। जोये=देखे। प्रबीने=प्रवीण, चतुर। सुधारस भीने=अमृत में सने हुए। बानि=आदत, स्वभाव। तन्दुल=चावल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२२

सच्चा तीर्थ यात्री

[टालस्टाय रूसी भाषा के सर्वप्रिय लेखकों में हैं। उन्होंने अनेक कहानियां और उपन्यास लिखे हैं। उनकी कहानियों में सामाजिक जीवन का चित्रण रहता है और उनसे नैतिक प्रेरणा भी मिलती है। प्रस्तुत कहानी इसका एक उदाहरण है।]

किसी समय रूस के एक गाँव में एफिम और एलिशा नाम के दो वृद्ध मनुष्य रहते थे। वे बड़े घनिष्ठ मित्र थे। एफिम गम्भीर और विचारवान व्यक्ति था। वह अपने परिवार की देखभाल बड़े ध्यान से करता था। उसका परिवार बड़ा था और वह अत्यन्त धनवान था। एलिशा न धनवान ही था और न निर्धन ही। वह मधुमक्खियां पाल कर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था। वह बड़ा दयालु और प्रसन्नचित्त व्यक्ति था। अपने परिवार एवं पड़ोसियों के साथ वह शान्ति से रहता था।

दोनों मित्रों ने बहुत पहले साथ-साथ योरुसलम की तीर्थ यात्रा करने की प्रतिज्ञा की थी। एलिशा तो सदा चलने को तैयार रहता परन्तु एफिम को समय नहीं मिल पाता था। उसके पास सदैव कुछ न कुछ काम रहता। एक काम समाप्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होता तो दूसरा काम शुरू हो जाता। एक दिन एलिशा ने जोर देते हुए कहा, "क्यों मित्र, हम अपनी प्रतिज्ञा कब पूरी करेंगे?"

एफिम का चेहरा उदास हो गया। वह बोला, "अभी हमें प्रतीक्षा करनी होगी। मेरे पास यात्रा के लिए पैसा नहीं है।"

एलिशा हँसा और बोला, "मित्र, तुम पर मुझसे दस गुना अधिक धन है और फिर भी तुम ऐसी बात करते हो। आत्मा की पवित्रता से बढ़कर और कुछ नहीं है। तीर्थयात्रा से आत्मा पवित्र होती है। हमने तीर्थयात्रा की प्रतिज्ञा की है अतः हमें अवश्य चलना चाहिए।

अन्त में एलिशा अपने मित्र को समझाने में सफल हो गया। एफिम ने अपने साथ बहुत सा धन लिया। एलिशा ने केवल उतना ही लिया जितना आवश्यक था। एफिम ने अपने पुत्र को प्रत्येक कार्य के सम्बन्ध में निश्चित आदेश दिये। दूसरी ओर एलिशा ने घर के मामलों की ओर कोई ध्यान न दिया और प्रसन्नता से तीर्थयात्रा के लिए चल पड़ा। एफिम के चित्त में शान्ति न थी। उसे अपने घर की चिन्ता हर समय लगी रहती थी।

चलते-चलते दोनों वृद्ध एक छोटे से गाँव में पहुँचे। उस गाँव में अनावृष्टि से त्राहि-त्राहि मची हुई थी। लोग भूखों मर रहे थे। दोनों मित्र रात बिताने के लिए एक झोपड़ी की ओर चले। उन्हें झोपड़ी में से लोगों की चीख पुकार सुनायी दी। उन्होंने द्वार खटखटाया परन्तु किसी ने न सुना। एलिशा के धक्का देते ही द्वार खुल गया और वे अन्दर घुस गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झोपड़ी का वातावरण बहुत ही दुर्गन्धपूर्ण था। एक स्त्री भूमि पर मरणासन्न अवस्था में पड़ी थी। स्त्री ने पूछा, "आप लोग कौन हैं? क्या चाहते हैं? हमारे यहां कुछ भी नहीं है।" उसी समय एक बच्चा बोला, "बाबा हम भूखे हैं, हमें रोटी दो।" तभी लड़खड़ाता हुआ एक मनुष्य आया और वहीं गिर पड़ा। बोला, "रोग और भुखमरी ने हमें घेर रखा है। मेरा पुत्र भूख से मर रहा है।"

एलिशा ने अपना थैला खोला और उसमें से रोटी का एक टुकड़ा लड़के की ओर बढ़ाया। लड़का रोटी के टुकड़े पर टूट पड़ा और देखते ही देखते उसने उसे साफ कर दिया। उस स्त्री और पुरुष को भी उसने दो-दो रोटियां खाने को दीं। फिर वह कुएं से पानी भर कर लाया और उन्हें पिलाया।

एफिम झोपड़ी के बाहर बैठा था। एलिशा ने उसे सारा हाल कह सुनाया। एफिम बोला, "क्या हम इस गन्दी झोपड़ी में ही रुके रहेंगे। ऐसा किया तो हम लोग भी बीमार हो जायेंगे और फिर हमें तो योरुसलम पहुँचना है। व्यर्थ में समय नष्ट करना ठीक न होगा।"

एलिशा ने उत्तर दिया, "मित्र, आप चलें। मैं इन लोगों को ऐसी दशा में छोड़कर नहीं जा सकता। मुझे कुछ समय तक इन लोगों की सेवा करनी ही होगी।"

एफिम अकेला ही चल दिया। एलिशा ने सारी रात उस घर के तीनों प्राणियों की देखभाल की। सवेरा होते ही उसने घर की सफाई की, चूल्हा जलाया, भोजन बनाया। घर के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए जो आवश्यक चीजें थीं, उन्हें वह स्वयं ही मोल ले आया क्योंकि झोपड़ी में कुछ भी न था। घर के लोगों ने अपना पेट भरने के लिए एक-एक करके घर की सारी चीजें बेच दी थीं। एक दिन, दो दिन और फिर तीन दिन बीत गये। उसे समझ में नहीं आता था कि क्या करे। एक ओर वह सोचता था कि मुझे जाना चाहिए और दूसरी ओर उन लोगों की दशा देखकर उसका हृदय भर आता था। धीरे-धीरे उसकी सेवा से उन तीनों प्राणियों में शक्ति आ रही थी। अतः एलिशा उन लोगों के साथ ही रुक गया।

उसने उन लोगों के दूध के लिए एक गाय और उनका खेत जोतने के लिए एक घोड़ा खरीदा। साथ ही फसल तक के लिए उसने उनके लिए अनाज खरीद कर रख दिया।

एक दिन एलिशा ने सुना कि बूढ़ी स्त्री अपने बेटे से कह रही थी, "बेटा, यह मनुष्य नहीं है, देवदूत है। ऐसे भले मनुष्य संसार में अधिक नहीं हैं।" एलिशा ने जब अपनी प्रशंसा के ये शब्द सुने तो उसने सोचा कि मुझे यहाँ से चल देना चाहिए। घर के लोगों के लिए मैंने अगली फसल तक के लिए प्रबन्ध कर ही दिया है।

अगले दिन जब घर के सब लोग गहरी नींद में पड़े सो रहे थे, वह चुपचाप चल पड़ा। उसके रुपये समाप्त हो चुके थे। अत: उसने योरुसलम जाने का विचार छोड़ दिया और घर की ओर चल पड़ा।

घर पहुँचने पर उसके परिवार के लोग बड़े प्रसन्न हुए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्होंने पूछा "क्या आप योरुसलम हो आये ? एफिम कहाँ है ?" एलिशा ने उन लोगों को कुछ नहीं बताया, केवल इतना कह कर टाल दिया कि ईश्वर की इच्छा नहीं थी कि मैं वहाँ जाऊँ। दूसरे मेरा सारा धन मार्ग में ही समाप्त हो गया, इसीलिए मैं एफिम के साथ न जा सका और बीच से ही लौट आया।

उधर एफिम गाँव की झोपड़ी छोड़ने के बाद जितना शीघ्र हो सका योरुसलम की ओर चला। वहाँ पहुँच कर वह प्रार्थना करने के लिए गिरजाघर में गया। बड़ी भीड़ थी। उसे सदैव अपने धन की चिन्ता लगी रहती। प्रार्थना के समय भी जब-तब वह टटोल कर देख लेता कि कहीं भीड़ में कोई जेब न काट ले। प्रार्थना में उसका मन न था।

गिरजाघर के भीतरी भाग में छत्तीस दीपक जल रहे थे। किसी भी तीर्थयात्री को वहाँ तक जाने की अनुमति न थी। परन्तु दीपकों के प्रकाश के पीछे उसने एक ऐसा दृश्य देखा जिससे वह आश्चर्य-चकित हो गया। वहाँ उसे एक वृद्ध पुरुष की झलक दिखायी दी। वह बिलकुल एलिशा की तरह था।

एफिम सोचने लगा यह एलिशा कैसे हो सकता है। उसे तो मैं पीछे छोड़ आया हूँ। परन्तु जब उसने उसकी ओर फिर देखा तो उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि वह एलिशा ही है। अपने मित्र को देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह सोचने लगा कि एलिशा बड़ा भाग्यशाली है। उसके मन में आया कि अगले दिन मैं भी अपने मित्र की सहायता से गिरजा के भीतरी भाग में पहुँच सकूँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एफिम बराबर एलिशा की ओर देखता रहा। जब प्रार्थना समाप्त हुई तो भीड़ इधर-उधर बढ़ने लगी। एफिम को भीड़ में फिर डर लगने लगा कि कहीं कोई उसकी जेब न काट ले। जेब को हाथ से दबाये हुए उसने भीड़ में आगे बढ़ना आरम्भ किया। परन्तु बाहर आने पर उसे एलिशा कहीं भी न दिखायी दिया।

अगले दिन एफिम फिर गिरजाघर में गया। उसने गिरजाघर के भीतरी भाग में दीपकों के पास अपने मित्र एलिशा को पादरी की तरह हाथ फैलाये खड़े देखा। परन्तु प्रार्थना समाप्त होने के बाद वह उस दिन भी अपने मित्र को न पा सका।

तीसरे दिन भी यही बात हुई। एफिम योरुसलम में तीन सप्ताह रहा। वह प्रतिदिन गिरजाघर में जाता और वहाँ अपने मित्र को विशेष स्थान पर गम्भीर मुद्रा में खड़ा देखता परन्तु इसके बाद उसका कहीं पता न लगता।

अब एफिम अपने घर की ओर चला। रास्ते में वह उस गाँव के झोपड़े में पहुँचा जहाँ एलिशा रुका था। उसे दरवाजे पर बूढ़ी स्त्री खड़ी दिखायी दी। वह बोली, "आइये, बाबा, हमारे साथ ठहरिये और भोजन कीजिए। हम सदा अपने यहाँ यात्रियों का स्वागत करते हैं। एक यात्री ने ही हमारी प्राण रक्षा की थी।"

एफिम समझ गया कि वह स्त्री एलिशा के विषय में बात कर रही है। उसके सम्बन्ध में पूछने पर स्त्री ने कहा, "मैं नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जानतो वह कौन था—मनुष्य अथवा देवदूत। वह हम सबसे प्रेम करता था, हम पर दया करता था, और यहाँ से बिना अपना नाम बताये हुए हा चला गया। परमात्मा उसका भला करे। यदि वह न आया होता तो हम सब मर गये होते।"

फिर बूढ़ी स्त्री ने एफिम को भोजन कराया और उसके सोने का स्थान बताया। एफिम विश्राम के लिए लेटा पर उसे नींद न आयी। उसके मन में निरन्तर एलिशा का ध्यान आता रहा। उसे याद था कि उसने योरुसलम के गिरजाघर में एलिशा को प्रमुख स्थान पर खड़े देखा था। वह यह भी जानता था कि वह एलिशा को इसी गाँव में छोड़ गया था परन्तु वह उससे पूर्व ही योरुसलम पहुँच गया था। उसे ऐसा लगने लगा कि ईश्वर ने सम्भवतः उसकी तीर्थयात्रा स्वीकार नहीं की। एलिशा की तीर्थयात्रा अवश्य स्वीकार हुई है।

प्रातःकाल वह अपने गाँव की ओर चल दिया। गाँव में पहुँच कर वह सबसे पहले एलिशा के घर गया। एलिशा अपनी शहद की मक्खियों की देखभाल कर रहा था। एफिम को देखकर उसने नमस्कार किया और कहा, "आशा है कि आप योरुसलम की तीर्थयात्रा सकुशल पूरी कर आये होंगे।"

एफिम बोला, "मेरा शरीर तो वहाँ अवश्य पहुँच गया परन्तु मेरी आत्मा वहाँ पहुँच सकी, इसमें मुझे सन्देह है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि तुम्हारी आत्मा वहाँ अवश्य पहुँच गयी। मैंने तुमको साक्षात गिरजाघर के भीतरी भाग में दीपमाला के पीछे खड़े देखा था। तुम्हीं सच्चे तीर्थयात्री और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ईश्वर के प्रिय हो। मैं समझ गया हूँ कि मानव सेवा ही सच्ची ईश्वर सेवा है और दीन-दुखियों की सहायता ही सच्ची तीर्थयात्रा है।"

अध्ययन

प्रश्न

१. एफिम के चरित्र की क्या विशेषता थी?
२. एलिशा का स्वभाव कैसा था?
३. जिस गाँव में एफिम और एलिशा पहुँचे उस गाँव की स्थिति कैसी थी?
४. एलिशा झोपड़ी में क्यों रुक गया?
५. एलिशा ने स्त्री को क्या सहायता पहुँचायी?
६. एलिशा योरुसलम क्यों नहीं जा पाया?
७. योरुसलम में गिरजाघर के भीतर एफिम ने क्या देखा?
८. स्त्री ने एफिम से एलिशा के सम्बन्ध में क्या कहा?
९. एफिम ने योरुसलम से लौटने के पश्चात सच्ची तीर्थ यात्रा का क्या अर्थ समझा?

अभ्यास

१. निम्नलिखित का अर्थ लिखो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो—
त्राहि-त्राहि मचना, देखते ही देखते, हृदय भर आना।
२. एफिम गम्भीर और विचारवान व्यक्ति था, इस वाक्य में 'और' गम्भीर और विचारवान दो शब्दों को जोड़ता है। ऐसे शब्द संयोजक कहलाते हैं। संयोजक अव्यय का एक भेद है। अव्यय वे शब्द होते हैं जिनके रूप में लिंग, वचन या कारक से कोई

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिवर्तन या विकार नहीं होता। अतः 'और' संयोजक अव्यय है। संयोजक अव्यय शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं। इस पाठ के अन्तिम अनुच्छेद से संयोजक अव्यय के अन्य उदाहरण छाँटो।

आदेश—अपने पुस्तकालय से व्याकरण की पुस्तक लेकर अव्यय के अन्य भेद मालूम करो।

टिप्पणी

अनावृष्टि=वर्षा न होना, सूखा पड़ना। पादरी=ईसाई धर्म का पुरोहित।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--२३

गुरु गोविन्दसिंह

[गुरु गोविन्दसिंह का जीवन त्याग, तपस्या और बलिदान की कहानी है। भारत और भारतीयता की रक्षा के लिए उन्होंने आजीवन संघर्ष किया। इसी कारण मध्ययुगीन राष्ट्रीय महापुरुषों में उन्हें भी शिवाजी एवं महाराणा प्रताप की भाँति पूज्य दृष्टि से देखा जाता है। इस पाठ में उनके जीवन की एक झाँकी प्रस्तुत की गयी है।]

मध्यकालीन भारत में स्वतन्त्रता, आत्मसम्मान एवं लोक-रक्षा के लिए सतत संघर्ष करने वाले अग्रगण्य महापुरुषों में गुरु गोविन्दसिंह का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने स्वयं बड़े से बड़ा बलिदान किया, अपने प्राणप्रिय चारों वीर पुत्रों को स्व-तन्त्रता की बलिवेदी पर चढ़ा दिया और आजीवन आपत्तियों से लड़ते रहे। इतना ही नहीं, उन्होंने निर्भीकता एवं शौर्य की संजीवनी से लाखों व्यक्तियों को अनुप्राणित भी किया। गुरु गोविन्दसिंह केवल वीर योद्धा ही नहीं थे, वे उच्चकोटि के सन्त, महात्मा, कवि तथा विद्याप्रेमी भी थे। उनका फारसी में लिखा 'जफरनामा' तथा 'दशम ग्रन्थ' में संगृहीत उनकी हिन्दी और पंजाबी की रचनाएं साहित्य की अमूल्य निधि हैं। वे कवियों और विद्वानों का आदर करते थे और उन्हें पुरस्कृत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी करत रहत थे। व नता भी थे और अनुचर भी, सेनानी भी थे और सिपाही भी। वीरता और निर्भीकता क साथ-साथ कर्तव्यपरायणता, विनम्रता एवं शान्तिप्रियता क जो गुण गुरु जी क व्यक्तित्व में मिलते हैं, उन सबका एक साथ एक ही व्यक्ति में मिलना इतिहास में कम ही दखा जाता है। सिक्खों के वे दशम और अन्तिम गुरु थ। उन्होंने शान्तिप्रिय सिक्ख जाति को 'जप-माला क साथ साथ कृपाण ग्रहण कराकर एक-एक सिक्ख को सवा लाख शत्रुओं का सामना करन योग्य बनान का वीड़ा उठाया और उस व्रत को पूरा भी किया——

सवा लाख स एक लड़ाऊँ,
चिड़ियन त मैं बाज तुड़ाऊँ,
तब गोविन्दसिंह नाम कहाऊँ।

गुरु गोविन्दसिंह सिक्खों के नवम गुरु तग बहादुर के पुत्र थ। गूजरी माता का नाम था। उनका जन्म २२ दिसम्बर सन् १६६६ को पटना में हुआ था। पिता ने पुत्र का नाम गोविन्दराय रखा। पाँच वर्ष तक पटना में रहकर व अपन पिता क पास पंजाब में आनन्दपुर नामक स्थान में आ गय। उनको शस्त्र और शास्त्र की अच्छी शिक्षा मिली। गोविन्दराय तीर चलाने की कला में पूर्ण निपुण हो गये। वे बचपन से ही निडर और वीर थे और युद्ध-सम्बन्धी खेल उन्हें बहुत प्रिय थे। वे वच्चों की टोलियां बनाकर उन्हें परेड कराते तथा उन्हें युद्ध के खेल खिलाते। बालक गोविन्दराय को देखकर लोग यही कहते थे कि गुरुजी का यह वीर पुत्र उनके नाम को उज्ज्वल करेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १६७५ में जब गुरु तेगबहादुर, सम्राट औरंगजेब की धर्मान्धता के कारण शहीद हुए, तब गोविन्दराय केवल नौ वर्ष के थे। उनके हृदय पर पिता के बध का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। तभी से उनके मन में, जर्जर समाज को सुसंगठित करके, अत्याचार के विरुद्ध मोर्चा लेने के विचार आने लगे। कालान्तर में उन्होंने खालसा पन्थ का निर्माण कर अपने उद्देश्य को अद्भुत शक्ति और चमत्कार से पूरा किया। धर्म के लड़खड़ाते पैरों को उन्होंने बल दिया और उसकी रक्षा तथा संवर्द्धन का सफल प्रयास किया।

खालसा पन्थ के निर्माण की कहानी बड़ी रोमांचकारी है। सन् १६६६ में वैशाखी के दिन गुरु गोविन्दसिंह ने आनन्दपुर के समीप केसगढ़ में एक वृहत दरबार का आयोजन किया जिसमें दूर-दूर से आये हुए उनके बहुत से शिष्य सम्मिलित हुए। वातावरण में बड़ी निराशा और चिन्ता थी। सभी सिक्ख गुरु के आने की बड़ी उत्कंठा से प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने में नंगी तलवार लिये वीर वेश में गुरु गोविन्दसिंह आ उपस्थित हुए। उनके मुखमंडल पर अपूर्व तेज था। तलवार को घुमाते हुए वे कड़क कर बोले—"आप जानते हैं कि हम आज यहाँ क्यों एकत्र हुए हैं। हम पर जो अत्याचार हो रहे हैं उनसे आप भली भाँति परिचित हैं। सहन की भी एक सीमा होती है। अब समय आ गया है कि हम डटकर इन अत्याचारों का सामना करें। इसके लिए बलिदान करने होंगे। बोलो अपना शीश अर्पित करने के लिए कौन प्रस्तुत है?"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह सुनकर सारी सभा स्तब्ध रह गयी और चारों ओर सन्नाटा छा गया। अन्त में दयाराम नाम का एक व्यक्ति उठकर खड़ा हुआ और गुरु के चरणों में नतमस्तक होकर बोला—"गुरु जी। मेरा सिर सेवा में अर्पित है।" गुरु गोविन्दसिंह उस व्यक्ति को पास के खेमे में ले गये। थोड़ी देर में खच की आवाज हुई और खेमे की नाली से रक्त की धारा बह निकली। रक्त रंजित तलवार लेकर गुरुजी ने फिर दरबार के सामने बलिदान का वही आह्वान दुहराया। एक और वीर आगे बढ़ा। गुरु जी उसको भी खेमे के अन्दर ले गये और रक्त की धारा फिर बाहर आयी। इस प्रकार गुरु ने पाँच वीर छाँटे।

वीरों के बलिदान से सभा आतंकित थी। पर लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही, जब उन्होंने देखा कि गुरु जी उन पाँचों वीरों के साथ खेमे से बाहर आ रहे हैं। गुरुजी ने उन्हें सुसज्जित कर रखा था। उन वीरों के मुख-मंडल पर अपूर्व तेज था। उन्हें देखकर सभा जय जयकार करने लगी। गुरु जी ने पाँचों वीरों को अपने पास बैठाकर घोषणा की कि मुझे पाँच सच्चे वीर मिल गये हैं। गुरु ने इन पाँच वीरों को 'पंच प्यारे' के नाम से सम्बोधित किया और उनको 'खंडे का अमृत' पिलाकर दीक्षा दी और कहा—"तुम में ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं, मुझमें और तुममें भी कोई अन्तर नहीं। तुम केश, कच्छ, कंघा, कड़ा और कृपाण धारण करना और संयम से रहकर धर्म के लिए मर मिटने को तत्पर रहना।" उन्होंने उनसे, 'वाहि गुरुजी का खालसा', 'वाहि गुरुजी की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शीश की माँग करते हुए गुरु गोविन्दसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

फतह' कहलाया और अपने धर्म का नाम 'खालसा' रखा। तत्पश्चात गुरु ने इन पंच प्यारों से स्वयं दीक्षा ली और अमृत पान किया। इस प्रकार गुरु को खालसा तथा खालसा ही को गुरु बनाकर उन्होंने हमारे सामने 'आपे गुरु चेला' का अलौकिक आदर्श उपस्थित किया।

'अमृत' तैयार करते समय जब जल को खंडे तथा पवित्र वाणी से गुरुजी अभिषिक्त कर चुके तब साहब देवाँ जो उनकी धर्म पत्नी और खालसा की आध्यात्मिक माता थीं, बताशे लेकर उपस्थित हुईं। गुरुजी ने उनका स्वागत करते हुए कहा—"देवि, तुम बड़े शुभ मुहूर्त में पधारी हो। इस समय तुम्हारी ही आवश्यकता थी। अमृत तैयार है। इसमें असीम ओज, पौरुष और साहस कूट-कूट कर भरा है, परन्तु इसमें उस मिठास का अभाव है, जिसके बिना बल और साहस भयावह सिद्ध होंगे। अब इन बताशों से इसमें मिठास का समावेश करो जिससे इस अमृत से खालसा की आत्मा में मृदुलता, मधुरता और नारी सुलभ कोमलता का भी आविर्भाव हो। इस मिठास से पारस्परिक प्रेम की वृद्धि होगी एवं पन्थ सुसंगठित तथा दृढ़ बनेगा।"

अमृतपान करने पर खालसा के सदस्यों के नाम के अन्त में 'सिंह' लगने लगा। गुरु का नाम भी 'गोविन्दराय' से 'गोविन्दसिंह' हो गया। गुरु के अमृत में निहित दैवी-शक्ति ने सिक्खों का नाम वाह्य रूप में ही नहीं बदला, वरन उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व में सिंहत्व का संचार कर दिया और प्रत्येक सिक्ख वीर को सवा लाख सैनिकों के बराबर बना दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुरु की बढ़ती हुई शक्ति से आस-पास के पर्वतीय राजाओं को ईर्ष्या होने लगी। खालसा वीरों से कई बार हार खाकर उन्होंने औरंगजेब को खालसा के विरुद्ध उकसाया। मुगल सेना ने आनन्दपुर का गढ़ घेर लिया। मुट्ठी भर सिक्ख प्राणों की बाजी लगाकर उस विशाल वाहिनी से भिड़ गये। महीनों युद्ध चलता रहा। जब कभी खालसा सैनिक अकस्मात टूट पड़ते, मुगलों को छठी का दूध याद आ जाता। अन्त में भोजन सामग्री घटने पर कुछ वीरों ने गुरु से गढ़ छोड़ देने का आग्रह किया। गुरु न माने। पहले चालीस सिक्ख और तत्पश्चात कुछ और भी अपना त्याग-पत्र देकर चले गये। इधर मुगलों ने भी कहला भेजा कि यदि गुरु किला छोड़ दें तो युद्ध बन्द कर दिया जायगा। गुरुजी परिस्थिति की विषमता देख कर किला छोड़ने को तैयार हो गये।

परन्तु औरंगजेब ने विश्वासघात किया। किला छोड़ कर खालसा बीर जब बाहर निकले तब मुगल सेना ने उन पर आक्रमण कर दिया। असहाय अवस्था में भी सैकड़ों का संहार करते हुए खालसा वीर सरसा नदी की ओर बढ़ने लगे। गुरुजी ने बड़ी कठिनाई से सरसा नदी पार की। इस बीच उनकी माता और दो छोटे पुत्र जुझारसिंह और फतेहसिंह उनसे बिछुड़ गये और मुगलों के हाथ पड़ गये। सरहिन्द के नवाब ने इन सुकुमार बालकों को जीवित ही दीवार में चुनवा दिया। बालकों ने मर मिटना स्वीकार किया परन्तु धर्म की आन न छोड़ी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु गोविन्दसिंह मुगल सेना से बचते हुए चमकोर नामक स्थान में पहुँचे। वहाँ वे विपक्षी सेना से घिर गये। बड़े पराक्रम और शौर्य के साथ उन्होंने आत्म-रक्षा की। उनके दो बड़े पुत्र अजीतसिंह और जोरावरसिंह ने सैकड़ों शत्रुओं का संहार करते हुए वीरगति प्राप्त की।

चमकोर छोड़कर गुरु और आगे बढ़े। गनी खाँ और नबीखाँ नाम के उनके दो मुसलमान भक्तों ने मुगल सेना को चकमा देते हुए उन्हें सुरक्षित स्थान में पहुँचाया।

अन्त में खिदराना के पास वन में गुरुजी रहने लगे। सरहिन्द के नवाब वजीर खाँ को जब इसका समाचार मिला तो उसने गुरु को पकड़ने के लिए अपार सेना भेजी। उधर उन चालीस सिक्खों को बड़ी ग्लानि हुई जो आनन्दपुर में गुरु को छोड़कर चले गये थे। वे अब क्षमा-याचना करने गुरु की शरण में आ रहे थे। उन्होंने जब वजीर खाँ की सेना देखी तो गुरु की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा मोरचे पर डट गये और घमासान युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने गुरु का बाल बाँका न होने दिया। इस युद्ध में लगभग तीन हजार तुर्क भी काम आये। गुरु ने खिदराना के ताल का नाम 'मुक्तसर' रखा और इन चालीस वीरों को 'मुक्त' की उपाधि देकर इन्हें अमर कर दिया। आज भी प्रत्येक सिक्ख अपनी दैनिक वन्दना में इन "चाली मुक्ते" का बड़े आदर से स्मरण करता है। प्रत्येक वर्ष पहली माघ को देश के कोने-कोने से इस स्थान पर सिक्ख एकत्र होते हैं और इन शहीदों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु गोविन्दसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वीरता की पुण्य स्मृति में इस सरोवर में स्नान करते हैं।

कुछ समय पश्चात औरंगजेब ने भी गुरु गोविन्दसिंह को सम्मानपूर्वक बुलवा भेजा। किन्तु उन्होंने स्पष्ट कहला दिया कि हमको तुम्हारे वचनों का विश्वास नहीं। हमारा उद्देश्य महान एवं पवित्र है। हम अब भी विजयी हैं, सत्य का पलड़ा सदा ऊँचा रहेगा। औरंगजेब को लिखा गया गुरु जी का यह पत्र, जफरनामा के नाम से प्रसिद्ध है।

कुछ दिनों के बाद औरंगजेब की मृत्यु हो गयी और उसके पुत्र मुअज्जम और आजम में राज्य के लिए युद्ध ठन गया। मुअज्जम के एक विद्वान सेवक नन्दलाल ने जो गुरु का प्रशंसक और भक्त था, गुरु को सहायता के लिए बुला भेजा। गुरु ने जाकर मुअज्जम के विरोधी भाई आजम को मौत के घाट उतारा। मुअज्जम ने प्रसन्न होकर गुरु का बड़ा सम्मान किया। गुरु ने चाहा कि उनके निरीह बच्चों की हत्या से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्ति उन्हें सौंप दिये जायँ। मुअज्जम ने उनकी इस प्रार्थना की उपेक्षा की। इस पर गुरु ने उसका साथ छोड़ दिया और दक्षिण में जाकर भजन-पूजा करने लगे। वहाँ गोदावरी तट पर उनकी भेंट लक्ष्मणदेव वैरागी से हुई जो पहुँचे हुए विद्वान और वीर पुरुष थे। गुरु की विपत्तियों का हाल जानकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ। उन्होंने गुरु का शिष्यत्व स्वीकार किया, अपना नाम बन्दा वैरागी रखा तथा गुरु की सहायता के लिए सेना का संगठन किया। इसी बन्दा वैरागी ने गुरु के पुत्रों की निर्मम हत्या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करने वाले सरहिन्द के शासक का अन्त किया।

गुरु की मृत्यु के विषय में प्रचलित अनेक किंवदन्तियों में सबसे विश्वसनीय यह है कि सरहिन्द के नवाब ने विश्वास-घात के साथ उनका अन्त करने के लिए एक पठान भेजा। उसने अवसर पाकर अपने दो साथियों की सहायता से सोते समय गुरु के वक्षःस्थल में तलवार का भीषण आघात किया जिससे कुछ दिनों के उपरान्त उनकी लोक-लीला समाप्त हो गयी। उन तीनों हत्यारों को गुरु और उनके शिष्यों ने तत्काल मौत के घाट उतार दिया था। मृत्यु के पूर्व गुरु ने 'ग्रन्थ साहब' के आगे पाँच पैसे और नारियल रखकर मस्तक नवाया और सदैव के लिए ग्रन्थ साहब को ही गुरु मानने का आदेश किया। इसके उपरान्त उन्होंने अपने शिष्यों से कहा—"मेरे इस भौतिक शरीर के विनाश पर तुम लोग विलाप न करना वरन मेरे जीवन के उच्चादर्शों को स्मरण करके स्फूर्ति-लाभ करना। जब तुम्हें पथ-प्रदर्शन की आवश्यकता हो तब तुम शुद्ध हृदय से गुरु ग्रन्थ साहब का आश्रय लेना।" उन्होंने यह भी कहा कि मेरे लिए किसी स्मारक का निर्माण न किया जाय।

गुरु गोविन्दसिंह के धार्मिक विचार बड़े उदार थे। वे मनुष्य-मात्र के प्रति प्रेम, सहिष्णुता और उदारता का भाव रखते थे। उनकी दृष्टि में ईश्वर-पूजन का सबको समान रूप में अधिकार था। धैर्य तथा आशावाद उनके मूल-मन्त्र थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब उनके पिता गुरु तेग बहादुर ने अपना अन्त समय निकट जानकर पुत्र की परीक्षा लेने के विचार से दिल्ली के बन्दीगृह से यह सन्देश भेजा,

बल छुटक्यों बन्धन परे, कछू न होत उपाए।
कहु नानक अब ओट हरि, गज ज्यौं होहु सहाए।

तब गुरु गोविन्दसिंह ने जो उत्तर भेजा उससे ज्ञात होता है कि वे कितने साहसी और आशावादी थे--

बल होया बन्धन छुटे, सब किछु होत उपाए।
नानक सब किछु तुमरें हाथ में, तुम्ह ही होत सहाए।

गुरु गोविन्दसिंह का यही एक 'सलोक' गुरु ग्रन्थ साहब में संगृहीत है।

अपूर्व त्याग, तपस्या, सेवा तथा शौर्य के कारण गुरु गोविन्द सिंह का नाम अमर है।

अध्ययन

प्रश्न

१. गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा पन्थ के पाँच वीरों का चुनाव किस प्रकार किया?
२. गुरु गोविन्दसिंह ने खालसा पन्थ की स्थापना के समय अपने अनुयायियों को क्या उपदेश दिये?
३. गुरु गोविन्दसिंह ने सिक्ख जाति को सैनिक जाति में परिवर्तित करने की आवश्यकता क्यों समझी?
४. गुरु गोविन्दसिंह की मृत्यु किस प्रकार हुई?
५. गुरु गोविन्दसिंह में कौन-कौन सी मुख्य विशेषताएं थीं?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. तेजस्वी शब्द की रचना पर ध्यान दो और देखो कि मूल शब्द से इसके रूप और अर्थ में क्या परिवर्तन हो गया है। निम्न-लिखित शब्दों से इसी प्रकार के शब्द बनाओ और उनके अर्थ लिखो—

ओज, मन, यश, तप।

२. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

नीतिज्ञ, तत्काल, निर्मम।

आदेश

गुरु गोविन्दसिंह का विस्तृत जीवन चरित अपने पुस्तकालय से प्राप्त करके पढ़ो।

टिप्पणी

अनुचर=अनुगामी, सेवक । विषम=कठिन, कष्टदायक। जर्जर=निर्बल । प्रतिशोध=बदला । खंडे का अमृत=वह पेय जिससे गुरु ने खालसा को दीक्षा दी। (एक पात्र में जल रखकर गुरु ने उसमें अपना दुधारा कृपाण फेरते हुए पंचवाणी का उच्चारण किया। पंचवाणी में गुरुनानक की 'जयन्ती साहब', गुरु अमरदास का 'अनन्द साहब' और गुरु गोविन्दसिंह के 'जाप साहब', 'दस सवैये' तथा 'चौपाई' सम्मिलित हैं।) खालसा—खालिस, पवित्र दीक्षा प्राप्त सिक्ख। वाह गुरुजी की फतह=खालसा का स्वामी परमेश्वर है, उसकी विजय हो। [इन शब्दों से सिक्ख परस्पर अभिवादन करते हैं। यह उनका रणनाद (नारा) भी है।]

आनन्दपुर=सतलज नदी के तट पर वर्तमान नांगल बाँध के समीप दक्षिण पूर्व की ओर गुरु तेग बहादुर द्वारा बसाया हुआ नगर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खिदरना=यह स्थान फिरोजपुर जिले में है और अब इसका नाम मुक्तसर है।

बल छुटक्यो......होहु सहाए=मेरी शक्ति क्षीण हो गयी है, बन्धन में पड़ा हू। अब भगवान का ही सहारा है। जैसे उन्होंने ग्राह से गज ो छुड़ाया था, वैसे ही मुझे छुड़ाएँ।

बल होया..... होत सहाए=बल होने से सब बन्धन छूट जाते हैं और सब उपाय सम्भव हैं। नानक साहब कहते हैं, हे भगवान सब कुछ तुम्हारे हाथ में है और तुम्हीं सहायता करते हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२४

बसन्त

[बसन्त को ऋतुराज कहा जाता है। उसके आगमन से प्रकृति में चारों ओर उत्फुल्लता छा जाती है। प्रस्तुत कविता में कवि ने बसन्तागमन के अवसर पर दिग्दिगन्त में व्याप्त इसी भाव का अंकन किया है।]

बीत गया है ताप शीत का,
आतप हुआ सघन है,
दिग्दिगन्त के बन्ध खुल गये,
निर्मल धरा, गगन है।

कुंज - कुंज में, गली - गली में
महक उठी अमराई
विहगों के कोमल कंठों ने
वंशी मधुर बजाई।

सतरंगी परिधान पहन कर
नन्दित हुई धरा है,
किसके अभिनन्दन में जग का
आंगन हरा - भरा है!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फूलों के छन्दों में किसके
गाता गीत गगन है?
कण - कण में चेतना नयी है,
तृण - तृण हुआ मगन है।

मलय गन्ध है, कोमल कलियाँ
दीपक - शिखा जलाये,
तरु - तरु की डाली - डाली ने
बन्दनवार सजाये,

सजी आरती, किसका पूजन,
किसका अभिनन्दन है?
किसके हित धरती का अंचल
अमरों का नन्दन है?

अध्ययन

प्रश्न

१. शीत का ताप बीत जाने से कवि का क्या तात्पर्य है?
२. बसन्त के आगमन पर कवि ने प्रकृति में किन-किन परिवर्तनों का उल्लेख किया है?
३. इस कविता में बसन्त के किन दृश्यों का वर्णन है? बसन्त ऋतु की कुछ अन्य विशेषताएं भी बताओ?
४. बसन्तकालीन धरती को 'अमरों का नन्दन' क्यों कहा गया है?

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(क) सतरंगी परिधान पहन कर नन्दित हुई धरा है।
(ख) फूलों के छन्दों में किसके गाता गीत गगन है?
(ग) कण-कण में चेतना नयी है।

२ 'कण-कण में चेतना नयी है' इस पंक्ति में 'कण' दो बार आया है। पर दूसरी बार आने पर इसके अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जैसा यमक अलंकार में होता है। इस प्रकार शब्दों की पुनरुक्ति मात्र से भी पंक्तियों में नाद सौन्दर्य आ जाता है। इस कविता में से ऐसे शब्दों का चयन करो जिनके दोबारा आने पर उनमें अर्थ-परिवर्तन नहीं हुआ है।

आदेश—इस कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

ताप=कष्ट । आतप=गर्मी । परिधान=वस्त्र । नन्दित=आनन्दित । अमरों=देवताओं । नन्दन=नन्दन वन, इन्द्र की वाटिका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२५

वीर बालक

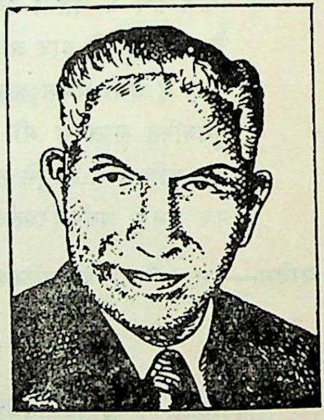

[तैमूर का आक्रमण मध्ययुगीन भारतीय इतिहास की एक प्रसिद्ध घटना है। प्रस्तुत पाठ इसी घटना पर आधारित । पा में यह दिखाया गया है कि एक बालक की निर्भीकता और वाक्-चातुरी किस प्रकार तैमूर जैसे क्रूर एवं निर्मम आक्रान्ता को भी प्रभावित कर लेती है और तैमूर उसके सामने स्वयं अपनी पराजय स्वीकार करता है। पाठ के लेखक डा० रामकुमार वर्मा हिन्दी प्रसिद्ध नाटककार हैं।]

पात्र

तैमूर —सन् १३६८ में भारत पर आक्रमण करने वाला मंगोल आक्रमणकारी।

जफर अली—तैमूर का सरदार

अलीबेग —तैमूर का सिपाही। कुछ ग्रामीण

कल्याणी —एक ग्रामीण स्त्री।

बलकरन —कल्याणी का पुत्र

(कल्याणी अँगीठी के पास बैठी हुई कोयले डालकर आग तेज कर रही है। साथ ही एक गीत गुनगुनाती जा रही है। उसका लड़का बलकरन तख्त पर बैठा एक पत्थर के टकड़े पर अपना चाकू तेज कर रहा है।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलकरन—(चाकू तेज करते हुए) माँ, यह तुम...क्या गुनगुना रही हो? इस पत्थर पर मेरा चाकू मानो तेज नहीं हो रहा है।

कल्याणी—क्या तेरा चाकू भी मेरा गाना सुन रहा है? (पास आकर मोढ़े पर बैठते हुए) पर आज चाकू तेज करने की तुझे क्यों सूझी? आज तो तेरी वर्षगाँठ है।

बलकरन—वर्षगाँठ ? मेरी वर्षगाँठ पर तो हथियारों की पूजा होनी चाहिए माँ, पूजा। हाँ तो माँ, क्या यह वर्षगाँठ वैसी ही होगी जैसे पारसाल हुई थी? (चाकू रोक देता है।)

कल्याणी—हाँ, बिलकुल वैसी ही। इस वर्षगाँठ पर तू पूरे बारह वर्ष का हो गया। बेटा, मैं तुझे आशीर्वाद देती हूँ कि इसी तरह तेरी बहुत सी वर्षगाँठें मनायी जायँ। तू दिन दूना रात चौगुना बढ़े।

बलकरन—माँ, बताओ, आज वर्षगाँठ में क्या-क्या करोगी?

कल्याणी—क्या करूँगी? अपने प्यारे बेटे को नहलाऊँगी, चन्दन लगाऊँगी, फूलों की माला पहनाऊँगी। फिर आज मैंने तेरे लिए बहुत अच्छी-अच्छी मिठाइयां बनायी हैं। देख उस कोने में रखी हुई हैं। मिठाइयों के साथ खीर खिलाऊँगी और तुझे असीस दूंगी।

बलकरन—पर माँ, मेरे साथ तुझे भी खाना पड़ेगा। तुझे भी अपनी वर्षगाँठ आज ही मनानी पड़ेगी, अभी ही, मेरे साथ। मैं अकेले इतनी मिठाइयां नहीं खा सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कल्याणी—तेरे खाने के बाद खा लूंगी। बस दूध भर आ जाय। खीर बनने में देर ही क्या लगती है?

बलकरन—अभी दूध नहीं आया?

कल्याणी—सूरज चढ़ आया, अभी तक सुजान दूध लाया ही नहीं। जाने क्यों नहीं लाया।

बलकरन—मैं ले आऊँ?

कल्याणी—सुजान आता होगा बेटा, तू कहाँ जायगा।

बलकरन—सुजान का घर है ही कितनी दूर। रास्ते से हटकर उत्तर की तरफ है न? उस शीशम के पेड़ के नीचे ही तो उसकी झोपड़ी है। मैं अभी ले आऊँगा।

कल्याणी—तू ऐसी बातें करता है तो जा। पर जल्दी ही लौटना। आज तेरी वर्षगाँठ है।

बलकरन—मैं अभी लौट कर आया। (उठता है) मुझे एक बरतन दे दो। और—यह चाकू अब काफी तेज हो गया है, इसे मैं अपने पास रखूंगा।

कल्याणी—चाकू तेरे किस काम आयेगा? अच्छा, यह ले बरतन (बरतन देती है) पर जल्दी ही लौटना।

बलकरन—अच्छा माँ, मैं अभी आया (प्रस्थान)।

कल्याणी—(बलकरन की ओर देखती हुई) मेरा भोला बच्चा, अभी से कैसी वीरता की बातें करता है। (सन्तोष की सांस लेकर) बलकरन—मेरा बेटा। (अँगीठी के पास आकर आग ठीक करती है) मेरा साहसी बच्चा, (फिर आग ठीक करती है। थोड़ी देर तक स्तब्धता रहती है। फिर भयानक शोर और भगदड़। कल्याणी झिझक कर खिड़की से बाहर देखने लगती है। शीघ्रता से एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दू ग्रामीण प्रवेश करता है।)

हिन्दू ग्रामीण—(घबराये हुए स्वरों में) तुरक आ गया, भागो, भागो, तुरक आ गया, तुरक! भागो!!

कल्याणी—(आगे बढ़कर) पागल हो गये क्या? तुरक कहाँ से आ गया?

हिन्दू ग्रामीण—नहीं-नहीं तुरक आ गया। सबको लेकर जंगल में छिप जाओ, वह आ रहा है। (भाग जाता है।)

(फिर भगदड़ की आवाज)

कल्याणी—यह भगदड़ कैसी मच रही है? (आगे बढ़ती है।)

(एक मुसलमान ग्रामीण का प्रवेश)

मुसलमान ग्रामीण—बहिन, भाग चलो, जल्दी, जल्दी। वह तैमूर आ गया। मैंने अपनी आँखों से देखा है। लूटते हुए आ रहे हैं वे लोग। हम लोग तो मरे—चलो बहिन!

कल्याणी—अरे कैसा तैमूर, कहाँ का तैमूर?

मुसलमान ग्रामीण—(नेपथ्य की ओर देखते हुए) तुम नहीं चलोगी? अरे वह आया।

कल्याणी—तैमूर कौन? (पुकार कर) बलकरन, ओ बलकरन! (भगदड़ की आवाज)

(दूसरे हिन्दू ग्रामीण का प्रवेश)

दूसरा हिन्दू ग्रामीण—बहिन कल्याणी, सबको छोड़कर जल्दी से भागो, तभी जान बचेगी। जंगल में छिप जाओ, नहीं तो घर के तलघर में ही चलो। चलो मेरे साथ, समय नहीं है।

कल्याणी—(घबराहट से) बलकरन दूध लेने गया है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुजान के घर।

हिन्दू ग्रामीण—सुजान के घर? तब तो बहुत अच्छा है। उसका कुछ न बिगड़ेगा। सुजान का घर खास रास्ते से हटकर कोने में है। वे लोग सीधे रास्ते से ही चले आ रहे हैं।

कल्याणी—कौन-कौन आ रहा है?

हिन्दू ग्रामीण—तुरक, तैमूर तुरक आया है, बड़ी भारी फौज लिये हुए है।

कल्याणी—(डाँटकर) तैमूर तुरक? बड़ी भारी फौज?

हिन्दू ग्रामीण—हाँ, अब समय बिलकुल नहीं रहा। बलकरन का कुछ न होगा। तुम जल्दी से चलकर तलघर में छिप जाओ।

कल्याणी—नहीं, बलकरन को आने दो। मैं बलकरन क बिना नहीं जाऊँगी। (पुकारती है) बलकरन, बलकरन।

मुसलमान ग्रामीण—बहिन चुप रहो। तुरक सुन लेगा, चलो, जल्दी चलो। (कल्याणी का हाथ पकड़ कर ले जाता है) (बल-क-र-न की ध्वनि धीरे-धीरे शान्त हो जाती है। स्तब्धता, फिर भगदड़, तैमूर के सैनिकों का तलवारों सहित प्रवेश, घर की तलाशी और सामानों की तोड़-फोड़। सैनिकों के सरदार जफर अली का अधिक उत्तेजित होना।)

जफर अली—कोई नहीं, कमबख्त सब भाग गये।

एक सैनिक—(तख्त के नीचे झाँककर) यहाँ भी कोई नहीं है।

जफर अली—मुबारक। इस वक्त आदमियों को कत्ल करने का हमारा उतना उद्‌देश्य नहीं है जितना सोना-चांदी लूटने का। इस घर में देखो कहीं कुछ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुबारक——(इधर उधर ढूंढ़ते हुए) कहीं कुछ नहीं है सरदार। मामूली सी झोपड़ी है, यहाँ सोना-चाँदी कहाँ।

जफर——मूर्ख हो तुम! इन तस्वीरों को पलटो, इनके पीछे दीवारों में कुछ होगा। ये लोग अपना सोना-चाँदी दीवारों में रखते हैं। (मुबारक और उसका साथी अलीबेग तलवार से तस्वीरों को उलटते पलटते हैं।)

अलीबेग——कहीं कुछ नहीं है सरदार।

मुबारक——सरदार! अगर सोना-चाँदी इन लोगों के पास होगा भी तो वे लोग उन्हें अपने साथ लेकर भाग गये होंगे।

जफर——देखो, उस कोने में क्या है?

अलीबेग——कुछ बरतन मालूम होते हैं, सरदार। (बरतनों के पास जाकर उन्हें खोलता है।) सरदार, हैं, ये हैं।

जफर——(हर्ष से) क्या है? सोना-चाँदी?

अलीबेग——(बरतन पास लाकर) सरदार, सोना-चाँदी ता नहीं, लेकिन उससे भी ज्यादा कीमती चीज जिसकी आपको और हमको सख्त जरूरत है।

जफर——क्या?

मुबारक——(अलीबेग के पास आकर) (छूकर) खाना। तरह-तरह की मिठाइयां! ओह (छूकर) बिलकुल ताजी, गरम।

अलीबेग——नहीं, नहीं, फेंक दो। (छूकर) अच्छा इधर लाओ।

मुबारक——सरदार! मालूम होता है जल्दी में लोग

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खाना भी न खा सके, ऐसे ही छोड़ गये।

जफर--(हाथ से छूकर) हाँ, गरम मिठाइयां हैं। लो, तुम लोग भी लो, भूखे होगे।

मुबारक—सरदार, पहले आप खायें।

जफर—मैं तो खाऊँगा ही, लो तुम भी लो। (मुबारक--को देता है) अच्छी मिठाइयां हैं (अलीबेग से)। तुम भी लो।

अलीबेग—(आगे बढ़कर हाथ फैलाते हुए।) सरदारजी तो कबूल करें। (खाते हुए) दर असल ताजी हैं। (खाते हुए)—बहुत ही जायकेदार। दो दिन से खाना नहीं मिला।

मुबारक—(सहसा) लेकिन सरदार! रुक जाइए, कहीं इन मिठाइयों में जहर न मिला हो।

जफर—बेवकूफ हो तुम। यहाँ के लोग इतने सीधे हैं कि वे ये बातें करना जानते ही नहीं, और फिर हमने अपना धावा इतनी जल्दी बोला है कि किसी को ऐसा करने का या सोचने का वक्त ही न मिला होगा।

अलीबेग—सरदार ठीक फरमाते हैं।

जफर—और फिर दो दिन बाद इतना अच्छा खाना नसीब हुआ है। अगर इसी तरह मरना है तो मिठाई खाकर क्यों न मरें।

अलीबेग—सरदार ने क्या बात कही है। मिठाई खाकर क्यों न मरें।

मुबारक—सच बात है सरदार। भूख से तो मर ही रहे हैं, फिर यह मिठाई क्यों छोड़ी जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जफर—(खाते हुए) इसीलिए मैं खा रहा हूँ। वाह! क्या कहना है! यहाँ के लोग मिठाइयां बनाना भी खूब जानते हैं।

अलीबेग—सरदार, मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि वे लोग हम लोगों के लिए ही ये मिठाइयां बनाकर छोड़ गये हैं।

मुबारक—यह कैसे?

अलीबेग—यह ऐसे कि उन्होंने समझा होगा कि मिठाइयों के खाने के बाद हम लोगों का गुस्सा कम हो जायगा और हम लूटमार कम करेंगे।

जफर—(हँसते हुए) हम लोगों का गुस्सा कम हो जायगा—हा! हा! हा! हम लूटमार कम करेंगे—हा! हा! हा! खूब कहा!

(समवेत हँसी)

(नेपथ्य में तीव्र आवाज से) चुप रहो कमबख्तो।

(तैमूर लंग का प्रवेश। वह लँगड़ाते हुए आगे बढ़ता है। उसे देखते ही सब चौंक पड़ते हैं, मिठाइयां जमीन पर फेंक कर फौजी ढंग से तनकर खड़े हो जाते हैं। सन्नाटा छा जाता है। तैमूर लंग तीनों को घूरता हुआ आगे बढ़ता है।)

तैमूर—(तीव्र स्वर में) कमबख्तो। इसी तरह तुम हिन्दोस्तान की दौलत गाजी तैमूर के खजाने भरोगे? जब तुम्हें कत्ल करना चाहिए, तब तुम आराम से तख्त पर बैठे हो? जब तुम्हें जवाहरात ढूंढना चाहिए तब तुम नाश्ता करते हो और जब तुम्हें धावा बोलना चाहिए तब तुम लोग मिलकर कहकहे लगाते हो? जवाब दो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(सब चुप रहते हैं)

तैमूर—(फिर तीव्र स्वर में) मैंने अफगानिस्तान के बाद हिन्दोस्तान पर इसलिए रुख किया था कि मेरे सिपाही दौलत लूटने के बदले आराम से खाना ढूँढ़ते फिरें? मैं बिना बताये देखना चाहता था कि तुम किस तरह मेरे हुक्म को अंजाम दे रहे हो। इसीलिए मैंने अपने सब सिपाहियों को बाहर छोड़ दिया है। तुम यहाँ मौज से खाना खा रहे हो जबकि गाजी तैमूर तीन दिन से भूखा है। मैंने तुम्हें क्या हुक्म दिया था सरदार?

जफर—(सैनिक ढंग से) यह कि आज शाम तक अमरकोट पहुँच जाना है।

तैमूर—तो अमरकोट पहुँचने का यह रास्ता है? बदबख्त। गाजी तैमूर के सिपाहियों को रास्ता दिखलाने की जिम्मेदारी किस पर है? तुम पर, और तुम ऐसा करते हुए अमरकोट का रास्ता खोजोगे?

(फिर सन्नाटा)

तैमूर—मेरे हुक्म को किसने अंजाम दिया? तुमने? तुम्हारे सिपाहियों की तलवारों पर खून का एक धब्बा भी नहीं है। तुम लोग सिपाही हो? बोलो, क्या चाहते हो? क्या खाना खाने के बाद तुम्हारे नाच-गाने का भी इन्तजाम किया जाय? खड़े क्या हो, जाओ, शाम तक अमरकोट पहुँचने का हुक्म पूरा करो। (तीव्रता से) जाओ।

(तीनों सैनिकों का शीघ्रता से प्रस्थान)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तैमूर—(स्वयं) गला सूख रहा है, तीन दिन से खाना नहीं मिला। कल से तो पानी भी नहीं नसीब हुआ। गला सूख रहा है।

(ओठ चाटता है। इधर उधर पड़े बरतनों को देखते हुए) सब खाली। कमबख्तों ने कुछ नहीं छोड़ा। लेकिन कोई बात नहीं। हमारी किस्मत में आराम कहाँ ?

(बलकरन का दूध लिये हुए प्रवेश)

बलकरन—(पुकारते हुए) माँ, माँ,। मैं दूध ले आया।

तैमूर—(चौंककर) दूध ?

बलकरन—(उजाड़ घर को देखते हुए) यह सब क्या ? (तैमूर को देखकर) ऐं! तुम कौन (पुकारता है।) माँ, माँ। (कुछ उत्तर न पाकर) मेरी माँ कहाँ है ? (तैमूर की ओर घूरते हुए) इस तरह मेरे घर में घुस आने वाले तुम कौन हो ?

तैमूर—(जोर से) खामोश। गाजी तैमूर से यह नाचीज सवाल करता है कि तुम कौन हो ? कमबख्त ! अगर बात करने की तमीज नहीं हो तो खामोश रह।

बलकरन— (धीरे से अपनी बात दुहराते हुए) गाजी तैमूर !

तैमूर—इस नाम को नहीं जानता ? दुनिया का जर्रा-जर्रा जिसके कदमों को चूम चुका है उससे सवाल करता है कि तुम कौन हो ? मेरी तलवार से पूछ। यह तेरे खून में डूब-कर तुझे मेरा नाम बतायेगी। लेकिन ठहर—यह दूध इधर ला—इसे इस वक्त मेरे लिए खुदा ने भेजा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बलकरन—यह दूध मेरी वर्षगाँठ के लिए है। इसे मैं माँ के सिवा किसी को नहीं दे सकता।

तैमूर—पर मैं इसे ले सकता हूँ। (दूध छीन कर अट्टहास करते हुए) बता, दूध मेरा है कि नहीं। अब तुझे इस तलवार से काट दूं?

बलकरन—क्या तुम खून बहाना चाहते हो?

तैमूर—तू बड़ा निडर मालूम होता है। इधर आ, मरी तलवार के सामने।

बलकरन—मेरे पास तो सिर्फ चाकू है, मुझे भी एक तलवार दो तब तो सामने आऊँ?

तैमूर—अच्छा, तू मुझसे दो हाथ लड़न का भी हौसला रखता है। पर पहले मैं दूध पिऊँगा, गला सूख रहा है।

(तख्त पर तलवार रखकर दूध पीता है। बलकरन दौड़कर तैमूर की तलवार उठा लेता है।)

तैमूर—(दूध पीकर) मेरी तलवार—

बलकरन—(वह अब मेरे हाथ में है।) अब तुम मुझसे लड़ सकते हो। सामने आओ।

तैमूर—(बालक का वाक्य दुहराते हुए) सामने आओ? शाबाश। लेकिन मेरी तलवार तुझसे नहीं...... सँभलगी बच्चे! इधर ला।

बलकरन—जैसे दूध छीन लिया था वैसे तलवार भी छीन लो।

तैमूर—छीन लूं?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

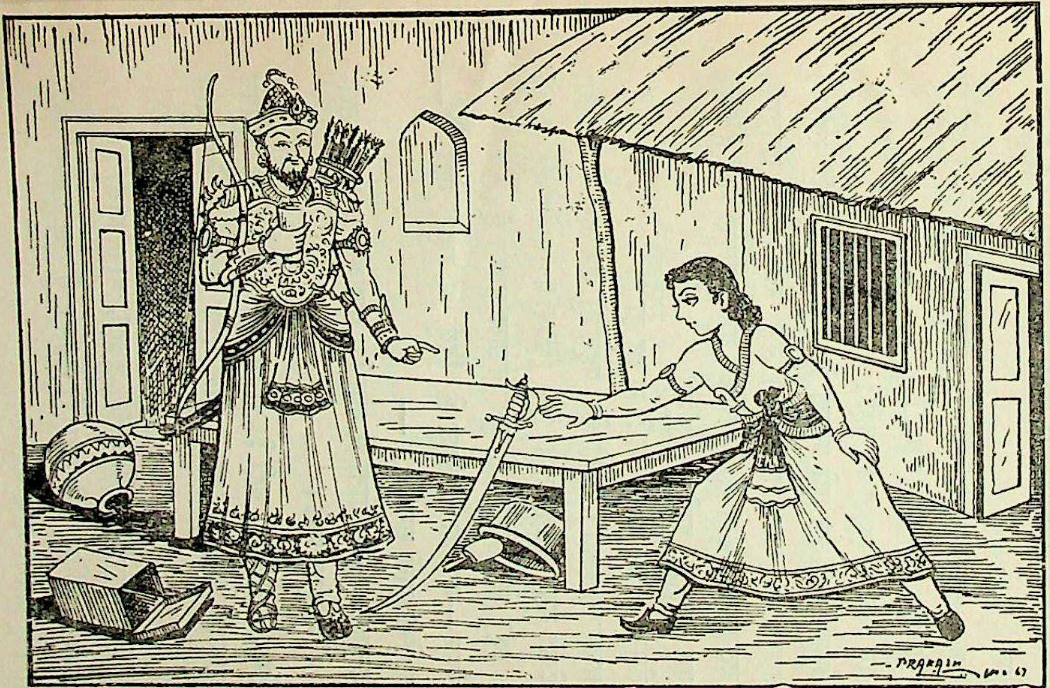

तैमूर और वीर बालक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलकरन—छीन लो, पर लड़ने वाले तलवार नहीं छीनते, वार करते हैं।

तैमूर—तेरा कहना सही है। मालूम होता है, तू बहादुर है। मेरी फौज में भरती होगा ?

बलकरन—(दृढ़ता से) नहीं।

तैमूर—तो अब तुझे ज्यादा देर तक जिन्दा नहीं रखूंगा। (पैंतरा बदल कर तलवार छीन लेता है) यह रही मेरी तलवार।

बलकरन—छीन ली ? लेकिन यह बहादुरी नहीं है। मेरे पास यह चाकू है। इसी से लड़ूंगा।

तैमूर—चाकू से लड़ेगा ? हा हा हा हा।

बलकरन—हाँ। थोड़ी देर पहले ही मैंने इसे तेज किया है। देखो यह इतना तेज है। (उँगली में चुभाकर खून की बूंदें दिखाते हुए) मेरी उँगली से खून निकाल सकता है।

तैमूर—शाबाश। तैमूर के दिल में रहम नहीं है—लेकिन तेरी बातें सुनकर मैं—

बलकरन—इन बातों से क्या ? चलाओ न अपनी तलवार। मैं भागूंगा नहीं।

तैमूर—भागेगा नहीं ? तू बहादुर शेर है। मैं तुझपर तलवार नहीं चला सकता। चाकू वाले बहादुर ! तेरा नाम क्या है ?

बलकरन—दुश्मन नाम नहीं पूछता, वार करता ह।

तैमूर—लेकिन तेरी बहादुरी देखकर मैं तुझे दुश्मन नहीं मानता। तू अपना नाम बता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलकरन—बलकरन।

तैमूर—(नाम दुहराते हुए) बलकरन! बलकरन! हिन्दुस्तान की दौलतों में तू भी एक दौलत है। बलकरन, गाजी तैमूर एहसान नहीं भूलता। जो उसकी थकावट दूर करने के लिए दूध हाजिर कर सकता है उसके खून से वह अपनी तलवार नहीं रँगेगा।

बलकरन—पर दूध तो मैंने हाजिर नहीं किया। वह तो तुमने छीन लिया था।

तैमूर—एक ही बात है। दूध मैंने तेरे ही हाथ से पाया। मैं तेरी जान बख्शता हूँ। मैं तेरी एक इच्छा भी पूरी कर सकता हूँ।

बलकरन—मुझे कुछ नहीं चाहिए।

तैमूर—नहीं, तू मेरा छोटा सा बहादुर दोस्त है। चाकू वाला दोस्त और इस हैसियत से तेरा मुझ पर हक है।

बलकरन—तो मेरी माँ कहाँ है?

तैमूर—मैं नहीं जानता। इतना कह सकता हूँ कि मेरे सिपाहियों ने यहाँ किसी को कत्ल नहीं किया क्योंकि उनकी तलवारों पर खून का एक भी धब्बा नहीं था।

बलकरन—अगर तुम मेरी इच्छा पूरी करना चाहते हो तो मैं तुमसे यह कहूँगा कि तुम मेरे गाँव से बाहर चले जाओ।

तैमूर—गाँव से बाहर चला जाऊँ! मंजूर। मैं दूसरे गाँव को चला जाऊँगा। तेरा दूध और चाकू मुझे हमेशा याद रहेगा।

बलकरन—धन्यवाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तैमूर—मैं कुछ न समझा। खैर, तैमूर की जिन्दगी में एक नयी बात हुई। तैमूर के सामने कम लोग आते हैं पर तू आया। तैमूर किसी को माफ नहीं करता। पर आज उसने तुझे माफ किया।

बलकरन—मैंने भी कुछ समझा नहीं।

तैमूर—(अट्टहास कर) तू तैमूर की बराबरी करना चाहता है। लेकिन तू उससे भी बड़ा है। तेरा चाकू उसकी तलवार से भी तेज निकला। तैमूर खूँख्वार है पर वह बहादुरी को सलाम करता है। बहादुर बच्चे को तैमूर का सलाम (फौजी ढंग से सलाम करता है।)

बलकरन—(निर्भीकता से) सलाम।

तैमूर—मैं तेरे गाँव को हाथ नहीं लगाऊँगा। सिपाहियों को हुक्म देकर वापस कर दूंगा। (हाथ उठाकर) खुदा हाफिज।

(शीघ्रता से प्रस्थान)

बलकरन—(तैमूर के जाने की दिशा में देखते हुए) तैमूर—बहादुरी को सलाम करता है। (फिर लौटकर इधर-उधर—देखते हुए) माँ—! माँ!

(कल्याणी का शीघ्रता से प्रवेश। बलकरन को हृदय से लगा लेती है।)

कल्याणी—बेटा—बेटा—बलकरन। (सिसकती है)

बलकरन—माँ। तू रोती क्यों है? तू कहाँ थी?

कल्याणी—बेटा! तैमूर के सिपाही आये थे। उनसे बचाने के लिए चौधरी दादा मुझे तलघर में खींच ले गये थे। तुझे तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कुछ नहीं हुआ ? कहीं चोट तो नहीं आयी ? (गौर से बलकरन के शरीर को देखती है।) बेटा कैसा था तैमूर ?

बलकरन—तैमूर ? सिपाही की तरह, रोबीला चेहरा, मोटे-मोटे हाथ, ऊँची नाक, हाथ में तलवार। पर मैं डरा नहीं, मेरे पास भी चाकू था जिसे मैंने सवेरे ही तेज किया था।

कल्याणी—(हँसते हुए) उसकी तलवार के सामने तेरा चाकू किस काम आता ?

बलकरन—इसी चाकू ने तो उसे चौंका दिया, माँ। मुझे वह चाकूवाला बहादुर कहता था।

कल्याणी—(आश्चर्य से) अच्छा ?

बलकरन—हाँ। मैंने उससे कहा—यह चाकू बड़ा तेज है। मैंने सवेरे ही उस पर धार रखी है। मैंने उसे अपनी उँगली चीर का दिखला दी और वह चौंक पड़ा। (उँगली दिखाते हुए) देखो, यह खून।

कल्याणी—(चीखकर) ओह, यह खून !

बलकरन—बस इसी तरह तैमूर भी चौंक पड़ा था। माँ, तैमूर कहता था—तेरा चाकू मेरी तलवार से भी तेज निकला।

कल्याणी—(प्रेम विह्वल होकर) बेटा ! तू सब तरफ से फूले-फले। तेरी उमर दिन दूनी रात चौगुनी हो। भगवान को हजार-हजार धन्यवाद है कि उसने मेरे बच्चे की तैमूर से रक्षा की।

बलकरन—यह सब तेरा ही आशीर्वाद है माँ। और—

कल्याणी—और क्या ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बलकरन—तू चन्दन लगाने के लिए कहती थी न? मेरी उँगली के खून का ही चन्दन लगा दे।

कल्याणी—उँगली के खून का तिलक लगाऊँ। यही सही मेरे लाल। वीर बालक की वर्ष गाँठ है। तेरी बारहवीं वर्ष गाँठ ऐसी ही मनायी जाय।

(कल्याणी बलकरन की उँगली से खून लेकर तिलक लगाती है। धीरे-धीरे परदा गिरता है।)

अध्ययन

प्रश्न

१. बलकरन दूध लाने के लिए माँ से आग्रह क्यों करता है?
२. ग्रामीण कल्याणी से भागने के लिए क्यों कहते हैं?
३. अलीबेग ने बढ़िया भोजन को सोना-चाँदी से बढ़कर क्यों बताया है?
४. बलकरन की निर्भीकता किन बातों से प्रकट होती है?
५. तैमूर क्यों कहता है कि तुम मुझसे भी बहादुर और बड़े हो?
६. बलकरन को पाकर कल्याणी क्यों रोने लगती है?
७. पाठ का शीर्षक 'वीर बालक' क्यों रखा गया है?
८. तैमूर के स्वभाव की क्या विशेषताएं हैं?

अभ्यास

१. निम्नलिखित के भाव स्पष्ट करो—
(क) मेरी तलवार तेरे रक्त में डूबकर तुझे मेरा नाम बतलायेगी।
(ख) हिन्दुस्तानी दौलतों में तू भी एक दौलत है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ग) तेरा चाकू तलवार से भी तेज निकला।

(घ) तैमूर बहादुरी को सलाम करता है।

२. नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। उन शब्दों के सामने हिन्दी के समानार्थी शब्द लिखो—

अंजाम देना—

नाचीज—

हैसियत—

हक—

जान बख्शना—

आदेश—१. इस पाठ का सारांश तैमूर के शब्दों में लिखो।

२. इस पाठ का अभिनय करो।

टिप्पणी

असीस = (आशीष) आशीर्वाद। स्तब्धता=सन्नाटा। तलघर= तहखाना। नसीब होना = प्राप्त होना। अट्टहास = बड़े जोर की हँसी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२६

इंजन

[इंजन आधुनिक युग का एक महत्वपूर्ण आविष्कार है। इस पाठ में इसके इतिहास एवं उपयोगिता की एक झलक दी गयी है।

इंजन से सामान्यत: रेल के इंजन का बोध होता है। परन्तु इसका उपयोग हमारे जीवन के बहुत से क्षेत्रों से होता है। तेल या भाप से चलने वाली मशीनें जिनमें आटा पीसने की चक्की, कुट्टी काटने या रुई धुनने की मशीन, नलकूपों का पम्प, खेत जोतने का ट्रैक्टर, सवारी की मोटर और सामान ढोने का ट्रक आदि हैं, इंजन से ही चलते हैं। बड़े-बड़े जहाज और वायुयान भी इंजन से चलते हैं, बिजली भी इंजन की सहायता से उत्पन्न की जाती है। इंजन विभिन्न शक्ति के बनाये जाते हैं और जितनी शक्ति की आवश्यकता होती है उसके अनुसार ही न्यूनाधिक शक्ति वाले इंजन काम में लाये जाते हैं।

इंजन के आविष्कार के पहले मनुष्य पशुओं की शक्ति का उपयोग करता था। इसलिए हम इंजन की शक्ति को भी पशु की शक्ति से ही नापते हैं। भारत में पहले शक्ति को हाथी की शक्ति से नापते थे। प्रसिद्ध है कि बालि और सुग्रीव में साठ-साठ हजार हाथी की शक्ति थी और भीम में दस हजार हाथी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की। आजकल इंजन की शक्ति नापने के लिए अश्व-शक्ति का ही प्रयोग होता है, और हम कहते हैं कि अमुक इंजन की शक्ति एक अश्व शक्ति अथवा पाँच सौ अश्व शक्ति के बराबर है।

सबसे पहला इंजन भाप की सहायता से चलाया गया था। इसे इंग्लैंड निवासी न्यूकाम ने बनाया था। आधुनिक भाप के इंजन जो रेलगाड़ी में काम आते हैं जेम्स वाट की देन हैं जो स्काटलैंड का रहने वाला था। वाट का इंजन भाप से चलता था। रेल के अधिकांश इंजन अब भी भाप से ही चलते हैं।

आजकल भाप की शक्ति का उपयोग एक दूसरे ढंग से भी होने लगा है। इस प्रकार इंजन में भाप के दाब से काम न लेकर उसकी गति से शक्ति प्राप्त की जाती है। इस तरह के इंजन में पतली नली से भाप को तेजी से एक ओर निकाला जाता है। इसका फल यह होता है कि जिस दिशा में भाप निकाली जाती है उसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप, विपरीत दिशा में भी शक्ति काम करने लगती है। यदि भाप निकलने का प्रबन्ध किसी गोलाई में हो, तो जिस चक्र से भाप निकलेगी वह घूमने लगेगा। इस प्रकार घूमने वाले इंजन को 'टरवाइन' कहते हैं। भाप के स्थान पर पानी अथवा किसी तीव्र गति से निकलने वाली गैस से भी ऐसा ही काम लिया जा सकता है। क्रमशः पतली होने वाली नली एवं उससे निकलने वाली गैस की धार को 'जेट' कहते हैं। जेट विमान के इंजन इसी सिद्धान्त पर बने होते हैं। इसी कारण इस विधि से चलने वाले विमान का नाम जेटविमान पड़ गया है। दीपक या मोमबत्ती की गरमी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से पानी में चलने वाले खिलौने भी इसी सिद्धान्त के अनुसार काम करते हैं। मोमबत्ती के जलने से पैदा हुई गरम हवा एक पतली नली से, पीछे की ओर, तेजी से निकलती है और खिलौना आगे बढ़ जाता है।

पिछले पचास वर्ष के भीतर एक और प्रकार के इंजन का आविष्कार हुआ है जिसे राकेट कहते हैं। इस इंजन में ईंधन जलाने के लिए बाहर की हवा की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए यह इंजन वायुरहित अन्तरिक्ष में भी काम कर सकता है। राकेट इंजन अधिक देर तक काम नहीं कर सकते और जैसे ही ईंधन समाप्त हो जाता है, वे खाली कारतूस की तरह बेकार हो जाते हैं। राकेट इंजनों का उपयोग बम फेंकने के लिए भी किया जाता है। अन्तरिक्ष-यानों को अधिक वेग के साथ पृथ्वी से दूर फेंकने में भी, इन्हीं का प्रयोग होता है। इन्हीं के द्वारा अब चन्द्रलोक अथवा अन्य ग्रहों तक पहुँचना सम्भव प्रतीत होने लगा है।

हम जानते हैं कि संसार के सभी पदार्थ अति सूक्ष्म परमाणुओं से बने हैं। अभी कुछ वर्ष हुए वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया है कि इन परमाणुओं के तोड़ने पर बहुत अधिक शक्ति प्राप्त होती है। अब इस शक्ति से भी इंजन चलाये जाने लगे हैं।

परन्तु अधिकांश इंजनों को चलाने में, मुख्यतः कोयला, पेट्रोल और डीजल आदि ईंधनों का प्रयोग होता है जिनका कोष अक्षय नहीं कहा जा सकता। अतः प्रश्न यह है कि जब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शक्ति के ये स्रोत समाप्त हो जायँगे तब मनुष्य इंजनों को कैसे चलायेगा ? वैज्ञानिकों ने इस प्रश्न का भी उत्तर देने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया है। उनका ध्यान सूर्य द्वारा पृथ्वी पर आने वाली शक्ति की ओर गया है। वास्तव में सूर्य ही शक्ति का ऐसा भंडार है जिसकी शक्ति हमको सदैव मिलती रहेगी। वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाकर देखा है कि एक एकड़ भूमि पर प्रति घंटा सूर्य से, उतनी शक्ति प्राप्त होती है, जितनी कि एक टन कोयले को एक घंटे तक जलाने से मिलती है। यदि इस गरमी के प्रयोग से इंजन चलने लगें तो मनुष्य को अपने लिए शक्ति का अक्षय स्रोत प्राप्त हो जाय और उसकी एक बहुत बड़ी समस्या का सदा के लिए समाधान हो जाय।

आज किसी भी देश की भौतिक प्रगति में इंजन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमने भी अपने देश में कई प्रकार के इंजन बनाने के अनेक कारखाने खोले हैं। रेल के इंजन बनाने का एक बहुत बड़ा कारखाना कलकत्ते के पास चितरंजन में है जो अपने देश के महान नेता देशबन्धु चितरंजन दास के नाम पर बना है। अब इस कारखाने के पास ही सब प्रकार की सुविधाओं से पूर्ण एक नगर बस गया है जिसका भी नाम चितरंजन है। डीजल इंजन बनाने का कारखाना उत्तर प्रदेश में वाराणसी के पास मडुआडीह नामक स्थान पर सन् १९६२ में स्थापित किया गया। अणुशक्ति सम्बन्धी खोजों के लिए हमारे देश में अणुशक्ति आयोग की स्थापना स्वर्गीय डा० भाभा की अध्यक्षता में कर दी गयी थी जिसकी देखरेख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

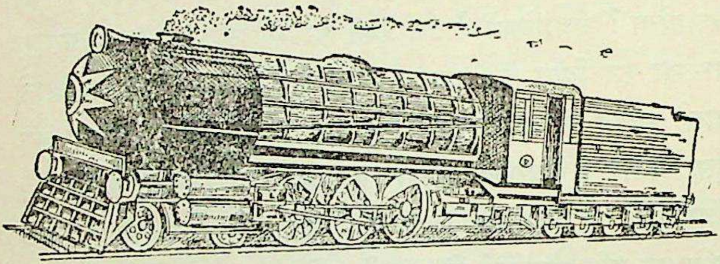

रेल का इंजन

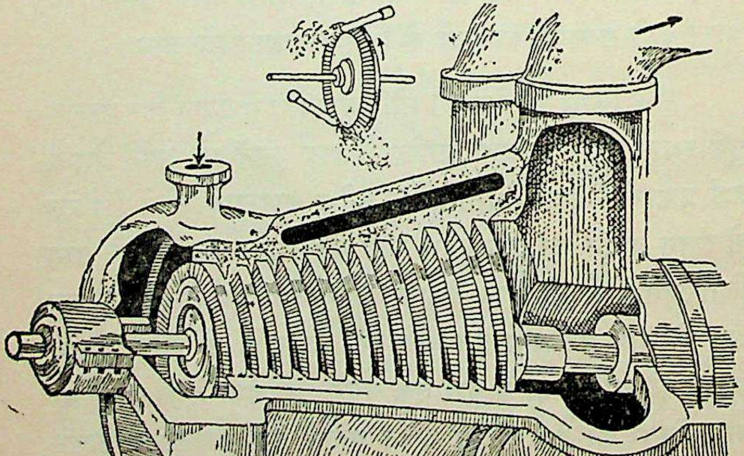

टरबाइन इंजन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में बम्बई के समीप ट्राम्बे में अणु शक्ति पैदा की जा रही है। केरल प्रदेश के थुम्बा नामक स्थान पर राकेट बनाने और छोड़ने की दिशा में भी प्रगति हो रही है। आशा है, हमारा देश विभिन्न प्रकार के इंजनों का प्रयोग करक कृषि, उद्योग, व्यवसाय के क्षेत्र में तीव्र गति से उन्नति करेगा।

अध्ययन

प्रश्न

१. इंजन का प्रयोग कहाँ-कहाँ देखने को मिलता है?
२. इंजन कितने प्रकार के होते हैं?
३. टरबाइन इंजन का क्या सिद्धान्त है?
४. जेम्स वाट का नाम क्यों प्रसिद्ध है?
५. राकेट इंजन की क्या विशषताएं हैं?
६. वर्तमान शक्ति स्रोतों के समाप्त हो जाने पर मनुष्य अपने इंजनों के लिए किस प्रकार शक्ति अर्जित करेगा?
७. हमारे देश में प्रमुख इंजन के कारखाने कौन-कौन से हैं?

अभ्यास

१. निम्नलिखित स्थलों को स्पष्ट करो—
   (क) अन्तरिक्ष यान को............प्रयोग होता है।
   (ख) वास्तव में सूर्य..........जो अक्षय है।
२. मनुष्य ने परमाणु में निहित शक्ति को पहचान लिया है। इस वाक्य में कर्त्ता के आगे 'ने' लगा हुआ है। इसकी क्रिया सकर्मक है और आसन्न भूत काल में है। पाठ १३ के अभ्यास में दिये नियम के अनुसार इसकी क्रिया का लिंग व वचन कर्म के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुसार होना चाहिए। पर इस वाक्य में ऐसा नहीं है। 'शक्ति' स्त्रीलिंग शब्द है पर 'पहचान लिया है'—पुंल्लिग है। ऐसा क्यों है? याद रखो—उपर्युक्त प्रकार के वाक्यों में कर्म के आगे 'को' विभक्ति आ जाने पर क्रिया सदैव एक वचन और पुंल्लिग में होती है।

आदेश—देश के औद्योगिक विकास के लिए इंजन की आवश्यकता पर एक लेख लिखो।

टिप्पणी

न्यूकाम=वैज्ञानिक जिसने सबसे पहलें इंजन का आविष्कार किया। ऊष्मा=गर्मी। परमाणु=किसी पदार्थ का सबसे छोटा भाग जिसके टुकड़े न हो सकें। निहित=छिपी। अश्व शक्ति=५५० पौंड वजन को एक सेकिंड में १ फुट ऊँचा उठा सकने के लिए अपेक्षित शक्ति। कुएँ से पानी निकालने वाला सामान्य पम्प दो से पाँच अश्व शक्ति तक का होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२७

सूर के पद

[महाकवि सूर के निम्न-लिखित पदों में कृष्ण की बाल लीला का वर्णन है। इनमें बाल स्वभाव का सजीव और स्वाभाविक चित्र मिलता है। सूरदास के पदों का संग्रह 'सूर-सागर' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ में हुआ है।]

(१)

खेलत स्याम ग्वालनि संग।
सुबल हलधर अरु श्रीदामा, करत नाना रंग ॥
हाथ तारी देत भाजत, सबै करि करि होड़।
बरजै हलधर, स्याम, तुम जनि चोट लागै गोड़ ॥
तब कह्यो मैं दौरि जानत, बहुत बल मो गात।
मेरी जोरी है श्रीदामा, हाथ मारे जात ॥

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उठे बोलि तब श्रीदामा, जाहु तारी मारि ।
आगैं हरि पाछैं श्रीदामा, धर्‌यो स्याम हँकारि ॥
जानिकै मैं रह्यो ठाढ़ौ, छुवत कहा जु मोंहि ।
सूर हरि खीझत सखा सौं, मनहिं कीन्हौ कोहि ॥

(२)

खेलन अब मेरी जाइ बलैया ।
जबहिं मोहिं देखत लरिकनि सँग तबहिं खिझत बलभैया ॥
मोसौं कहत तात बसुदेव कौ, देवकि तेरी मैया ।
मोल लियो कुछ दै करि तिनकौं, करि करि जतन बढ़ैया ॥
अब बाबा कहि कहत नन्द सौं, जसुमति सौं कहे मैया ।
ऐसैं कहि सब मोंहिं खिझावत, तब उठि चल्यौ खिसैया ॥
पाछैं नन्द सुनत हे ठाढ़े, हँसत हँसत उर लैया ।
सूर नन्द बलरामहिं धिर्‌यौ, तब मन हरष कन्हैया ॥

(३)

खेलत मैं को काको गुसैयाँ ।
हरि हारे जीते श्रीदामा, बरबस ही कत करत रिसैयाँ ॥
जाति-पाँति हमतें बड़ नाहीं, नाहीं बसत तुम्हारी छैयाँ ।
अति अधिकार जनावत यातें, जातें अधिक तुम्हारे गैयाँ ॥
रुहठि करै तासौं को खेले, रहे बैठि जहँ-तहँ सब ग्वैयाँ ।
सूरदास प्रभु खेल्यौइ चाहत, दाउँ दियौ करि नन्द-दुहैयाँ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४)

स्याम सखा कौं गेंद चलाई ।
श्रीदामा मुरि अंग बचायौ, गेंद परी कालीदह जाई ।।
धाइ गही तब फेंट स्याम की, देहु न मेरी गेंद मँगाई ।
और सखा जनि मोकौं जानौ, मोसौं तुम जनि करो ढिठाई ।।
जानि-बूझि तुम गेंद गिराई, अब दीन्हैं ही बनै कन्हाई ।
सूरसखा सब हँसत परसपर, भली करी हरि गेंद गँवाई ।।

(५)

रिस करि लीन्ही फेंट छुड़ाइ ।
सखा सबै देखत हैं ठाढ़े, आपुन चढ़े कदम पर धाइ ।
तारी दै-दै हँसत सबै मिलि, स्याम गए तुम भाजि डराइ ।
रोवत चले श्रीदामा घर कौं, जसुमति आगें कहिहौं जाइ ।
सखा-सखा कहि स्याम पुकार्‌यो, गेंद आपनौ लेहु न आइ ।
सूर स्याम पीताम्बर काछे, कूदि परे दह में भहराइ ।।

अध्ययन

प्रश्न

१. श्याम किन-किन ग्वालों के संग खेलते थे ?
२. खेलने से मना करने पर वे हलधर को क्या उत्तर देते हैं ?
३. कृष्ण खेलने जाने से मना क्यों करते हैं ?
४. कृष्ण का मन हर्षित कब होता है ?
५. खेल में कृष्ण के क्रोध करने पर श्रीदामा क्या कहते हैं ?
६. काली-दह में गेंद गिर जाने पर श्रीदामा कृष्ण से क्या कहते हैं ?
७. श्रीदामा के रोने पर कृष्ण उनसे क्या कहते हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित अंशों का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट करो—
(क) मोल लियो कछु दै करि तिनकौं, करि करि जतन बढ़ैया।
(ख) सूरदास प्रभु खेल्यौइ चाहत, दाउँ दियौ करि नन्द दुहैयाँ।
(ग) सूर स्याम पीताम्बर काछे, कूदि परे दह में भहराइ ।।
२. निम्नलिखित शब्दों के खड़ी बोली के रूप लिखो—
दौरि, जानि कै, बलैया, सहमि, परस्पर, भाजि।

आदेश—दूसरे और तीसरे पद को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

हलधर=कृष्ण के बड़े भाई (बलराम)। अस्त्र रूप में हल धारण करने के कारण उनका यह नाम पड़ा। श्रीदामा=कृष्ण के मित्र। कालीदह=यमुना के जल का एक भाग, जिसमें नाग रहता था और जिसके विष से जल विषैला हो गया था। फेंट=कमर में बँधा हुआ कपड़ा। पीताम्बर=पीला वस्त्र जिसे कृष्ण पहनते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२८

वन

[वन हमारे लिए सदा से महत्त्वपूर्ण रहे हैं । प्रस्तुत पाठ में वन के सौन्दर्य, उसकी उपयोगिता तथा उसके सांस्कृतिक महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है ।]

आदिम युग से ही मनुष्य का वन से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है । उस युग का मनुष्य वन की गिरि-कन्दराओं में अथवा वृक्षों पर रहता था और वन के पशुओं का आखेट करके ही जीवन-यापन करता था । धीरे-धीरे उसने खेती करना सीखा और बस्तियां बसायीं । वनों में रहकर और वन-सम्पत्ति का उपयोग करके उसने नगर-संस्कृति का विकास किया ।

भारतीय ज्ञान का सर्वोच्च विकास भी वनों में ही हुआ है । वनों में ही वैदिक ऋचाओं का सृजन हुआ और यहीं पुराणों की रचना हुई । प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों के तपस्या एवं साधना-स्थल भी वनों में ही थे । यहीं भारत के नैतिक आदर्शों का विकास हुआ और यहीं उत्कृष्ट भारतीय साहित्य की रचना हुई । हमारे अनेक साहित्यिक ग्रन्थों की प्रमुख घटनाएं भी वनों से ही सम्बन्धित हैं । वाण भट्ट ने 'हर्ष चरित' और 'कादम्बरी' में तथा कालिदास ने अपने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' में वनश्री का जो सुन्दर चित्रण किया है वह अनुपम है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन का सौन्दर्य अत्यन्त मोहक होता है। दूर-दूर तक फूलों से लदी तरुराजि, उन पर गूँजते हुए भौंरे और इधर-उधर उड़ती हुई रंग-बिरंगी असंख्य तितलियां नर्तन करती हुई दिखायी देती हैं। लम्बे-लम्बे देवदारु, चिनार, चीड़, साल और सागौन की छाया से दिन में भी अँधेरा-सा रहता है। वृक्षों से स्पर्श करते हुए मलय-पवन की सुगन्ध से वायुमंडल ओतप्रोत रहता है। वृक्षों की लम्बी-लम्बी डालियों को झुलाता हुआ मन्द पवन अठखेलियां करता है। बाँसों के झुरमुटों में पवन वंशी बजाता है। नाना प्रकार के पक्षियों के कलरव से मन मुग्ध हो जाता है। झुंड के झुंड मृग वनों में छलाँग भरते रहते हैं।

कहीं मदमस्त जंगली हाथी पेड़-पौधों को कुचलता, डालियों को अपनी सूँड़ से झकझोरता, बृक्षों के तनों को अपनी पीठ से रगड़ता, निर्भीकतापूर्वक झूमता आता दिखायी पड़ता है तो कहीं सुनायी पड़ती है सिंह की दहाड़ जिससे सारा जंगल काँप उठता है और क्षण भर के लिए पत्तियों का हिलना भी बन्द हो जाता है। हाथी का दिल भी उस दहाड़ को सुनकर दहल जाता है और वह पेड़ों को रौंदता हुआ एक ओर भाग निकलता है। कभी निस्तब्ध वन में खड़खड़ाहट होती है और वन के झुरमुट में लेटा हुआ चीता विद्युत गति से किसी भागते हुए मृग पर टूट पड़ता है और एक करुण आर्त्तनाद से जंगल गूँज उठता है।

सौन्दर्य और रोमांचकारी दृश्यों के अतिरिक्त वनों की

उपयोगिता भी कम नहीं है। वे देश की जलवायु को ठीक रखते हैं, आकाश में उड़ने वाले बादलों के टुकड़े को रोक लेते हैं जिससे वर्षा होती है। वे बाढ़ का पानी भी रोकते हैं और आँधी-तूफान की राह में रुकावट डालकर देश को नष्ट होने से बचाते हैं। रेगिस्तान के बढ़ाव को रोकने में भी वनों से बड़ी सहायता मिलती है। भवनों को बनाने के लिए विविध भाँति की अच्छी और मजबूत लकड़ी हमें वनों से ही प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त लाख, कागज बनाने की घास या लकड़ी, चन्दन, विरोजा, तारपीन तथा विविध औषधियां वनों से ही उपलब्ध होती हैं। वनों में ही कस्तूरी मृग, चमरी गाय, सिंह आदि मिलते हैं जिनसे कस्तूरी, चमर और व्याघ्र-चर्म जैसे बहुमूल्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।

जलवायु और भू-रचना की दृष्टि से संसार के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में भिन्न-भिन्न प्रकार के वन पाये जाते हैं। अधिकांश वन या तो पर्वतीय प्रदेशों में होते हैं अथवा विषुवत रेखा के आसपास, जहाँ नित्य जल बरसता है। रेगिस्तानी प्रदेशों में भी कँटीली झाड़ियों के वन मिलते हैं जिन्हें पानी की अधिक आवश्यकता नहीं होती है। जहाँ ठंडक अधिक होती है, वहाँ नुकीली पत्तियों के पेड़ होते हैं और जहाँ वर्षा अधिक होती है, वहाँ चौड़ी पत्तियों के।

सबसे घने जंगल भूमध्य रेखीय प्रदेश में पाये जाते हैं। वर्ष भर कड़ी गरमी और लगभग प्रतिदिन की वर्षा के कारण भूमध्य रेखीय जलवायु के प्रदेशों में इतने घने वन हैं कि उन्हें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार करके सूर्य की किरणें पृथ्वी तक पहुँच ही नहीं पातीं । चारों ओर से लताएं इस प्रकार घेरे रहती हैं कि उनमें प्रवेश करना असम्भव होता है । अमेरिका की अमेजन और अफ्रीका की कांगो नदी के प्रदेशों में इस प्रकार के वन पाये जाते हैं । रबर और आबनूस इन्हीं वनों से मिलते हैं । यहाँ जीव-जन्तु भी ऐसे ही होते हैं जो या तो पेड़ पर कूद-फाँद कर रह सकें अथवा अपने विशाल डील से सघन वनों में भी अपना मार्ग बना लें । इन वनों में विशालकाय अजगर भी पाये जाते हैं । जब वृक्ष से लिपटा हुआ कोई भी भीमकाय अजगर नीचे आये हुए किसी जानवर की गर्दन को, अचानक अपनी कुंडली में लपेट लेता है तब उस समय का दृश्य बड़ा रोमांचकारी होता है ।

विश्व के शीत प्रदेशों में जहाँ साइबेरिया जैसी जलवायु मिलती है और जाड़ों में कई मास बर्फ जमी रहती है, कोणधारी वन पाये जाते हैं । यहाँ के वृक्षों की पत्तियां नोकदार होती हैं, अतः इन वनों को कोणधारी वन कहते हैं । यहाँ के निवासियों का जीवन विचित्र प्रकार का है । हिम की कठोर यन्त्रणाओं को सहते हुए ये लकड़ी के लट्ठों से बने घरों में रहते हैं । समूरदार जानवरों की खालों से अपना शरीर ढकते हैं और इन्हीं का शिकार करके अपना उदर-पोषण करते हैं । यहाँ के जीव-जन्तुओं में भालू, लोमड़ी, खरगोश प्रमुख हैं, जिनका चर्म वस्त्र बनाने के लिए बाहर भेजा जाता है । कोणधारी वनों से ही ८० प्रतिशत उपयोगी लकड़ी प्राप्त होती है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत में भी हिमालय पर्वत की ३००० से ५००० फुट की ऊँचाई पर कोणदार वृक्ष चीड़ मिलता है जिससे विरोजा और तारपीन का तेल प्राप्त होता है। यहीं पर उगने वाले दूसरे वृक्ष देवदार की लकड़ी भवन-निर्माण के काम में आती है। हिमालय की निचली ढलानों तथा मध्यभारत की पहाड़ियों के शीत प्रधान भागों में सागौन के वृक्ष पाये जाते हैं जिनकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और जिस पर दीमक नहीं लगती। ब्रह्मा और मध्य भारत का सागौन प्रसिद्ध है। सागौन सौन्दर्य के लिए और साल दृढ़ता के लिए प्रसिद्ध है। उत्तरी भारत के पूरबी तथा पश्चिमी भाग में सदाबहार वन मिलते हैं किन्तु मध्यभारत तथा उत्तरी भारत के पश्चिमी भागों में प्रतिवर्ष जीर्ण पत्रों को गिराकर नूतन किसलय धारण करने वाले वन पाये जाते हैं।

आज का सभ्यताभिमानी मानव अपने को जंगली अथवा वन्य कहलाने में अपमान का अनुभव करता है तथापि वनों के प्रति उसका आकर्षण किसी भी प्रकार कम नहीं हुआ है। नगर के कोलाहलमय जीवन से जब कभी उसका मन ऊब जाता है, वह शान्ति की खोज में वन की ओर ही प्रस्थान करता है। वन की हरी-भरी मनोहारी भूमि में, पक्षियों के कलरव में, वन-जीवों के संगीत में कुछ क्षणों के लिए वह सारी राजनीति, अर्थनीति और कुटिलताओं को भुला देता है।

वनवासियों का जीवन सरल, निष्कपट और सत्यनिष्ठ होता है। प्राकृतिक सौन्दर्य में रहकर उन्होंने कला का भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विकास किया है। कुछ वनवासियों के लोकगीत और लोकनृत्य तो जगत्प्रसिद्ध हो गये हैं। प्रसिद्ध आखेटक जिम कार्बेट ने वनवासियों को सामान्य अर्थ में जंगली कहने पर बड़ी आपत्ति की है। उन्होंने 'माई इंडिया' (मेरा भारत) पुस्तक में अपने अनेक वनवासी मित्रों की सराहना की है। वनवासी बाघ को उसने अत्यन्त उदार और शूरवीर सज्जन कहा है। भूखा रहने पर भी मरे हुए पशु को वह नहीं खाता। अपने पराक्रम, पौरुष और निर्भीकता से वह जीवन-यापन करता है। एक स्थान पर जिम कार्बेट ने लिखा है कि एक नरभक्षी सिंहनी का वह तीन दिन से पीछा कर रहा था और जानता था कि वह भूखी है फिर भी उस सिंहनी ने बकरी के बच्चे को अबोध शिशु समझ कर छोड़ दिया। उसने कहा है कि वन के नियमों का पालन यदि मानव समाज भी करे तो ईर्ष्या, द्वेष और कलह से बहुत दूर हो जाय।

वन हमारे जीवन की अमूल्य सम्पदा है। अतः उनकी रक्षा और वृद्धि करना हमारा परम कर्तव्य है।

अध्ययन

प्रश्न

१. आदिम युग से मानव जीवन किस प्रकार वनों से सम्बन्धित रहा है ?

२. वनों के ऊपर नगरों का वैभव क्यों अवलम्बित है ?

३. वनों को भारतीय ज्ञान के विकास का सर्वोच्च स्थान क्यों कहा गया है ?

४. वनों से कौन-कौन सी उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५. भूमध्य रेखीय प्रदेशों के वनों की क्या-क्या मुख्य विशेषताएं हैं ?
६. शीत-प्रदेश के वन किस प्रकार के होते हैं ?
७. जिम कार्बेट ने वन-वासियों को जंगली कहने पर क्यों आपत्तिं की है ?

अभ्यास

१. निम्नांकित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करो—
सर्वोच्च, महोत्सव, महर्षि, वृक्षारोपण, सर्वोत्तम ।

२. नीचे लिखे प्रश्नों के कई उत्तर दिये हुए हैं। उनमें एक ही उत्तर ठीक है। ठीक उत्तर पर यह (√) चिह्न लगाओ।

(क) जिम कार्बेट ने वनवासी बाघ को अत्यन्त उदार और शूरवीर सज्जन क्यों बताया है—
(१) इसलिए कि बाघ वन पशुओं से भिन्नता रखता है।
(२) इसलिए कि वह पराक्रम और निर्भीकता से अपना जीवन-यापन करता है।
(३) इसलिए कि वह कभी हिंसा के लिए हिंसा नहीं करता।
(४) इसलिए कि वह पशुओं की उदारता से रक्षा करता है।

(ख) बिना वन-सम्पदा के हम नगरों की कल्पना क्यों नहीं कर सकते ?
(१) इसलिए कि वन नगरों में ही पाये जाते हैं।
(२) इसलिए कि नगर वनों के पास होते हैं।
(३) इसलिए कि नगरों के निर्माण और उपयोग की बहुत सी वस्तुएं वनों से ही मिलती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(४) इसलिए कि लकड़ी के कारखाने नगरों में ही हैं।

३. नीचे लिखे शब्दों में समास बताओ——

वन-सम्पत्ति, ऋषि-मुनि, चर्म-वस्त्र, जीव-जन्तु, गिरि-कन्दराओं, नगर-संस्कृति, साधना-स्थल, व्याघ्रचर्म, रंग-बिरंगी।

आदेश——अपने विद्यालय के वन महोत्सव पर एक निबन्ध लिखो।

टिप्पणी

उत्कृष्ट = उत्तम, श्रेष्ठ। वाणभट्ट = संस्कृत के प्रसिद्ध गद्य लेखक, जो राजा हर्ष के समकालीन थे। कलरव = मधुर स्वर। जीर्ण = पुराना। आखेटक = शिकारी। पौरुष = पराक्रम। सम्पदा = सम्पत्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—२९

सेतु बन्ध

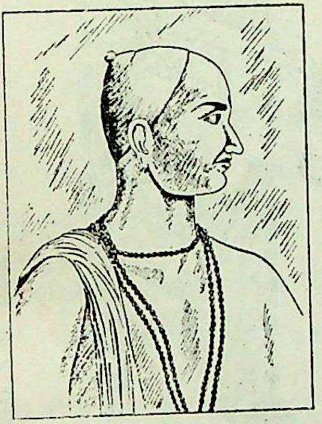

[ये पंक्तियां गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित राम-चरित मानस के सुन्दर कांड से ली गयी हैं। इनमें उस प्रसंग का वर्णन है जब लगातार तीन दिन तक अनुनय-विनय करने पर भी सागर ने राम को पार जाने का मार्ग नहीं दिया था और इस कारण राम ने उस पर अपना रोष प्रकट किया था।]

विनय न मानति जलधि जड़, गये तीनि दिन बीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति॥
लछिमन बान सरासन आनू। सोखों वारिधि बिसिख कृसानू॥
सठ सन विनय कुटिल सन प्रीती। सहज कृपिन सन सुन्दर नीती॥
ममतारत सन ग्यान कहानी। अति लोभी सन विरति बखानी॥
क्रोधिहिं सन कामिहिं हरिकथा। ऊसर बीज बए फल जथा॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा। यह मत लछिमन के मन भावा॥
सन्धानेउ प्रभु विसिख कराला। उठी उदधि उर अन्तर ज्वाला॥
मकर उरग झख गन अकुलाने। जरत जन्तु जलनिधि जब जाने॥
कनक थार भरि मनि गन नाना। विप्ररूप आएउ तजि माना॥
काटेहिं पै कदली फरै, कोटि यतन कोउ सींच।
विनय न मान खगेस सुनु, डाटेहिं पै नव नीच॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राम की विनय करता हुआ समुद्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे। छमहु नाथ सब अवगुन मेरे॥
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्हकइ नाथ सहज जड़ करनी॥
तव प्रेरित माया उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रन्थनि गाए॥
प्रभु आयसु जस कहँ जो अहई। सो तेहि भाँति रहें सुख लहई॥
प्रभु भल कीन्ह मोहिं सिख दीन्हीं। मरजादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई। उतरिहि कटकु न मोरि बड़ाई॥
प्रभु अग्या अपेलु स्रुति गाई। करउँ सो वेगि जो तुम्हहि सोहाई॥

सुनत विनीत बचन अति, कह कृपालु मुसकाय।
जेहि विधि उतरहि कपि कटक, तात सों कहहु उपाय॥

नाथ नील नल कपि दोउ भाई। लरिकाई रिषि आसिष पाई॥
तिनके परस किये गिरि भारे। तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे॥
मैं पुनि उर धरि प्रभु प्रभुताई। करिहौं बल अनुमान सहाई॥
एहि विधि नाथ पयोधि बँधाइअ। जेहि यह सुजसु लोक तिहुँ गाइअ॥
एहि सर मम उत्तर तटवासी। हतहु नाथ खल नर अघरासी॥
सुनि कृपाल सागर मन पीरा। तुरतहि हरी राम रनधीरा॥
देखि राम बल पौरुष भारी। हरखि पयोनिधि भएउ सुखारी॥
सकल चरित कहि प्रभुहि सुनावा। चरन बन्दि पाथोधि सिधावा॥

अध्ययन

प्रश्न

१. जब समुद्र ने राम की विनय स्वीकार न की तब राम ने लक्ष्मण से क्या कहा ?
२. राम के बाण का समुद्र पर क्या प्रभाव पड़ा ?
३. समुद्र ने राम से क्या प्रार्थना की ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४. राम के सम्मुख समुद्र किस रूप में उपस्थित हुआ ?

५. समुद्र ने राम की सेना को पार उतारने की क्या विधि बतायी ?

अभ्यास

१. नीचे लिखे स्थलों को स्पष्ट करो---

(क) क्रोधिहि सन कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बए फल यथा ।।

(ख) तब प्रेरित माया उपजाए । सृष्टि हेतु सब ग्रन्थनि गाए।।

(ग) प्रभु अग्या अपेलु स्रुति गाई । करहुँ सो बेगि जो तुम्हहि सुहाई ।।

(घ) यहि सर मम उत्तर तटवासी । हतहु नाथ खल नर अघरासी ।।

२. तत्सम रूप लिखो—

कृपिन, विसिख, सिख, मरजादा, रिषि, आसिष, हरखि ।

३. 'कनक' तथा 'अनल' के चार-चार पर्यायवाची शब्द लिखो ।

४. सागर के जो-जो नाम इस पाठ में आये हैं उन्हें लिखो ।

आदेश—राम-सागर-संवाद को अपने शब्दों में लिखो ।

टिप्पणी

विसिख=बाण । ममतारत=माया मोह में फँसा हुआ । अनल=अग्नि । नील-नल=दो बानर जिन्होंने समुद्र पर पुल बनाने में सहायता की थी । अपेलु=अनिवार्य, जिसकी गणना न हो सके । स्रुति=वेद ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ--३०

अनन्त आकाश

[प्रस्तुत पाठ में आधुनिकतम खोजों के आधार पर आकाश की अनन्तता का परिचय कराया गया है। पाठ के लेखक डा० कैलास नाथ उपाध्याय दिल्ली विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र के प्राध्यापक हैं।]

आकाश अनन्त है। जितने विशाल और महान की कल्पना हम कर सकते हैं आकाश उससे भी विशाल और महान है—महतो महीयान्। स्वच्छ नीलाकाश में जगमगाती हुईं असंख्य तारावलियों के सौन्दर्य को देखकर हम मुग्ध होते आ रहे हैं। इसकी अनन्तता और अन्य विस्मयकारी विशेषताओं की ओर भी मनुष्य जाने कब से आकृष्ट होता आ रहा है। इसके सौन्दर्य से विमुग्ध होकर कवियों ने भाँति-भाँति की कल्पनाएं की हैं। पर क्या हमने कभी यह भी सोचा है कि आकाश में टिमटिमाते हुए ये अगणित ज्योति बिन्दु क्या हैं और केवल रात्रि में ही आकाश को अलंकृत करने कहाँ से आ जाते हैं?

यथार्थ तो यह है कि छोटी-छोटी ज्योति की चिनगारियाँ जो हमें दिखायी पड़ती हैं उनमें से अधिकांशतः विशाल सूर्य हैं—ऐसे सूर्य जिनमें हमारे जैसे सहस्रों सूर्य समा जायँ। परन्तु वे इतने दूर हैं कि न तो हमको उनकी गरमी प्रतीत होती है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और न वे दिन के प्रकाश में हमें पृथ्वी से दिखायी ही पड़ते हैं। असंख्य रजकणों के कारण सूर्य के प्रकाश में हमारी पृथ्वी का सारा वायुमंडल आलोकित हो जाता है। इस कारण तारागण के क्षीण प्रकाश को हमारी आँखें नहीं देख पातीं। यदि हम पृथ्वी से १०० मील ऊपर पहुँच जायँ तो काले आकाश में यही तारे अधिक चमकदार रूप में हमको दिखायी पड़ेंगे। क्योंकि वहाँ सूर्य होते हुए भी रजकणों के अभाव में चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा रहता है। अन्तरिक्ष यात्रियों ने इन तारागणों को दिन में देखा भी है।

यदि हम ध्यान से देखें तो आकाश में टिमटिमाते हुए तारों की धूमिल सी एक धारा दिखायी पड़ेगी। इसे आकाशगंगा कहते हैं। आकाशगंगा में एक दूसरे से सटे हुए प्रकाश के छोटे-छोटे मेघ-खंडों को यदि हम दूरवीक्षण यन्त्र से देखें तो उनमें अलग-अलग असंख्य नक्षत्र दिखायी पड़ेंगे। ये नक्षत्र सूर्य हैं। हमारा सौर मंडल इसी आकाशगंगा के एक छोर पर स्थित है। पूरी आकाश गंगा हमको दिखायी नहीं देती। कहीं-कहीं इसमें से शाखाएं भी निकली दिखायी देती हैं। ये अन्य आकाश गंगायें हैं जो इससे भी कहीं दूर हैं और जो हमारी आकाशगंगा से कहीं अधिक बड़ी हो सकती हैं। उनका ओर-छोर कहाँ से कहाँ तक है इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

यह आकाशगंगा हमसे कितनी दूर है, इसका थोड़ा सा अनुमान कर लेना चाहिए। वैज्ञानिकों ने बताया है कि आकाशगंगा के केन्द्र से हम लोग ६००० पारसेक्स दूर हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पारसेक्स नक्षत्रीय माप की इकाई है। एक पारसेक्स पृथ्वी और सूर्य की दूरी का लगभग २०६ गुना बड़ा होता है और इकतीस हजार अरब (३,१०,००,००,००,००,०००) किलोमीटर के बराबर होता है। करोड़ों सूर्यों और महान पिंडों के बीच हमारी पृथ्वी एक छोटे से बिन्दु से भी छोटी है। फिर हमारे अस्तित्व का तो कहना ही क्या?

इन प्रकाश-पिंडों की दूरी हम एक दूसरे प्रकार से भी समझें। सूर्य से पृथ्वी तक प्रकाश आने में ८ मिनट १८ सेकेंड लगते हैं। प्रकाश की गति लगभग ३,००,००० किलोमीटर प्रति सेकेंड है। इससे अधिक तीव्रगति और किसी की नहीं है। इन नक्षत्रों का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में वर्षों लग जाते हैं। सेस्टार नामक नक्षत्र से ४३ वर्ष में पृथ्वी पर प्रकाश पहुँच पाता है। आकाशगंगा में ऐसे अनेक नक्षत्र हैं जिनका प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में सहस्रों वर्ष लग जाते हैं और कुछ का तो अब तक भी नहीं पहुँच पाया।

आकाश की विशालता, अनन्तता और पिडों की असीमता कल्पना से परे है। फिर भी मनुष्य आकाश पर विजय पाने का स्वप्न देखता रहा है और उसने अन्तरिक्ष में सफल यात्रा भी की है। मनुष्य का साहस अनन्त और शक्ति असीम है। इस अनन्त विश्व के रहस्यों के जिज्ञासु मनुष्य ने अनेक बाधाओं को पार करके चन्द्रमा तक अपने यान पहुँचाये हैं और स्वयं भी अन्तरिक्ष की सैर कर लौट आया है। उसने पृथ्वी की आकर्षण शक्ति पर विजय प्राप्त की है, भारहीनता में रहना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

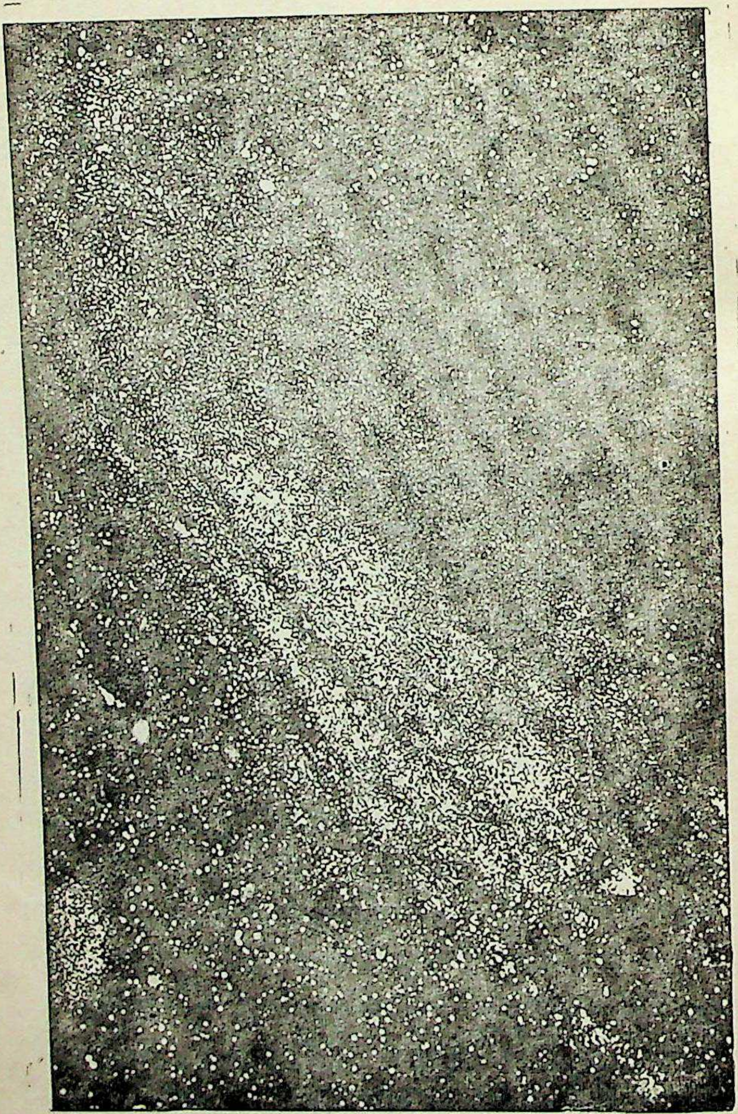

आकाश-गंगा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सीखा है, कृत्रिम श्वास के साधन जुटाये हैं और सबसे बढ़कर उसने उल्काओं से भी अपनी रक्षा के उपाय कर लिये हैं।

यहाँ यह प्रश्न हो सकता है कि उल्काएं क्या हैं? रात्रि में तीव्र प्रकाश की रेखा बनाते हुए तारे टूटते हुए से दिखायी पड़ते हैं। ये तारे नहीं हैं बल्कि उल्काएं हैं। उल्काओं के वायु-मंडल में आ जाने और उनके चलने के कारण यह तीव्र प्रकाश दिखायी पड़ता है। गुरुत्वाकर्षण के कारण, उल्काएं पृथ्वी की ओर गिरने लगती हैं। इस प्रकार के छोटे-बड़े अनेक उल्का समूह आकाश में प्रचंड वेग के साथ घूमते रहते हैं। इनकी चपेट में यदि कोई यान या मनुष्य आ जाय तो चकनाचूर हो जाय। जो उल्काएं पृथ्वी पर गिरी हैं उनसे पता लगता है कि वे प्रस्तर खड या लौह मिश्रित प्रस्तर खंड हैं। बड़ी-बड़ी उल्काओं के वेग से गिरने के कारण पृथ्वी में कहीं-कहीं ४००० फुट व्यास तक के गड्ढे बन गये हैं। ३० जून १६०८ को साइबेरिया में एक विशाल उल्का खंड गिरा था। उसकी गरमी से आस पास के पौधे नष्ट हो गये तथा धातुएं तक पिघल गयीं। सन् १६३० में फ्रांस में एक उल्का खंड गिरा जो सहस्रों टुकड़ों में बिखर गया।

उल्कापात क्यों होता है इसका कोई निश्चित कारण नहीं ज्ञात हो सका है। पहले तो वैज्ञानिकों का मत था कि ऐसे उल्का खंड आकाशगंगा से गिरते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक यह मानते हैं कि विश्व रचना के प्रारम्भिक काल में मंगल और बृहस्पति के बीच में एक उपग्रह था। इन दोनों ग्रहों की चपेट से वह टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसके टुकड़े करोड़ों वर्ष से अन्तरिक्ष में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तैर रहे हैं। कभी-कभी और अन्य बड़े उपग्रहों के गुरुत्वाकर्षण से ये तैरने वाले कुछ टुकड़े पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं। इस प्रकार उल्का के विषय में अनेक मत-मतान्तर प्रचलित हैं।

उपर्युक्त वर्णन से अनन्त और विस्मय पूर्ण आकाश की एक झलक मात्र मिलती है। वैज्ञानिक निरन्तर उसके रहस्योद्-घाटन में लगे हैं और कोई न कोई नयी बात नित्य ही प्रकाश में आ रही है। आकाश की भाँति ही मनुष्य की जिज्ञासा भी अनन्त है। अदम्य साहस, अथक परिश्रम और अपरिमित बुद्धि के बल पर प्रकृति पर विजय प्राप्त करता हुआ मानव ज्ञान की सीमा का विस्तार करता जा रहा है।

अध्ययन

प्रश्न

१. आकाश की किन विशेषताओं की ओर हम सदा से आकृष्ट होते रहे हैं?
२. तारागणों का आकार एवं तापक्रम कैसा है?
३. तारागणों के दिखायी पड़ने या न दिखायी पड़ने के सम्बन्ध में लेखक ने क्या बातें बतायी हैं।
४. पारसेक्स की दूरी कितनी होती है?
५. नक्षत्रों की दूरी की अनन्तता किन बातों से प्रकट होती है?
६. लेखक ने किस आधार पर ऐसा कहा है कि मनुष्य की शक्ति एवं उसका साहस असीम होता है?
७. उल्काओं के गिरने का पृथ्वी पर क्या प्रभाव पड़ता है?
८. आकाश की अनन्तता किन-किन बातों मे सिद्ध होती है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. इस पाठ में आये हुए निम्नलिखित आकारान्त शब्दों के एक वचन और बहुवचन रूप देखो—

एक वचन	बहुवचन	
तारा	तारे	(पुँल्लिग)
शाखा	शाखाएं	(स्त्रीलिंग)

यह अन्तर लिंग के कारण हैं। इससे तुम क्या निष्कर्ष निकाल सकते हो? याद रखो—आकारान्त पुँल्लिग शब्दों के कर्त्ता बहु वचन रूप में अन्तिम 'आ' का 'ए' हो जाता है पर स्त्रीलिंग शब्दों के कर्त्ता बहुवचन रूप में 'ए' जोड़ना पड़ता है। नीचे लिखे शब्दों के कर्त्ता के बहुवचन रूप लिखो—

लता—

लड़का—

भाषा—

गफा—

झरना—

आदेश—अन्तरिक्ष यात्रा के विषय में एक लेख लिखो।

टिप्पणी

अनन्त=(अ+अन्त) जिसका अन्त न हो। अगणित=जो गिना न जा सके। । अलंकृत=सुशोभित। अन्तरिक्ष=आकाश। आलोकित=प्रकाशित । पिंड=ठोस, गोलक । यान=विमान। गुरुत्वाकर्षण=पृथ्वी को अपनी ओर खींचने की शक्ति। प्रस्तर=पत्थर। रहस्योद्घाटन=(रहस्य+उद्घाटन) रहस्य का खोलना। अदम्य=(अ+दम्य) जिसका दमन न हो सके, प्रबल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३१

हिमालयः

[हमारे देश की सुरक्षा एवं सम्पन्नता में हिमालय का प्रमुख योगदान रहा है। प्रस्तुत पाठ में इन बातों पर प्रकाश डालते हुए हिमालय के विभिन्न भागों और वहाँ के निवासियों का परिचय कराया गया है।]

गिरिराज हिमालय भारतवर्ष का मुकुट है। इसकी विस्तीर्ण पर्वत श्रृंखलाएं, हिमाच्छादित गगनचुम्बी शिखर, गहन कन्दराएं, सुरम्य वन प्रदेश, हरहराती नदियां, अनेक जल-प्रपात और जल-कुंड अनादिकाल से मनुष्य के आकर्षण के केन्द्र रहे हैं। गंगा, यमुना, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र तथा इनकी अनेक सहायक नदियां इसी के हिम-स्रोतों से निकल कर आर्यावर्त के मैदान को जीवनदान देती हैं। इस मैदान की रचना भी हिमालय से बहकर आयी हुई मिट्टी से हुई है।

संस्कृत के कवि कालिदास ने अपने काव्यग्रन्थों में हिमालय के वन-प्रदेशों और उसके शिखरों पर खेलते हुए बादलों के सजीव चित्र अंकित किये हैं। मेघदूत की अलकापुरी की कल्पना भी कालिदास ने हिमालय में ही की है। शिव-पार्वती का निवास कैलास और इन्द्र का देवलोक इसी हिमालय पर्वत पर माने गये हैं। मनु ने मानव-सृष्टि का प्रारम्भ यहीं किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। राजा भगीरथ ने यहीं तपस्या करके गंगाजी को पृथ्वी पर उतारा था। हिमालय की ही संजीवनी बूटी से लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा हुई थी। हिमालय में ही कैलास, मानसरोवर, अमरनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ आदि हिन्दुओं के अनेक प्रसिद्ध तीर्थ और बौद्ध मठ हैं। इसी की कन्दराओं में ही ऋषियों ने ज्ञान प्राप्त किया। न जाने कितने यात्री आज भी गंगा के उद्‌गम-स्थान गंगोत्री का जल लेकर उसे चढ़ाने के लिए सुदूर दक्षिण में रामेश्वरम तक जाते हैं। इस प्रकार हमारे साहित्य, हमारी कला तथा सम्पूर्ण संस्कृति पर हिमालय की गहरी छाप है।

प्राचीन तीर्थों के अतिरिक्त हिमालय पर स्थित शिमला, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग आदि आधुनिक नगरों का आकर्षण भी कम नहीं है जहाँ प्रति वर्ष सहस्रों यात्री मैदान की भीषण गरमी से बचने के लिए जाते हैं। हिमालय के कारण ही मौसमी हवाएं ऊपर उठकर देश में वर्षा करती हैं। यह उत्तर की शीत हवाओं और आक्रान्ताओं से हमारी रक्षा भी करता रहा है।

नगाधिराज हिमालय हमारे देश की उत्तरी सीमा पर पश्चिम से पूर्व तक लगभग ३,२०० किलोमीटर की लम्बाई में फैला हुआ है। इसके इस विस्तार के कारण ही कालिदास ने इसे पृथ्वी का मानदंड कहा है। हिमालय में तीन पर्वत श्रेणियां हैं जो एक दूसरे के समानान्तर पश्चिम से पूरब तक फैली हैं। उत्तर की श्रेणी को महाहिमालय, दूसरी श्रेणी को लघु हिमालय और तीसरी को उप-हिमालय कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महा हिमालय सबसे उत्तर की श्रेणी है और सबसे ऊँची है। संसार की सबसे ऊँची पर्वत चोटियां एवरेस्ट तथा गौरीशंकर इसी भाग में हैं। यहाँ के पर्वत-शिखर वर्ष के अधिकांश भाग में वर्फ से ढँके रहते हैं।

महाहिमालय के पश्चिम में अफगानिस्तान, भारत और तिब्बत की सीमाएं मिलती हैं। इसी भाग में कश्मीर राज्य का प्रसिद्ध लद्दाख क्षेत्र है जिसने गत चीनी आक्रमण के समय स्वदेश रक्षा के लिए अपूर्व वीरता का प्रदर्शन किया था। यहां भीषण ठंडक पड़ती है और कुछ भाग तो इतने ठंडे हैं कि सदा बर्फ से ढके रहते हैं। गर्मियों के दिनों में यहाँ भयानक गरमी भी पड़ती है। लद्दाख के लोग अधिकतर बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं परन्तु कुछ ऐसे भी परिवार हैं जिनमें कुछ लोग बौद्ध हैं तो कुछ मुसलमान और कुछ हिन्दू। ये सभी एक दूसरे की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हैं। लद्दाख के निवासी बड़े संगीत प्रेमी होते हैं। ढोल और वंशी की धुन पर जब स्त्री-पुरुष मिलकर नृत्य करते हैं तो वह दृश्य अत्यन्त मनोहारी होता है।

लघु हिमालय महाहिमालय के दक्षिण में उसी के समान्तर फैला हुआ है। इस श्रेणी की औसत ऊँचाई ३,२०० किलोमीटर से ५,१०० किलोमीटर तक है। भारत क प्रसिद्ध पहाड़ी स्थान शिमला, मसूरी, नैनीताल और दार्जिलिंग इसी भाग में स्थित हैं। इस प्रदेश का जलवायु गरमी में बड़ा सुखद हो जाता है और मैदान के लोग अपनी छुट्टियां बिताने के लिए इन स्थानों में जाते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उप हिमालय इन दोनों श्रेणियों के दक्षिण में है। इस सम्पूर्ण भाग को शिवालिक कहते हैं और इसकी औसत ऊँचाई लगभग २००० किलोमीटर है। इसके नीचे का भाग दलदल और वनों से आच्छादित है।

इसी प्रकार हम हिमालय को पश्चिम से पूर्व तक भी तीन भागों में बाँट सकते हैं—पश्चिमी भाग, मध्य भाग और पूर्वी भाग। पश्चिमी भाग के लद्दाख क्षेत्र का वर्णन ऊपर हो चुका है।

हिमालय के मध्य भाग में भारत नैपाल और तिब्बत की सीमाएं मिलती हैं। इस भाग में हिमांचल प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के कुमायूँ तथा टिहरी गढ़वाल क्षेत्र हैं। नैपाल, भूटान और सिक्किम भी इसी भाग में स्थित हैं। इसमें कुलू और स्पीति की प्रसिद्ध घाटियां भी हैं जहाँ के अधिकांश लोग बौद्ध या हिन्दू हैं। इन घाटियों के लोग शान्ति-प्रिय, निश्चल, हँसमुख और परिश्रमी होते हैं।

कुमायूँ पुराणों में वर्णित कूर्मांचल प्रदेश है। कहा जाता है कि भगवान विष्णु ने यहीं पर कूर्मावतार लिया था। इसी से इसका नाम कूर्मांचल पड़ गया। यहीं शिव की क्रीड़ा भूमि कैलास और यहीं भगवान विष्णु का निवास स्थान बदरी नाथ है। यहीं नारद मुनि ने तपस्या की थी। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य भी अनुपम है। लगता है प्रकृति ने इसे देवभूमि समझ कर इसका विशेष रूप से शृंगार किया है। हिमालय की धवल, भव्य और ऊँची-ऊँची चोटियों के दर्शन सबसे अधिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

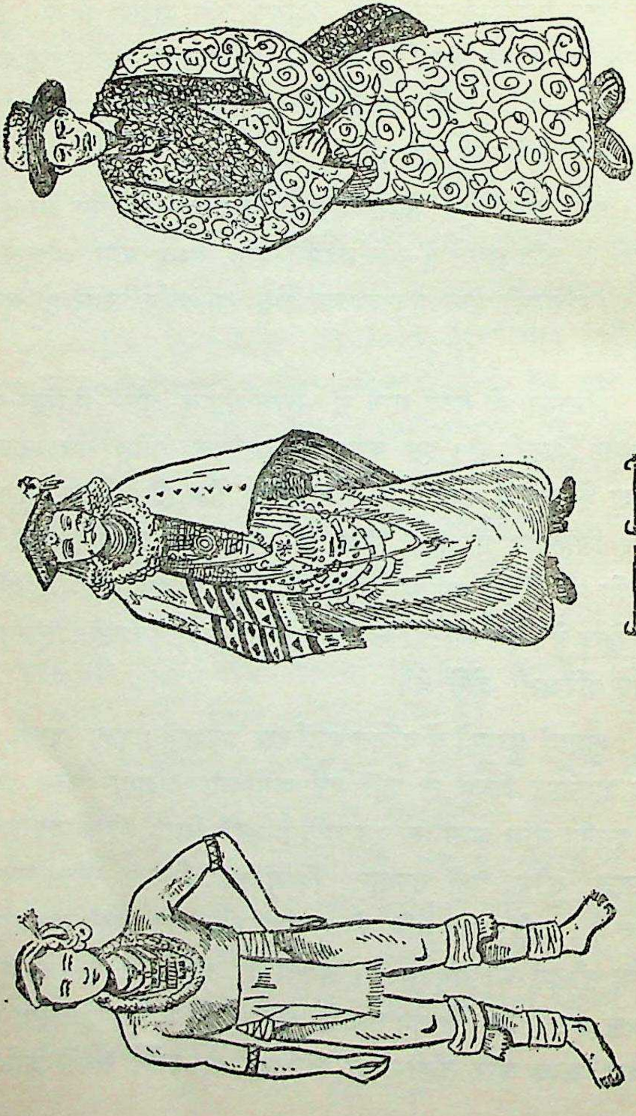

हिमालय-निवासी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कूर्मांचल में ही होते हैं। यहीं गंगा, यमुना और सरयू के उद्-गम स्थान है। यहाँ के निवासी वीर हँसमुख, निश्चल और अतिथि-भक्त होते हैं।

नैपाल स्वतन्त्र देश है, परन्तु भारत के साथ सदैव से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यहाँ का राज परिवार महा-राणा प्रताप का वंशधर है। नैपाल की दक्षिणी सीमा उत्तर प्रदेश और बिहार से मिलती है। काठमांडू नैपाल की राज-धानी है। यहाँ के पशुपतिनाथ मन्दिर में दर्शन के लिए सहस्रों भारतीय यात्री प्रतिवर्ष आते हैं और नैपाल से भी सहस्रों यात्री रामेश्वरम और काशी-विश्वनाथ के दर्शन के लिए भारत आते हैं। भारत में नैपाल के विद्यार्थियों की भी संख्या कम नहीं है। संसार का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर एवरेस्ट भी यहीं ह। नैपाल का कस्तूरी मृग भी प्रसिद्ध है। यहाँ के निवासी वीर हैं। गोरखों की शौर्य गाथाओं से भारतीय इतिहास भरा पड़ा है।

सिक्किम बहुत छोटा सा देश है। इसकी प्रतिरक्षा का भार भारत के ऊपर है। प्राचीन काल में बौद्धों के उत्तर-दक्षिण आने-जाने का मार्ग सिक्किम होकर रहा है। गंगटोक यहाँ का मुख्य नगर है।

सिक्किम की भाँति भूटान भी हमारी उत्तरी सीमा पर स्थित पड़ोसी देश है। इसकी प्रतिरक्षा का भार भी भारत पर ही है। यहाँ के निवासी भोटिया अपनी सरलता और अध्यवसाय के लिए प्रसिद्ध हैं। कस्तूरी मृग यहाँ भी पाया जाता है। बैल की तरह झबरे बालों वाला याक यहाँ का माल ढोने का मुख्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साधन है। यहाँ बड़ी खनिज सम्पत्ति है जिसका उपयोग अभी तक नहीं हो पाया है।

पूर्वी भाग में हिमालय की लम्बाई १,०४० किलोमीटर है। इसी भाग में दक्षिण की ओर हमारा नेफा प्रदेश है। इसका प्राचीन पौराणिक नाम कामरूप है। नेफा में अनेक जन-जातियां हैं। नेफा के लोग बड़े स्वाभिमानी, परिश्रमी और वीर होते हैं। इसके उत्तर पूर्वी भाग का भ्रमण करने से ऐसा लगता है मानों नदियों, पहाड़ों और जंगलों ने इस क्षेत्र का दुर्गम और भयावह बनाने के लिए परस्पर होड़ सी लगा रखी हो। सम्पूर्ण प्रदेश भयानक जीव-जन्तुओं से भरा है। इन परिस्थितियों में रहने वाले लोगों का जीवन कितना संघर्ष-मय होगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। परन्तु अब इस क्षेत्र में मार्ग बनवाये गये हैं और सुदूर प्रदेशों में विद्यालय और अस्पताल भी खोले गये हैं। सन् १९६२ के चीनी हमले ने यहाँ के निवासियों को और भी सजग बना दिया है।

हिमाच्छादित गगनचुम्बी पर्वत शिखर, सुरम्य वन स्थली तथा यहाँ के निवासियों के स्वाभिमान और शौर्य के कारण हिमालय भारतवर्ष का वास्तविक मुकुट है। गंगा, सिन्धु और सरस्वती के तट की गौरवपूर्ण संस्कृति हिमालय की ही देन है। प्रसिद्ध कवि दिनकर ने 'मेरे नगपति, मेरे विशाल, मेरी जननी के हिम किरीट, मेरे भारत के दिव्य भाल' और 'पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल' इत्यादि कहकर इसे सम्बोधित किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन

प्रश्न

१. लेखक ने हिमालय से सम्बन्धित किन धार्मिक एवं पौराणिक गाथाओं का वर्णन किया है?
२. हिमालय पर्वत से हमारे देश को क्या-क्या लाभ हैं?
३. लद्दाखी लोगों के रहन सहन की क्या विशेषताएं हैं?
४. कुमायूँ प्रदेश की कौन कौन-सी विशेषताएं लेखक ने वर्णित की हैं?
५. नेफा के लोगों को रहन-सहन और खान-पान के क्या-क्या साधन उपलब्ध हैं?
६. किन विशेषताओं के कारण हिमालय को भारत का वास्तविक मुकुट कहा जा सकता है?

अभ्यास

१. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद करो—
हिमालय, स्वाभिमानी, हिमांचल, कूर्मावतार, कूर्मांचल।
२. पौराणिक शब्द किस संज्ञा शब्द से बना है? 'इक' प्रत्यय लगकर बने अन्य पाँच विशेषण शब्द बताओ।
३. अधोलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करो और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो—
असाधारण, भयावह, सम्मिश्रण, गगन-चुम्बी, भ्रमणशील।

टिप्पणी

हिमाच्छादित = (हिम + आच्छादित) बर्फ से ढका हुआ। सुरम्य = सुन्दर। सजीव = सुन्दर। जल प्रपात = झरने। उद्गम = निकलने का स्थान। आक्रान्ता = आक्रमण करने वाला। नगाधिराज = (नग + अधिराज) पर्वतों का राजा, सबसे बड़ा पर्वत। मान दंड = मापने का दंड। मनोहारी = (मनः हारी) मनको हरनेवाला। कूर्मांचल — (कूर्म + अंचल), जहाँ विष्णु ने कूर्मावतार लिया था। व्यतीत = (वि + अतीत) सुदूर, भूत का, बीता हुआ। अध्यवसाय = निरन्तर परिश्रम। पुंजीभूत = एकत्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ—३२

किसको नमन करूँ मैं ?

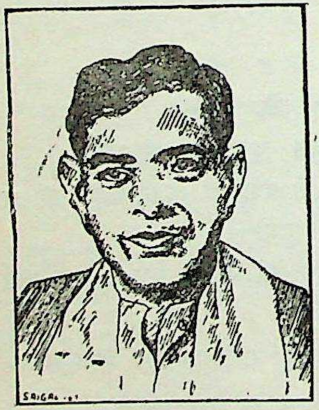

[प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर ने इस कविता द्वारा अपने राष्ट्र की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उसकी वन्दना की है।]

तुझको या तेरे नदीश, गिरि, वन को नमन करूँ मैं ?
मेरे प्यारे देश ! देह या मन को नमन करूँ मैं ?

किसको नमन करूँ मैं भारत, किसको नमन करूँ मैं ?

भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है,
एक देश का नहीं, शील यह भूमंडल भर का है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जहाँ कहीं एकता अखंडित, जहाँ प्रेम का स्वर है,
देश - देश में वहाँ, खड़ा भारत जीवित भास्वर है।

निखिल विश्व की जन्मभूमि-वन्दन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ?

उठे जहाँ भी घोष शान्ति का, भारत स्वर तेरा है,
धर्म - दीप हो जिसके भी कर में वह नर तेरा है।
तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है,
किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है,

मानवता के इस ललाट-चन्दन को नमन करूँ मैं ?
किसको नमन करूँ मैं भारत ! किसको नमन करूँ मैं ?

अध्ययन

प्रश्न

१. कवि किसको सम्बोधित करके प्रश्न कर रहा है ?
२. भारत की किन विशेषताओं के कारण कवि ने उसे भूमंडल का शील कहा है ?
३. भारत अपनी किन-किन विशेषताओं के कारण विश्व विख्यात है ?
४. कवि के विचार से भारतीय वीर में कौन-कौन सी विशेषताएं होनी चाहिए ?
५. इस कविता की शैली की क्या विशेषता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

१. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो—

(क) भारत नहीं स्थान का वाचक, गुण विशेष नर का है।
(ख) धर्म दीप हो जिसके भी कर में वह नर तेरा है।

आदेश—प्रस्तुत कविता को कंठस्थ करो।

टिप्पणी

अखंडित = सम्पूर्ण, जिसके खंड न हों। भास्वर = प्रकाशयुक्त। निखिल = सम्पूर्ण। घोष = स्वर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनिवार्य संस्कृत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वन्दना

या कुन्देन्दु - तुषार - हार - धवला या शुभ्र - वस्त्रावृता
या वीणा - वरदण्ड - मंडित - करा या श्वेत - पद्मासना ।

या ब्रह्माच्युत - शंकर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष - जाड्यापहा ।।१।।

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ।।२।।

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ।।३।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथमः पाठः

विद्यालयः

रामस्य ग्रामे एकः प्राथमिकः विद्यालयः अस्ति। अस्मिन् विद्यालये बहवः छात्राः पठन्ति। ते प्रतिदिनं नियतसमये विद्यालयम् आगच्छन्ति, प्रार्थनास्थले समवेताः च भवन्ति। तेषां मध्ये द्वौ छात्रौ राष्ट्रगानं गायतः। अन्ये तौ अनुकुर्वन्ति। तत्र एव तेषाम् उपस्थितिः भवति। तदनन्तरं ते स्वकक्षासु उपविशन्ति अध्यापकाः च स्वविषयस्य शिक्षणं कुर्वन्ति।

अत्र गतवर्षे स्वतन्त्रता-दिवसस्य उत्सवः अभवत्। तस्मिन् उत्सवे बहवः नागरिकाः अपि आगच्छन्। सर्वप्रथमं प्रधानाध्यापकः राष्ट्रध्वजस्य आरोहणम् अकरोत्। त्रयः छात्राः राष्ट्रगानम् अगायन्। केचिद् छात्राः कविता-पाठं भाषणं च अकुर्वन्। अन्ते प्रधानाध्यापकः स्वभाषणे अकथयत्,-यत् इमे छात्राः भविष्यत्काले अस्य देशस्य नेतारः राजनीतिज्ञाः चिकित्सकाः अभियन्तारः च भविष्यन्ति। ते एव राष्ट्रस्य संचालनं च करिष्यन्ति। एषामेव प्रयासेन राष्ट्रोत्थानं भविष्यति।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो--

१. प्राथमिकः विद्यालयः कुत्र अस्ति ?

२. राष्ट्रगानं कौ गायतः ?

३. राष्ट्रध्वजस्य आरोहणं कः अकरोत् ?

४. प्रधानाध्यापकः स्वभाषणे किम् अकथयत् ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. विद्यार्थी प्रतिदिन सूर्योदय से पहले उठते हैं।

२. वे गुरुजनों को प्रणाम करते हैं।

३. वे निश्चित समय पर स्कूल जाते हैं।

४. वे वहाँ अपनी कक्षा में बैठते हैं तथा अलग-अलग विषय पढ़ते हैं।

५. शाम को मैदान में अपनी इच्छानुसार खेलते हैं।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो--

१. अस्मिन् विद्यालये..........पठन्ति।

२. ....राष्ट्रगानं गायतः।

३. केचित् छात्राः.......... अकुर्वन्।

टिप्पणी

समवेताः=एकत्र होना। त्रयः=तीन। राजनीतिज्ञाः=राजनीति को जानने वाले। अभियन्तारः=इंजीनियर। चिकित्सकाः=डाक्टर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वितीयः पाठः

दीपकोत्सवः

(लोट् लकारः)

बालकः पुस्तकं पठतु।	त्वं समाचारपत्रं पठ।
बालकौ पुस्तकं पठताम्।	युवां समाचारपत्रं पठतम्।
बालकाः पुस्तकं पठन्तु।	यूयं पुस्तकं पठत।

अहं पत्रं पठानि।
आवां पत्रं पठाव।
वयं पत्रं पठाम।

पुत्रः—मातः, त्वं किमद्य पक्वान्नं मिष्टान्नं च रचयसि?

माता—पुत्र, किं त्वं न जानासि यदद्य दीपमालिकायाः उत्सवः विद्यते?

पुत्रः—नैव तु। कथय, दीपमालिकायाः उत्सवः कीदृशः भवति?

माता—अस्तु, त्वं स्वयमेव ज्ञास्यसि। अधुना सन्ध्यासमयः सञ्जातः नभः च तिमिराच्छन्नं भवति।

पुत्रः—ततः किम्?

माता—गृहे दीपकाः सन्ति, त्वं तान् अत्रानय, सेवकं च आह्वय। सः तान् दीपकान् जलेन प्रक्षालयतु। अहं तान्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रज्वालयानि। त्वं सेवकेन च सह तैः गृहं प्रकाशय।

पुत्रः--यद् आज्ञापयति भवती।

(सेवकः दीपकान् आनयति, माता तान् प्रज्वालयति, पुत्रश्च तान् स्थाने स्थाने गृहे स्थापयति)

माता--इदानीं दीपकाः प्रज्वलन्ति। समस्तं च गृहं प्रकाशितं भवति। न केवलम् अस्माकं गृहम्, अपितु सर्वेषामेव गृहाणि, हाटकं, राजमार्गः च प्रदीपैः प्रकाशन्ते।

पुत्रः--मातः, अहम् अपि द्रष्टुमिच्छामि तानि।

माता--आम्, कथं न, त्वं कमला च सज्जितौ भवताम्। अहमपि सज्जिता भवानि, सर्वे अपि वयं तत्र चलाम, हट्टात् क्रीडनकानि चित्राणि क्रीणाम दीपावल्याः शोभां च पश्याम्

(सोल्लासं सर्वे अपि प्रस्थिताः)

अभ्यास

संस्कृत में अनुवाद करो--

(क) तुम अभी घर जाओ और पुस्तक ले आओ।

(ख) बच्चे खेल के मैदान में गेंद से खेलें।

(ग) सदा सच बोलो, भय मत करो।

(घ) हम सब गुरुजी का आदर करें।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो--

(क) ....वानरं पश्यन्तु।

(ख) ....निबन्धं लिखत।

(ग) वयं.........गच्छाम।

टिप्पणी

तिमिरम् = अन्धकार। आच्छन्नम् = ढका हुआ।

सन्धि

तिमिर+आच्छन्नम्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीयः पाठः

सदाचारः

सा पुस्तकं पठेत्। त्वं समाचारपत्रं पठः।
ते पुस्तकं पठेताम्। युवां समाचारपत्रं पठेतम्।
ताः पुस्तकं पठेयुः। यूयं समाचारपत्रं पठेत।

अहं पत्रिकां पठेयम्।
आवां पत्रिकां पठेव।
वयं पत्रिकां पठेम।

बालकाः प्रतिदिनम् प्रातः उत्तिष्ठेयुः। हस्तौ पादौ मुखं च प्रक्षालयेयुः। मातापितरौ च प्रणमेयुः। तदनन्तरं स्वपाठं पठेयुः। ते भोजनं कृत्वा यथा समयं विद्यालयं गच्छेयुः। कस्य अपि किम् अपि वस्तु अनुमतिं विना न स्पृशेयुः।

माता पुत्रम् उपादिशत्, पुत्र! त्वं सदा सत्यं वदेः, धर्मं चरेः, स्वपाठं च स्मरेः। सायं क्रीडास्थले कन्दुकेन क्रीडेः। रात्रौ शीघ्रं शय्यां गच्छेः, प्रातः काले च ब्राह्ममुहूर्ते उत्तिष्ठेः।

गुरुः शिष्यान् अकथयत्, यूयं दीनानां साहाय्यं कुर्यात। पशून् न ताडयेत। यूयं वनं गच्छेत, ततः पुष्पाणि फलानि, कुशान् चानयेत। ततः अहं सन्ध्योपासनं कुर्याम्, समवेताः च वयं भगवत्संकीर्तनं कुर्याम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. प्रातः के उत्तिष्ठेयुः ?
२. माता पुत्रं किम् उपादिशत् ?
३. यूयं कान् न ताडयेत ?
४. समवेताः वयं किं कुर्याम ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. राम को पत्र लिखना चाहिए।
२. छात्रों को यथासमय विद्यालय जाना चाहिए।
३. तुमको मैदान में दौड़ना चाहिए।
४. हम सबको राष्ट्रगीत गाना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्थः पाठः

धेनुः

धेनुः एकः उपयोगी पशुः अस्ति। धेनूनां विविधाः वर्णाः भवन्ति। काचिद् धेनुः श्वेतवर्णा, काचित् कपिला, काचित् श्यामा च भवति। तासु श्यामा धेनुः शोभना सर्वप्रिया च भवति। अस्माकं देशे धेनोः अतिमहत्त्वम् अस्ति।

सा मधुरं पयः ददाति। जनाः धेनुं स्नेहेन पालयन्ति। सा बुसं घासं च खादति। तस्याः वत्साः कृषकेभ्यः अतीव लाभप्रदाः भवन्ति। वत्साः एव वृषभाः भवन्ति। ते हलं कर्षन्ति, अन्नोत्पादने च सहायकाः भवन्ति। भारतीयानां कृषकाणां कृषिः वृषभाणाम् अधीना अस्ति। धेनोः दुग्धेन कान्दविकाः विविधानि अमृतमयानि खाद्यवस्तूनि रचयन्ति।

तस्याः गोमयेन उर्वरकः भवति। उर्वरकस्य प्रयोगेन क्षेत्रस्य उत्पादनशक्तिः वर्धते। अतएव रासायनिकाः अस्याः महत्त्वं मुक्तकण्ठेन स्वीकुर्वन्ति। न केवलं भारतीयाः अपितु विदेशीयाः अपि अस्याः उपयोगितां मन्यन्ते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. धेनुः कीदृशः पशुः अस्ति ?
२. सा किं खादति ?
३. हलं के कर्षन्ति ?
४. कान्दविकाः दुग्धेन किं रचयन्ति ?
५. क्षेत्रस्य उत्पादनशक्तिः केन वर्धते ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

१. धेनूनां..........सन्ति।
२. ....कृषकेभ्यः..........भवन्ति।
३. तस्याः गोमयेन..........भवति।

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. राम के घर में गाय है।
२. उसका रंग काला है।
३. वह उसकी प्रतिदिन सेवा करता है।
४. गाय का दूध मीठा होता है।

टिप्पणी

कान्दविकाः=हलवाई। गोमय=गोबर। उर्वरकः=खाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंचमः पाठः

मेलापकः

खलीलः—सुनील, अद्य तु तव वेशः अतीव सुन्दरः अस्ति। कथय, कथं नवीनानि वस्त्राणि धारयसि ?

सुनीलः—खलील, किं त्वं न जानासि, यद् अद्य अस्माकं ग्रामे विजय दशम्याः मेलापकः अस्ति। अहं तत्र गच्छामि। ग्रामस्य अन्ये अपि बालकाः तत्र गमिष्यन्ति किं त्वं मया सह न चलिष्यसि ?

खलीलः—सुनील, अयं तु महान् सुअवसरः अस्ति। वद, तत्र किं भविष्यति ?

सुनीलः—भ्रातः, तत्र महान् जनसंमर्दः भविष्यति। तत्र आवां विविधानि दृश्यानि द्रक्ष्यावः। रामरावणयोः युद्धस्य अभिनयः अपि तत्र भविष्यति ?

खलीलः—कीदृशं युद्धम् ? सुस्पष्टं कथय। किं तत्र रामलीला भविष्यति ?

सुनीलः—आम् तावत्, त्वं तु जानासि एव। पुनः किं पृच्छसि ? अतः त्वम् अपि सज्जितः भव।

खलीलः—क्षणं विरम, अहम् अपि सज्जितः भवामि। स्मरामि, गतवर्षे अपि अहं मातुलग्रामे रामलीलामपश्यम्। तत्र शूर्पणखायाः अभिनयः अति मनोहरः आसीत्। अन्यानि अपि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहूनि दृश्यानि मनोहराणि आसन्। तत्र तु अहम् अवश्यमेव गमिष्यामि।

सुनीलः—आगच्छ, आवां चलावः।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. मेलापकः कुत्र अभवत्?
२. तत्र के गमिष्यन्ति?
३. शूर्पणखायाः अभिनयः कीदृशः आसीत्?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. हमारे देश में बहुत से मेले होते हैं।
२. उनमें विजयदशमी का मुख्य है।
३. हम दोनों मेला देखने जायेंगे।
४. गतवर्ष भी हमारे गाँव में मेला हुआ था।

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

१. तत्र आवां·······द्रक्ष्यावः।
२. अहं मातुलग्रामे·······।
३. तत्र तु·········अवश्यमेव·········।

टिप्पणी

मेलापकः = मेला। जनसंमर्द = भीड़। सज्जित = तैयार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठः पाठः

नीलवर्णः श्रृगालः

एकदा कश्चित् शृगालः स्वेच्छया परिभ्रमन् कस्यचिद् रजकस्य गृहे नीलीपात्रे अपतत् येन सः नीलवर्णः अभवत्। सः वनं गत्वा आत्मानं नीलवर्णम् अवलोक्य स्वमनसि अचिन्तयत्— अधुना अहम् उत्तमवर्णः अस्मि। अस्य साहाय्येन कथम् अहं स्वोत्कर्षं न साधयामि? एवं विचार्य सः वन्यजीवान् आहूय अवदत्—रात्रौ भगवती वनदेवता मां स्वहस्तेन अस्य वनस्य राजपदे अभिषिक्तवती। अधुना अस्मिन् वने सर्वे ममैवाज्ञां पालयिष्यन्ति। वन्यजीवाः तं विशिष्टवर्णम् अवलोक्य प्रणम्य चावदन्-यथाज्ञापयति देवः।

एवं वने सर्वेषु जीवेषु तस्य प्रभुत्वम् अभवत्। ततः व्याघ्र-सिंहादीन् प्रमुखान् सेवकान् प्राप्य सः स्वज्ञातीनां शृगालानाम् अनादरम् अकरोत्। अथ नीलवर्णस्य शृगालस्य एवंविधेन तिरस्कारेण दुःखितान् शृगालान् अवलोक्य कश्चित् वृद्धः शृगालः अकथयत्—भोः, विषादं मा कुरुत। यदनेन मूर्खेण वयं स्वसमी-पात् बहिष्कृताः। तद् यथा अयं नश्यति तथा कर्त्तव्यम्।

तदद्य सन्ध्या समये यूयं सर्वे सहैव शब्दं कुरुत। सन्ध्या काले यदा सर्वेशृगालाः मिलित्वा शब्दम् अकुर्वन् तदा नीलवर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपि स्वभावात् तत् शब्दम् अकरोत्। ततः व्याघ्रादयः तं शृगालं परिज्ञाय हतवन्तः।

सत्यम् उक्तम्—

यः स्वभावो हि यस्यास्ति स नित्यं दुरतिक्रमः।
श्वा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्युपानहम्॥

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. शृगालः कुत्र अपतत्?

२. नीलवर्णः शृगालः स्वमनसि किम् अचिन्तयत्?

३. वृद्धः शृगालः किम् अकथयत्?

४. सन्ध्याकाले शृगालाः किम् अकुर्वन्?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. किसी वन में एक शेर रहता था।

२. एक दिन घूमते हुए उसने कुछ खरगोशों को देखा।

३. शेर ने खरगोशों से कहा "तुम डरो मत"।

४. यह सुनकर खरगोश बहुत प्रसन्न हुए।

५. वे निडर होकर वन में रहने लगे।

सन्धि-विच्छेद करो—

स्वेच्छया, स्वोत्कर्षम्, चावदन्, यस्यास्ति।

टिप्पणी

परिभ्रमन् = घूमते हुए। अवलोक्य = देखकर। गत्वा = जाकर। स्वोत्कर्षम् = अपनी उन्नति। विचार्य = विचार करके। आहूय = बुलाकर। कर्त्तव्यम् = करना चाहिए। परिज्ञाय = जानकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सप्तमः पाठः

वसन्तः

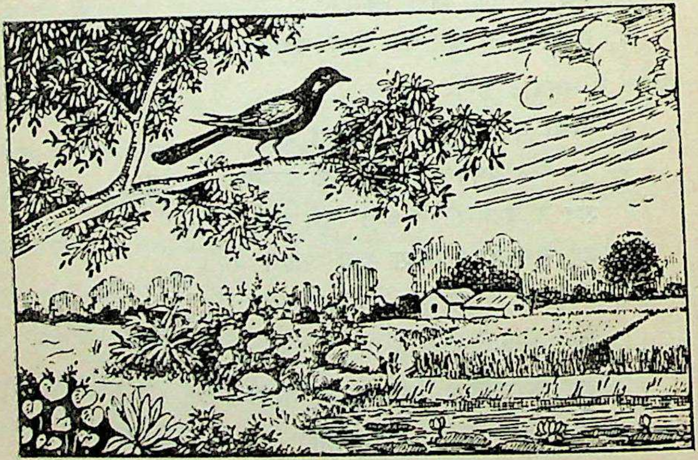

भारतवर्षे षड् ऋतवः भवन्ति। ते च वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः, शिशिरः इति सन्ति। एषु वसन्तः सर्वप्रियः अस्ति। वसन्तकाले समशीतोष्णता भवति। अतः सर्वे एव जनाः समानरूपेणतम् अभिनन्दन्ति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वसन्तकाले प्रकृतिः नूतनं परिधानं धारयति। वृक्षाः जीर्णानि पर्णानि त्यजन्ति, नूतनानि च वहन्ति। आम्रवृक्षेषु मञ्जर्यः प्रस्फुटन्ति। उद्यानेषु विविधानि कुसुमानि च विकसन्ति। मधुलुब्धाः भ्रमराः पुष्पेषु मञ्जरीषु च गुञ्जन्ति। वृक्षेषु खगाः कलरवं कुर्वन्ति। आम्रवाटिकासु कोकिलाः मधुरं कूजन्ति। ताः सर्वेषां मनांसि हरन्ति। अस्मिन् ऋतौ यदा मलयानिलः मन्दं मन्दं वहति तदा सर्वे जनाः किमपि अपूर्वमेव सुखम् अनुभवन्ति। सस्यक्षेत्रेषु पीतवर्णानि सर्षपपुष्पाणि प्रकृत्याः शोभां वर्द्धयन्ति।

विश्वसाहित्यस्य अनेके महाकवयः वसन्तस्य अपूर्वशोभाम् अवर्णयन्। छात्राः विद्यालयेषु वसन्तोत्सवस्य आयोजनं कुर्वन्ति। होलिकोत्सवः वसन्तोत्सवस्य एवान्यत् रूपम् अस्ति। अस्य अपूर्वं सौन्दर्यं दृष्ट्वा भगवान् कृष्णः अपि गीतायाम् अवदत्, 'ऋतूनां कुसुमाकरः' इति।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. कति ऋतवः भवन्ति ?
२. प्रकृतिः कदानूतनं वस्त्रं धारयति ?
३. वृक्षेषु के कलरवं कुर्वन्ति ?
४. प्रकृत्याः शोभां कानि वर्द्धयन्ति ?
५. "ऋतूनां कुसुमाकरः" इति कः अवदत् ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. वसन्त ऋतु चैत्र मास में होती है।
२. यह एक सुन्दर ऋतु है।
३. इसमें पेड़ों में फूल खिलते हैं।
४. फूलों की गन्ध अच्छी होती है।
५. फूलों पर भौंरे गुनगुनाते हैं।

नीचे लिखी धातुओं की सहायता से रिक्त स्थानों को भरो—

हृ, कृ

१. वयं प्रतिदिनं कार्यं............।
२. चौराः धनं............।
३. त्वं स्व कार्यं कथं न............।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टमः पाठः

वचनामृतम्

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार - चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥१॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥२॥

आचारः कुलमाख्याति वपुराख्याति भोजनम्।
वचनं श्रुतमाख्याति स्नेहमाख्याति लोचनम् ॥३॥

प्रियवाक्य - प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्माद् तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ॥४॥

येषां न विद्या न तपो न दानम्
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्य - लोके भुवि भारभूताः,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥५॥

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयः ॥६॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा सः वै पण्डित उच्यते ॥७॥

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रः तमो हन्ति न च तारागणोऽपि च ॥८॥

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पश्यति ॥९॥

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति ॥१०॥

अभ्यास

प्रश्न

१. नीचे लिखे शब्दों में विभक्ति एवं वचन निर्देश करो—
शैल, साधवः, तस्माद्, तत्, येषाम्।

२. काल एवं वचन निर्देश करो—
आख्याति, पिबन्ति, पश्यति, हन्ति।

३. अपनी रुचि के अनुसार श्लोक कंठाग्र करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवमः पाठः

हिमालय

नगाधिराजः हिमालयः संसारस्य सर्वोन्नतः पर्वतः अस्ति। अयं भारतस्योत्तरे भागे प्रहरीव भारतं रक्षति। अस्योत्तुंगानि शिखराणि नभः स्पृशन्ति। अस्माकं देशस्य गंगा-यमुना-सिन्धु ब्रह्मपुत्रादयः प्रसिद्धाः नद्यः अस्मात् एव पर्वतात् निःसरन्ति। अस्मिन् पर्वते विविधाः पशवः मनोहराः पक्षिणः च निवसन्ति। अनेके तरवः पुष्पिताः लताः च अस्य शोभां वर्द्धयन्ति।

अस्मिन् पर्वते विविधानां धातूनां रत्नानाम् ओषधीनां च महान् भाण्डारः विद्यते। अत्र रम्याणि काननानि सन्ति। तत्र गत्वा जन्तुविशेषज्ञाः वनस्पति-विशेषज्ञाः च बहुविधम् अनुसन्धानं कुर्वन्ति।

अस्य पर्वतस्य हिममण्डितानि शिखराणि न केवलं भारतीयानाम् अपितु वैदेशिकानां च मनांसि आकर्षन्ति। अतएव प्रतिवर्षम् असंख्यकाः पर्यटकाः तत्रगच्छन्ति। आरोहकाः अस्य एवरेस्ट इति नामके उच्चतमे शिखरे आरोहणाय प्रयत्नं कुर्वन्ति। प्रसिद्धाः अपि वैदेशिकाः आरोहकाः स्वनामधन्यं भारतीय शेरपातेनसिंह नामानम् आरोहकं प्रशंसन्ति। यः सर्वप्रथमं एवरेस्ट शृङ्गम् आरुह्य तत्र भारतराष्ट्रस्य पताकायाः आरोहणम् अकरोत्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीयेषु कविषु महाकविः कालिदासः कुमारसंभव-नामके प्रसिद्धे काव्ये हिमालयस्य अतिमनोहरं वर्णनम् अकरोत्।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. संसारस्य सर्वोन्नतः पर्वतः कः अस्ति ?
२. अस्मात् काः नद्यः निःसरन्ति ?
३. तत्र जन्तुविशेषज्ञाः किं कुर्वन्ति ?
४. शेरपातेनसिंहं के प्रशंसन्ति ?
५. कः भारतीयः कविः हिमालयस्य वर्णनम् अकरोत् ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. राम और श्याम अपने पिता के साथ हिमालय यात्रा को गये।
२. वे इसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए।
३. यहाँ की सुन्दरता देखने योग्य है।
४. इस पर्वत के शिखर बहुत ऊँचे हैं।
५. इसकी एवरेस्ट चोटी पर तेनसिंह ने झंडा फहराया था।

टिप्पणी

निःसरन्ति = निकलती है। अनुसन्धान = खोज। आरुह्य = चढ़कर। उन्नत = ऊँचा।

सन्धि

सर्व + उन्नतः

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दशमः पाठः

लाल बहादुर शास्त्री

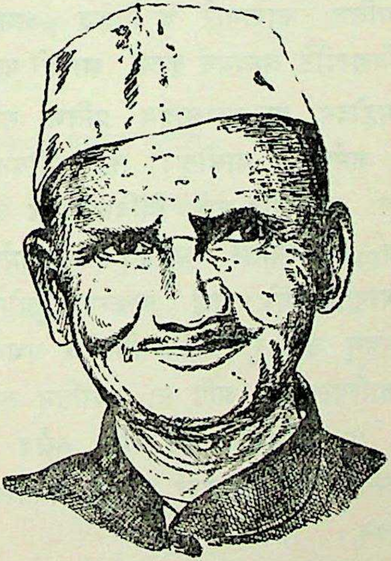

अस्माकं देशे अधुना को न जानाति लाल बहादुर शास्त्रि महोदयस्य नाम। अस्य महाभागस्य जन्म मुगलसराय नामके स्थाने अक्टूबरमासस्य द्वितारिकायां १९०४ ख्रीष्टाब्दे एकस्मिन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कायस्थ कुले अभवत्। अस्य पिता श्री हजारी लालः एकः प्राथमिकविद्यालयस्य अध्यापकः आसीत्। अस्य माता श्रीमती रामदुलारी देवी एका साध्वी महिला आसीत्। यदायं बालः एवासीत् तदास्य पिता दिवंगतः । अतः अस्य पालनं पोषणं अस्य मातामहस्य गृहे अभवत्। यदायं काश्यां हरिश्चन्द्र विद्यालयस्य छात्रः आसीत् तदैव सः राष्ट्रपितुः महात्मनः गाँधी महोदयस्य असहयोगान्दोलनेन विदेशीयवस्त्र-बहिष्कारेण चाति प्रभावितः अभवत्। तदा सः अध्ययनं परित्यज्य स्वातन्त्र्य संग्रामे सम्मिलितः कारागारे च निबद्धः अभवत्। तदनन्तरं पुनः काशी विद्यापीठे अध्ययनं कृत्वा शास्त्री पदवीम् अलभत।

शास्त्रिमहोदयः बाल्यकालादेव प्रतिभा सम्पन्नः निर्भीकः दृढनिश्चयः कर्मण्यः चासीत्। तस्य जीवनम् अतिसरलम् आसीत्। सः राजनीति-क्षेत्रे विविधपदानि अलंकृत्य अन्ते भारतराष्ट्रस्य प्रधानमन्त्री अभवत्। स्वकार्यकाले शास्त्रि महाभागः भारतपाकयोः युद्धे पाकस्य युद्धोन्मादं मर्दयित्वा भारतस्य गौरवम् अरक्षत् सर्वजनप्रियश्च अभवत्। न केवलं युद्धे अपितु शान्तिस्थापने अपि सः ख्यातिम् अलभत। शान्ति स्थापनार्थमेव सः ताशकन्दनगरे गतः तत्रैव च स्वप्राणान् अत्यजत्। तस्य निधनसमाचारं श्रुत्वा भारतीयाः शोकसागरे निमग्नाः अभवन्।

यद्यपि तस्य पार्थिव शरीरम् अद्य अस्माकं मध्ये नास्ति, तथापि यशःशरीरेण सः भारतजनगणस्य मानसे विराजते एव।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो--

१. लालबहादुरस्य जन्म कस्मिन् ख्रीष्टाब्दे अभवत्?

२. अस्य पितुः नाम किम् आसीत्?

३. सः किं कार्यम् अकरोत्?

४. लालबहादुरस्य जीवनम् कीदृशम् आसीत्?

५. सः स्वप्राणान् कुत्र अत्यजत्?

आदेश--पंडित जवाहर लाल से सम्बन्धित पाँच वाक्य बनाकर संस्कृत में लिखो।

सन्धि-विच्छेद करो—

चाति, युद्धोन्मादम्, नास्ति, तथापि।

टिप्पणी

परित्यज्य = छोड़कर । निर्भीक = निडर । अलंकृत्य = शोभित करके। मर्दयित्वा = चूर-चूर करके। पार्थिव = शरीर (पंचतत्व से बना हुआ)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकादश: पाठ:

पुस्तकालय:

यत्र विविधानां पुस्तकानां संग्रह: भवति तं जना: पुस्तकालयं कथयन्ति। पुस्तकालयस्य विविधा: प्रकारा: भवन्ति। तेषां मध्ये विद्यालयानां पुस्तकालया: सार्वजनिक-पुस्तकालया: च प्रमुखा: सन्ति। ज्ञानार्जनाय पुस्तकालया: प्रमुखानि साधनानि वर्तन्ते। पुस्तकालयात् वयं यथारुचि पुस्तकानि प्राप्नुम:।

ज्ञानार्जनस्य अन्यानि अपि बहूनि साधनानि सन्ति। परं पुस्तकसाधनं तु अत्यन्तं महत्त्वपूर्णं सर्वं सुलभं च अस्ति। छात्राणां कृते तु अस्य महत्त्वं सर्वाधिकं विद्यते। विद्यालयेषु छात्रा: पुस्तक साहाय्येन एव पठन्ति, स्वगृहेषु च पाठं स्मरन्ति। अत: सर्वेषु एव विद्यालयेषु पुस्तकालया: भवन्ति।

सर्वत्र जनपदे सार्वजनिका: पुस्तकालया: सन्ति। प्राय: ये जना: धनाभावात् पुस्तकानि समाचारपत्राणि वा क्रेतुं समर्था: न भवन्ति, ते तत्र गत्वा विविधानि पुस्तकानि समाचारपत्राणि वा पठन्ति। अस्मादेव कारणात् धनस्य संग्रहं कृत्वा सार्वजनिक पुस्तकालयानां व्यवस्था संभवति। वाचनालय: अपि पुस्तकालयस्यैव एकम् अंगम् अस्ति। यत्र बहुसमाचार-पत्र-पत्रिकाणां व्यवस्था भवति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुस्तकालयेषु कानिचिद् पुस्तकानि तु जनाः तत्रैव पठन्ति, कानिचिद् च स्व गृहम् आनयन्ति। पुस्तकवितरणस्य व्यवस्था पुस्तकालयाध्यक्षस्य संरक्षणे भवति। यः नियतकालानन्तरं पुस्तकं प्रत्यानयति सः अर्थदण्डं ददाति। एवं विधया व्यवस्थया पुस्तकानां हानिः न भवति, पुस्तकानि यथासमये प्रत्यागच्छन्ति, सर्वजनसुलभानि च भवन्ति।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. पुस्तकालये केषां संग्रहः भवति ?
२. पुस्तकालये जनाः किं कुर्वन्ति ?
३. वाचनालशः कीदृशः भवति ?
४. अर्थदण्डं के वहन्ति ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. हमारा देश स्वतन्त्र है।
२. यहाँ शिक्षा का चारों ओर विकास हो रहा है।
३. पुस्तकालय शिक्षा प्रसार का साधन है।
४. प्रायः सभी विद्यालयों में पुस्तकालय होते हैं।

सन्धि-विच्छेद करो—

पुस्तकालयः, विद्यालयः, ज्ञानार्जनम्।

टिप्पणी

क्रेतुम् = खरीदने को। कृत्वा = करके।

निर्देश—छात्रों को अन्य धातुओं से भी तुमुन् और क्त्वा प्रत्ययों के रूप बताये जायँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्वादशः पाठः

प्रत्युत्पन्नमतिः वानरः

क्वचित् स्थाने एका नदी आसीत्। तस्याः तट एकः रक्त मुखः नामकः वानरः अवसत्। तस्यां नद्याम् एकः मकरः आसीत्। नद्याः तटे एकः वृक्षः आसीत्। तस्योपरि सः वानरः न्यवसत्। मकरः अपि यदा-कदा जलात् निर्गत्य वृक्षस्य अधः अस्वपत्। इत्थं तयोः मैत्री अभवत्। वानरः तस्मै मधुराणि जम्बू फलानि अयच्छत्। मकरः अपि तानि फलानि अखादत्। अवशिष्टानि च स्वभार्यायै आनयत्।

मकरस्य भार्या तानि भुक्त्वा स्वपतिम् अवदत्—यः वानरः प्रतिदिनम् इमानि मधुराणि फलानि खादति तस्य हृदयं तु अवश्यमेव बहु मधुरं भविष्यति। अहं तस्य वानरस्य मधुरं हृदयं खादितुम् इच्छामि। यदि त्वं तस्य हृदयम् आनीय मे न दास्यसि तर्हि अहं स्वप्राणान् त्यक्ष्यामि।

मकरः अवदत्—यः मधुराणि फलानि अयच्छत् तस्य वधे महत्पापं भविष्यति। कथम् अहं तं वञ्चयामि। मकरस्य वचनं श्रुत्वा सा कुपिता अभवत्। तस्याः कोपशान्तये मकरः वानरम् अगच्छत् अवदत् च, अद्य तव मम गृहे निमन्त्रणम् अस्ति। तत्र मम भार्या तव स्वागतं करिष्यति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

येन केन प्रकारेण मधुरैः वचनैः तं समाश्वास्य, स्वपृष्ठे च तम् आरोप्य मकरः स्वगृहं प्रति अचलत्। अगाधे जले प्राप्ते सः स्वभार्यायाः सर्वं वृत्तान्तम् वानरम् अवदत्। तत् श्रुत्वा प्रत्युत्पन्न-मतिः वानरः अकथयत्-कथं न त्वं माम् पूर्वम् अवदः ? मम तु एकमेव हृदयम् अस्ति। तत् च वृक्षशाखायां सुरक्षितम् अस्ति। अन्यथा इतस्ततः मम उत्प्लवने तत् चूर्णितं भवेत्। अतः मां शीघ्रं तत्र नय, येनाहं स्वहृदयम् आनयामि। मूर्खः मकरः तथैव अकरोत्। तटं प्राप्य वानरः मकर-पृष्ठात् त्वरितमेव उत्प्लुत्य वृक्षम् आरोहत् मकरं चावदत्-रे मूर्ख ! किं कस्यचिद् हृदयद्वयं भवति, तद् गच्छ इतः, पुनः मागच्छ। लज्जितः मकरः जले निमग्नः अभवत्।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. मकरः कुत्र अवसत् ?
२. वानरः तस्मै किम् अयच्छत् ?
३. मकरपत्नी किं खादितुम् ऐच्छत् ?
४. मकरः कुत्र निमग्नः अभवत् ?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. किसी पेड़ पर एक कौआ रहता था।
२. उसके पास एक बार कोई हंस आया।
३. हंस के साथ उसकी मित्रता हो गयी।
४. वे दोनों सुख से वन में रहने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

त्रयोदशः पाठः

ग्राम पञ्चायतम्

दिनेशः—भो रमेश, कथम् अद्य अस्माकं ग्रामे नराः समवेताः सन्तिः ? किं त्वं जानासि ?

रमेशः—कथं न जानामि ? अद्य ग्राम-पञ्चायतस्य अधिवेशनम् अस्ति।

दिनेशः—ग्राम-पञ्चायतम् किम् अस्ति ? कृपया माम् अपि बोधय।

रमेशः—तदा शृणु, प्रतिग्रामम् एका मुख्या सभा भवति। तद् अधीनम् एकं ग्रामपञ्चायतं भवति। अस्मिन् नियत संख्यकाः सदस्याः ग्रामसभाया निर्वाचिताः भवन्ति।

दिनेशः—भ्रातः ! ग्रामपञ्चायतस्य संघटनं किमर्थं भवति, एतद् अपि तु कथय।

रमेशः—भो दिनेश, किं न अवगच्छसि यत् अधुना स्वतन्त्रः अस्माकं राष्ट्रः। स्वतन्त्रे राष्ट्रे नगरविकासेन सह ग्राम-विकासः अपि परमावश्यकः अस्ति ; ग्रामपञ्चायतं ग्रामेषु मार्ग-निर्माणं प्रति, शिक्षोद्धारं प्रति, स्वास्थ्य सुधारं प्रति च प्रयत्नशीलम् अस्ति।

दिनेशः—रमेश, अहं तु तव अति कृतज्ञः अस्मि। अहम अद्य भवतः नूतनं ज्ञानं प्राप्नवम्। किम् अन्यत् अपि कार्यम् अस्ति पञ्चायतस्य ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रमेशः—आम्, अस्ति तु। तद् ग्रामीणानाम् अपराधं विचारयति दोषिणः दण्डयति। तत् अतिरिक्तं ग्रामस्य अनधिकृत जलाशयं भूमिक्षेत्रं वनम् उद्यानादिकं चास्य एव अधिकारे वर्तन्ते। एतेभ्यः लब्धेन धनेन ग्रामपञ्चायत्तस्य संचालनं भवति।

दिनेशः—वस्तुतः ग्रामपञ्चायत्तं ग्रामीणानां महान्तम् उपकारं करोति। परिमितेनैव व्ययेन ग्रामीणानां सर्वं कार्यं सुकरं भवति। मन्ये एतत् रामराज्यस्य एव प्रकारान्तरम्।

अभ्यास

संस्कृत में उत्तर दो—

१. ग्रामपञ्चायत्तं किम् अस्ति?

२. ग्रामपञ्चायत्तं किं करोति?

३. ग्रामपञ्चायत्तस्य संचालनाय धनं कुतः आयाति?

संस्कृत में अनुवाद करो—

१. भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है।

२. किसान लोग गाँवों में रहते हैं।

३. वे पशु पालते और खेती करते हैं।

४. गाँवों के विकास के लिए पंचायतों की स्थापना हुई।

५. पञ्चायत ही ग्रामीणों के झगड़ों का निर्णय करती है।

सन्धि विच्छेद करो और इस प्रकार की सन्धि वाले चार शब्द लिखो:—

शिक्षोद्धारः

टिप्पणी

अधिवेशनम्=बैठक। निर्वाचिताः=चुने हुए। अवगच्छसि=जानते हो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चतुर्दशः पाठः

सुभाषितानि

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
सत्संगतिः कथय किन्न करोति पुंसाम् ॥१॥
उद्योगिनं पुरुष - सिंहमुपैति लक्ष्मीः,
दैवेन देयमिति कापुरुषाः वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः ॥२॥
काव्यशास्त्र - विनोदेन कालो गच्छति धीमतां,
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥३॥
सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
वृणुते हि विमृश्य कारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव संपदः ॥४॥
परोक्षे कार्य - हन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत्तादृशं मित्रं विषकुम्भं पयोमुखम् ॥५॥
सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख - दुःखयोः ॥६॥
दुर्जनेन समं वैरं प्रीतिञ्चापि न कारयेत्।
उष्णः दहति चाङ्गारः शीतः कृष्णायते करम् ॥७॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिशिष्ट

सन्धि-विचार

सन्धि शब्द का अर्थ है मेल। दो शब्दों के बहुत निकट होने पर वर्णों का जो मेल होता है उसे सन्धि कहते हैं। जब दो स्वर आपस में मिलते हैं तो स्वर सन्धि कहते हैं और जब दो व्यञ्जन आपस में मिलते हैं तो इस प्रकार की सन्धि को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

दीर्घ-सन्धि (स्वर-सन्धि)

जब ह्रस्व या दीर्घ (अ, इ, उ) के बाद ह्रस्व या दीर्घ सम स्वर आये तो दोनों के स्थान पर दीर्घ (आ, ई, ऊ) हो जाते हैं, इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं, जैसे :—

त्रिपुर +अरिः =त्रिपुरारिः।
हिम +आलयः =हिमालयः।
वसुधा +अधिपः =वसुधाधिपः।
विद्या +आलयः =विद्यालयः।
वारि +इन्द्रः =वारीन्द्रः।
नदी +ईशः =नदीशः।
भानु +उदयः =भानूदयः।
वधू +उत्सवः =वधूत्सवः।

 CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुण-सन्धि (स्वर-सन्धि)

जब 'अ' या 'आ' के बाद ह्रस्व या दीर्घ (इ, उ, ऋ) आये तो दोनों के स्थान में क्रमशः (ए, ओ, अर्) हो जाते हैं। इसे गुण सन्धि कहते हैं, जैसे :—

देव +इन्द्रः =देवेन्द्रः।
सुर +ईशः =सुरेशः।
गंगा +ईशः =गंगेशः।
वसन्त+उत्सवः=वसन्तोत्सवः।
गंगा +उदकम्=गंगोदकम्।
वसन्त+ऋतुः =वसन्तर्तुः।
देव +ऋषिः =देवर्षिः।

ऋकारान्त पुल्लिंग शब्द

पितृ (पिता)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्,
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन !	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नकारान्त पुल्लिग शब्द

राजन् (राजा)

प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि-राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन !	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

इकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

रुचि (इच्छा)

प्रथमा	रुचिः	रुची	रुचयः
द्वितीया	रुचिम्	रुची	रुचीः
तृतीया	रुच्या	रुचिभ्याम्	रुचिभिः
चतुर्थी	रुचये-रुच्यै	रुचिभ्याम्	रुचिभ्यः
पंचमी	रुचेः-रुच्याः	रुचिभ्याम्	रुचिभ्य.
षष्ठी	रुचेः-रुच्याः	रुच्योः	रुचीनाम्
सप्तमी	रुचौ-रुच्याम्	रुच्योः	रुचिषु
सम्वोधन !	हे रुचे!	हे रुची!	हे रुचयः!

निर्देश—इसी प्रकार मूर्ति, गति, बुद्धि, वृद्धि, सिद्धि आदि के भी रूप होंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

धेनु (गाय)

प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे-धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पंचमी	धेनोः-धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः-धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ-धेन्वाम्	धेन्वोः	धेनेषु
सम्बोधन !	हे धेनो !	हे धेनू !	हे धेनवः !

इकारान्त नपुंसक लिंग शब्द

वारि (पानी)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन !	हे वारि, हे वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकारान्त नपुंसक लिंग

प्रथमा	पयः	पयसी	पयांसि
द्वितीया	पयः	पयसी	पयांसि
तृतीया	पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
चतुर्थी	पयसे	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
पंचमी	पयसः	पयोभ्याम्	पयोभ्यः
षष्ठी	पयसः	पयसोः	पयसाम्
सप्तमी	पयसि	पयसोः	पयःसु, पयस्सु
सम्बोधन !	हे पयः	हे पयसी	हे पयांसि

संख्यावाचक शब्दों के रूप

एक

सूचना—इसका रूप केवल एकवचन में ही होता है।

	पुल्लिग	नपुंसक लिंग	स्त्रीलिंग
प्रथमा	एकः	एकम्	एका
द्वितीया	एकम्	एकम्	एकाम्
तृतीया	एकेन	एकेन	एकया
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्याः
षष्ठी	एकस्य	एकस्य	एकस्याः
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्

सूचना—इसके रूप केवल द्विवचन में ही होते हैं।

प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

सूचना—संख्याएं विशेषण हैं अतः विशेष्य के लिंग भेद के अनुसार रूपों में भी लिंग भेद होता है।

दृश् (देखना)

सूचना—दृश् का लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ में पश्य हो जाता है।

लट्

प्रथम	पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम	,,	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम	,,	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लोट्

प्रथम	,,	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम	,,	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम	,,	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ

प्रथम	,,	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम	,,	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ

प्रथम ,,	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम ,,	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम ,,	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लृट्

प्रथम ,,	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम ,,	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम ,,	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

धातु रूप

स्था (बैठना)

सूचना—स्था का लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ में तिष्ठ हो जाता है।

लट्

प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम ,,	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम ,,	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट्

प्रथम ,,	तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम ,,	तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम ,,	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लङ्

प्रथम	पुरुष	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम	,,	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम	,,	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

प्रथम	,,	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम	,,	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम	,,	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

लृट्

प्रथम	,,	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम	,,	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम	,,	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

कथ् (कहना)

सूचना--यह उभय पदी धातु है। नीचे केवल परस्मैपदी के रूप दिये जा रहे हैं।

लट्

प्रथम	पुरुष	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
मध्यम	,,	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उत्तम	,,	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लोट्

प्रथम	,,	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
मध्यम	,,	कथय	कथयतम्	कथयत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्तम पुरुष	कथयानि	कथयाव	कथयाम

लङ्

प्रथम	,,	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
मध्यम	,,	अकथयः	अकथयतम्	अकथयत
उत्तम	,,	अकथयम्	अकथयाव	अकथयाम

विधि लिङ्

प्रथम	,,	कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः
मध्यम	,,	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत
उत्तम	,,	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम

लृट्

प्रथम	,,	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
मध्यम	,,	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उत्तम	,,	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्याम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवभारती भाग २ में आये हुए नये मुख्य शब्द

अंचल
अंशतः
अक्षय
अखंडित
अखिलेश
अगोचर
अग्रगण्य
अचिन्त्य
अज्ञातवास
अट्टहास
अत्यधिक
अदम्य
अधिकांशतः
अध्यक्षता
अध्यवसाय
अनल
अनावृष्टि
अनिवार्य
अनिष्ट
अनुकरण

अनुपात
अनुप्राणित
अनुमति
अनुयायी
अनुरोध
अन्तरिक्ष
अन्तर्गत
अन्तर्दृष्टि
अन्तर्राष्ट्रीय
अपरिमित
अपेक्षा
अभिनन्दन
अभिनय
अभिनेता
अभिप्राय
अभिषिक्त
अमानुषिक
अमुक
अमोघ
अर्पित

अलंकृत
अलकापुरी
अवधि
अवलम्बन
अवशेष
अवहेलना
अव्यक्त
अश्वारोही
असहयोग
असाध्य
असुविधा
अस्तित्व
अहिंसा
अहित
आंशिक
आक्रान्ता
आखेट
आघात
आजीवन
आतंकित

आतप
आतिथ्य
आत्मविश्वास
आदिम
आद्यन्त
आध्यात्मिक
आन्दोलन
आभास
आयाम
आरोग्य
आर्त्तनाद
आर्थिक
आर्यावर्त्त
आलोकित
आविर्भाव
आह्वान
ईर्ष्याग्नि
ईश्वरीय
उऋण
उत्कंठा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उत्कृष्ट	ऊष्मा	क्रियाशील	जागरण
उत्तेजना	ऋचा	क्षणभंगुर	जागृति
उत्सुकता	ऋण	क्षत्रियत्व	जिज्ञासा
उदधि	ऐतिहासिक	क्षीण	जीविकोपार्जन
उदर	ओतप्रोत	क्षुद्र	तटस्थता
उदारता	कंटक	क्षुधा	तन्दुल
उद्गम	कटक	क्षुब्ध	तरुराजि
उद्गार	कदली	क्षोभ	तर्क
उद्घोषक	कर्कश	खगेश	तलघर
उद्देश्य	कर्तव्यपरायणता	ख्याति	तल्लीनता
उद्यत	कलरव	गतिमान	तुरगारूढ़
उन्मत्तता	कल्पना	गतिशील	तोरण
उपकरण	कार्यकर्त्ता	गांडीव	त्राहिमाम्
उपग्रह	कार्यक्रम	गुरुत्वाकर्षण	दक्षिणवर्ती
उपयोग	कालान्तर	गोष्ठी	दग्ध
उरग	किंवदन्ती	घोष	दर्शनीय
उपलब्ध	किरात	घोषित	दिग्दिगन्त
उपवास	किसलय	चक्रवर्ती	दीक्षा
उपहार	कुटिल	चतुर्दिक	दीर्घकालीन
उपाधि	कूजन	चमत्कार	दुःसाहस
उपानह	कूप	चरमसीमा	दुर्गति
उपासना	कृतज्ञता	चर्म	दुर्भिक्ष
उल्का	कोलाहल	जलप्रपात	दुर्व्यवहार
उल्लेखनीय	कौतूहल	जलाशय	दूरवीक्षक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूरस्थ
दृढ़ता
दृश्यावली
दृष्टि
द्वेष
द्वैतवन
धर्मान्धता
नगपति
नदीश
नन्दन
नन्दित
नवजात
नि:श्वास
निकटतम
निकेतन
निखिल
निदेशक
निमग्न
नियन्त्रण
निरपवाद
निराश्रय
निरीक्षण
निर्जन
निर्दोष

निर्भीकता
निर्मम
निर्वाह
निवारण
निष्कंटक
निस्तब्धता
निहित
नीरवता
नेपथ्य
नैतिक
न्यायासन
न्यूनाधिक
पद्मश्री
पद्धति
पयोधि
परमाणु
पराजय
परास्त
परिकर
परिचारिका
परिधान
परिपूरित
परिस्थिति
परिहास

पर्याप्त
पलायन
पश्चिमोत्तर
पायोधि
पादप
पारदर्शी
पारस्परिक
पाशविकता
पाशुपत
पीताम्बर
पीड़ित
पुंज
पुंजीभूत
पुण्यस्मृति
पुन:
प्रकाशित
प्रक्षेपक
प्रचंड
प्रचुर
प्रच्छन्न
प्रज्वलित
प्रतिक्रिया
प्रतिद्वन्द्वी
प्रतिध्वनित

प्रतिनिधि
प्रतिभा
प्रतिरक्षा
प्रभावित
प्रमुख
प्रमोद
प्रयत्नशील
प्रवर्त्तक
प्रशंसनीय
प्रस्तर
प्रस्थान
प्रेक्षक
बरबस
बलिदान
बलिष्ठ
बहुमूल्य
भयावह
भव्य
भावविभोर
भास्वर
भीमकाय
भीषण
भ्रातत्व
मंगल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मतान्तर
मनोकामना
मनोरंजन
मरणासन्न
मरुभूमि
मलय
माध्यमिक
मानवता
मापदंड
मुखरित
मुख्यतः
मुग्ध
मूक
मृदुलता
यन्त्रणा
यकृत
यती
यथोचित
यापन
युक्ति
यौवन
रंक
रंचमात्र
रक्तपात
रणक्षेत्र
रहस्योद्घाटन
राजनीतिक
राजसी
राजसूय
रुष्ट
रोमांचकारी
रोषपूर्ण
लालायित
लालिमा
लिप्सा
लोकप्रिय
लोमहर्षक
वत्सलता
वरीयता
वसुधा
वांछित
वाचक
वायुमंडल
वाराह
वारिधि
वास्तविक
वाहिनी
विकराल
विकास
विक्रम
विख्यात
विचलित
विच्छिन्न
विजयश्री
विजेता
विज्ञापन
वितरक
विनम्रता
विपक्षी
विपन्न
विपरीत
विपुल
विभाजन
विमर्श
विमुग्ध
विरत
विरति
विवरण
विवश
विवाद
विशेषज्ञ
विश्वासघात
विषधर
विषमता
विस्तारपूर्वक
विस्तीर्ण
विस्थापित
विहग
विहीन
विह्वल
वीरांगना
वीरोचित
व्यतिरेक
व्यतीत
व्यवधान
व्यवस्था
व्यावहारिक
शाश्वत
शास्त्रीय
शुश्रूषा
शृंखला
श्रद्धा
श्रीवृद्धि
श्रेय
संकल्प
संकीर्ण

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकुचित	समतल	साक्षात	सौभाग्य
संगठन	समर्पण	साधना	स्कन्ध
संगृहीत	समवेत	सान्त्वना	स्तब्ध
संग्राम	समस्या	साम्प्रदायिक	स्थगित
संजीवनी	समिति	सार्वजनिक	स्थापना
संचालन	समीप	सावधान	स्नायु
संवर्धन	समीर	साश्चर्य	स्फटिक
संसृति	समुचित	सुगम	स्फूर्ति
संस्कृति	सम्पादक	सुदूर	स्मरण
सगर्व	सम्भावना	सुधा	स्मृति
सघन	सम्मोहनास्त्र	सुयोग	स्रोत
सच्चिदानन्द	सराहना	सुरम्य	स्वयंसेवक
सजगता	सरिता	सुसंस्कृत	स्वातन्त्र्य
सतर्कता	सरोवर	सुसज्जित	स्वाभिमान
सत्यनिष्ठ	सर्वोत्तम	सूक्ष्म	स्वामित्व
सदृश	सशक्त	सृजन	स्वास्थ्य
सन्तोषजनक	सशस्त्र	सेतु	हरीतिमा
सन्मार्ग	सहकारिता	सैन्य	हस्ताक्षर
सपरिवार	सहसा	सौख्य	हिममंडित
समक्ष	सहिष्णुता	सौन्दर्य	हिमाच्छादित

———

3796

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षा विभाग
उत्तर प्रदेश

केवल मुखपृष्ठ राजकीय मुद्रणालय, ऐशबाग, लखनऊ में मुद्रित

PSUP. A. P.-41-D. E'–1967-68-885000 (Off-set).